संवाद

भाग 1

कक्षा 9 के लिए हिंदी द्‌वितीय भाषा की पाठ्‌यपुस्तक

संवाद

भाग 1

कक्षा 9 के लिए हिंदी द्‌वितीय भाषा की पाठ्‌यपुस्तक

संपादक
संध्या सिंह

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

आमुख

शिक्षा सतत् विकासशील प्रक्रिया है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने सन 2000 में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की नवीन रूपरेखा तैयार की। विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में परिषद् की भूमिका अग्रणी रही है। ऐसे में विद्यार्थियों के लिए सांस्कृतिक, सामाजिक और शैक्षणिक आवश्यकताओं के अनुरूप राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार की गई। तदनुरूप पाठ्यक्रमों में संशोधन व परिवर्तन भी किए गए। नवनिर्मित पाठ्यक्रमों के आलोक में पाठ्यपुस्तकों का निर्माण उसी का अगला चरण है। इसी क्रम में नवीं कक्षा के लिए पाठ्यपुस्तक **'संवाद भाग 1'** का निर्माण द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए किया गया है।

भारत की भाषिक संस्कृति का स्वरूप मूलत: बहुलतावादी व सामासिक है। पाठ्यक्रम का निर्धारण करते समय इस मूलभूत सिद्धांत को निरंतर ध्यान में रखा गया है। इसके प्रकाश में जो नए परिवर्तन किए गए हैं, भारत के मूल राष्ट्रीय चरित्र को प्रतिबिंबित करते हैं।

द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी की प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक का उद्देश्य दोहरा है। प्रथम यह कि किशोर विद्यार्थियों की भाषिक क्षमता का इस तरह विकास हो कि वे हिंदी भाषा की प्रकृति को समझते हुए अधिक से अधिक संवाद-सक्षम बन सकें। दूसरा यह कि इससे विद्यार्थियों को नए सौंदर्य-बोध से परिचित होने का अवसर प्राप्त होगा।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक के दो खंड हैं – गद्य खंड और काव्य खंड। गद्य खंड के पाठों में निबंध, ललित निबंध, संस्मरण, जीवनी, कहानी, पत्र आदि गद्य की विभिन्न विधाओं पर आधारित पाठ संकलित किए गए हैं। अखिल भारतीय परिप्रेक्ष्य में अहिंदी भाषी लेखकों की अनूदित रचनाओं को भी सम्मिलित किया गया है। पाठों के चयन में जीवन के विविध संदर्भों, मानवाधिकार, नागरिकों के मूल कर्तव्यों, शिक्षाक्रम के केंद्रिक घटकों तथा मूल्यपरक विषयों के समावेश को ध्यान में रखा गया है। साथ ही सामासिक

संस्कृति, पंथ-निरपेक्षता, पर्यावरण और विज्ञान संबंधी विषयों को भी सम्मिलित किया गया है।

पाठों का क्रम-निर्धारण कालक्रम के अनुसार न होकर सरलता से कठिनता के सामान्य शिक्षण नियम को ध्यान में रखकर किया गया है।

पुस्तक का सामान्य क्रम है – प्रारंभ में रचनाकार का परिचय, संक्षिप्त पाठ परिचय, रचना तथा अंत में प्रश्न-अभ्यास। भाषा की संप्रेषण शक्ति तथा दैनंदिन प्रयोगों को ध्यान में रखकर पाठों से चुनकर भाषिक, संवादात्मक प्रयोग इस पुस्तक की विशेषता है। मौखिक अभिव्यक्ति भाषा-शिक्षण का प्रथम और सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है। द्वितीय भाषा सीखने वाला विद्यार्थी शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण के साथ अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास कर सके, इस दृष्टि से मौखिक प्रश्न भी जोड़े गए हैं। योग्यता-विस्तार के अंतर्गत विषय से जुड़े विशेष ज्ञान संदर्भ विद्यार्थी की रचनात्मक तथा स्वाध्याय की प्रवृत्ति को विकसित करने में सहायक होंगे।

इस पुस्तक के निर्माण में हमें अनेक शिक्षाविदों, भाषाशास्त्रियों एवं अध्यापकों का सहयोग मिला है। मैं उन सभी के प्रति हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

जिन लेखकों और कवियों ने अपनी रचनाएँ इस पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित किए जाने की अनुमति दी है उनके प्रति मैं विशेष रूप से अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

इस पुस्तक के परिष्कार के लिए शिक्षाविदों, अध्यापकों और विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं और सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

जगमोहन सिंह राजपूत

निदेशक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

फरवरी 2003

पाठ्यपुस्तक समीक्षा कार्यगोष्ठी के सदस्य

विद्यानिवास मिश्र
भूतपूर्व उपकुलपति
महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी

वी.रा. जगन्नाथन
निदेशक, मानविकी विद्यापीठ
इं.गां.रा. मुक्त विश्वविद्यालय
मैदानगढ़ी, नई दिल्ली

निरंजन कुमार सिंह
रीडर (अवकाश प्राप्त)
सा.वि.मा.शि.वि., एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

दिलीप सिंह
अध्यक्ष एवं *प्रोफेसर*
उच्चशिक्षा शोध संस्थान
दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा
धारवाड़ (कर्नाटक)

कृष्णकुमार गोस्वामी
प्रोफेसर, केंद्रीय हिंदी संस्थान
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली

सूर्य नारायण रणसुंभे
रीडर (अवकाश प्राप्त)
हिंदी विभाग, दयानंद कला
महाविद्यालय, लातूर (महाराष्ट्र)

भारत भूषण
रीडर (अवकाश प्राप्त)
केंद्रीय हिंदी संस्थान
नई दिल्ली

एच. बाल सुब्रह्मण्यम
पूर्व सहायक निदेशक
केंद्रीय हिंदी निदेशालय
नई दिल्ली

पूरन सहगल
निदेशक
मालव लोक संस्कृति अनुष्ठान
कृष्णायन/उषागंज, मनासा
(मध्यप्रदेश)

मानसिंह वर्मा
अध्यक्ष (अवकाश प्राप्त) हिंदी विभाग
मेरठ कॉलेज, मेरठ, (उत्तर प्रदेश)

सुरेशपंत
प्रवक्ता (अवकाश प्राप्त)
रा. उच्च. मा. बाल विद्यालय
जनकपुरी, नई दिल्ली

अनिरुद्ध राय
प्रोफेसर (अवकाश प्राप्त)
सा.वि.मा.शि.वि., एन.सी.ई.आर.टी.
नई दिल्ली

नीरा नारंग
वरिष्ठ प्रवक्ता
केंद्रीय शिक्षा संस्थान
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

लक्ष्मी मुकुंद
पी.जी.टी., हिंदी
डी.टी.ई.ए. उ.मा.विद्यालय
सेक्टर-4, आर.के. पुरम, नई दिल्ली

नीरजा रानी
पी.जी.टी., हिंदी
चंद्र आर्य विद्यामंदिर
ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली

एम. भास्कर शर्मा
टी.जी.टी., हिंदी
जवाहर नवोदय विद्यालय
मामनूर, वारंगल, (आंध्र प्रदेश)

वी. प्रमीलादेवी
टी.जी.टी., हिंदी
जवाहर नवोदय विद्यालय
रंगारेड्डी
(आंध्र प्रदेश)

एन.सी.ई.आर.टी. संकाय
सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग के सदस्य

चंद्रा सदायत
रीडर

लालचंद राम
प्रवक्ता

संध्या सिंह **(समन्वयक)**
रीडर

विषय-सूची

गद्य-खंड

आमुख

काव्य-खंड

गांधी जी का जंतर

तुम्हें एक जंतर देता हूँ। जब भी तुम्हें संदेह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शक्ल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुँचेगा? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा? यानी क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा, जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा संदेह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो. क. गांधी

गद्य खंड

गद्य का पठन-पाठन

प्रस्तुत संकलन नवीं कक्षा के उन विद्यार्थियों के लिए तैयार किया गया है, जो द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी का अध्ययन करना चाहते हैं। यह पुस्तक सामान्य रूप से माध्यमिक स्तर पर द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण की आवश्यकताओं को पूरा करती है। इसलिए साहित्यिक गद्य विधाओं में अभिव्यक्त समाज के विविध रूपों के साक्षात्कार तथा सर्जनात्मक आस्वादन के साथ-साथ प्रयास यह भी है कि छात्र का उपयुक्त भाषा शिक्षण भी होता चले। इसलिए गद्य के विविध-रूपों के द्वारा विद्यार्थी को भाषा के व्यावहारिक रूपों का परिचय कराना भी हमारा उद्देश्य है।

सामान्य रूप से साहित्य के दो भेद होते हैं – गद्य और काव्य।

पुस्तक के पहले खंड में गद्य की विभिन्न विधाओं के कुछ ऐसे पाठ चुने गए हैं, जो विविध गद्यरूपों की जानकारी के साथ-साथ विभिन्न प्रदेशों की संस्कृति को वृहत्तर इकाई के रूप में प्रस्तुत करते हैं। भाषा के लिखित और मौखिक स्वरूप को परिमार्जित करने के लिए गद्य सर्वोत्तम माध्यम है।

आधुनिक काल में ज्ञान-विज्ञान की उन्नति के साथ-साथ गद्य-विधा का भी विकास हुआ। इसीलिए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस काल को **गद्यकाल** नाम दिया है। इसके प्रवर्तक भारतेन्दु हरिश्चंद्र हैं। गद्य की सभी प्रमुख विधाएँ इसी काल में विकसित हुई हैं। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक क्षेत्र में होने वाले विकास को गद्य के द्वारा ही प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया जा सकता है। अभिव्यक्ति के विविध स्वरूप और शैली की

दृष्टि से आधुनिक गद्य के अनेक रूप मिलते हैं – निबंध, जीवनी, संस्मरण, आत्मकथा, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, यात्रावृत्तांत, पत्र, डायरी, एकांकी, उपन्यास, लघुकथा, कहानी, नाटक, आलोचना आदि।

द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी गद्य-पठन का उद्देश्य मातृभाषा के पठन-पाठन से भिन्न होगा। माध्यमिक स्तर पर मातृभाषा का विद्यार्थी भाषा शिक्षण से साहित्य शिक्षण तक की यात्रा तय करता है, वहीं द्वितीय भाषा का विद्यार्थी साहित्य के द्वारा भाषा शिक्षण की यात्रा तय करेगा।

प्रत्येक गद्यविधा की अपनी प्रकृति और भाषा का अपना तेवर होता है। इसलिए हर विधा के महत्त्व को, उसके मूलभूत विशेषताओं को जाने बिना रचना को ठीक ढंग से और सही-सही नहीं जाना पहचाना जा सकता।

निबंध – निबंध आधुनिक साहित्य की अत्यंत सशक्त और महत्त्वपूर्ण विधा है। निबंध का शाब्दिक अर्थ होता है – विशेष/प्रकार से बँधा हुआ। अच्छी तरह बँधा, गठा हुआ अर्थात् विचारों तथा भावों का दृढ़ता से एक सूत्र में बँधा होना। यद्यपि अपने शाब्दिक अर्थ के विपरीत यह बंधनहीन-सा होता है। इसमें किसी विषय विशेष का एक सीमा तक आग्रह तो रहता है लेकिन निबंधकार मौलिक प्रस्तुति के लिए स्वतंत्र भी होता है। रचना-विधान की दृष्टि से निबंध के अनेक प्रकार होते हैं – वर्णनात्मक, विवरणात्मक, विचारात्मक, व्यक्तिव्यंजक, व्यंग्यात्मक आदि। अतः निबंध को पढ़ते समय उसके निश्चित रचना संकेतों पर अवश्य ध्यान देना चाहिए।

गद्य की विशेषताओं को ध्यान में रखकर ही आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कहा है कि **यदि गद्य कवियों या लेखकों की कसौटी है, तो निबंध गद्य की कसौटी है।**

पढ़ने-पढ़ाने की दृष्टि से निबंध में तीन बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए – विषय, उद्देश्य और शैली। प्रत्येक निबंध में ये तीनों ही न्यूनाधिक मात्रा में रहते हैं, लेकिन उद्देश्य पहले और तीसरे के साथ-साथ रहता है।

वास्तव में विचारों, भावों और भाषा की सहजता निबंध का स्वाभाविक गुण है। इसी गुण में निबंध के लिखे जाने का कारण भी छिपा रहता है। देखा जाना चाहिए कि अभिव्यक्त विषय किस प्रकार का है। अर्थात उसमें बाह्य दृश्य आदि का चित्रण है या किसी घटना, पात्र आदि का वर्णन, किसी मनोविकार का विश्लेषण हुआ है या किसी प्रसंग का भावात्मक विवरण।

इसके पश्चात् उद्देश्य की ओर ध्यान देना चाहिए। लेखक कभी कुछ तथ्यों, दृश्यों का विवरण देकर पाठक का ज्ञानवर्धन मात्र कराना चाहता है तो कभी किसी भावपूर्ण दृश्य में पाठक को रमाना चाहता है।

विषयवस्तु और उद्देश्य निबंध के शैलीगत रूप को समझने में भी सहायक होते हैं। विचारों, भावों और भाषा का सहज प्रयोग निबंध का स्वाभाविक गुण है। गंभीर विचारों के विश्लेषण से लेकर व्यंग्य-विनोदपूर्ण बातों का भी इसमें समावेश होता है। प्रस्तुत पुस्तक में संकलित ललित-निबंध **आग, अलाव और हम** (क्षमा शंकर पांडे), विचार प्रधान निबंध **व्यक्ति का पुनर्निर्माण** (भदंतआनंद कौसल्यायन), हास्य व्यंग्यात्मक निबंध **मच्छर** (ख्वाजा हसन निजामी) तथा विज्ञान संबंधी निबंध **पेड़ की बात** (जगदीश चंद्र बसु) को पढ़ने के लिए उपरोक्त बातों का ध्यान रखना होगा।

अर्थात् प्रत्येक निबंध को पढ़ते समय उसके विषयवस्तु, उद्देश्य या लेखक का दृष्टिकोण और निबंध शैली की विशेषताओं पर बल देना आवश्यक है।

जीवनी, संस्मरण और आत्मकथा – ये तीनों मिलती-जुलती विधाएँ हैं तथा बहुत कुछ एक-दूसरे पर आश्रित भी। संस्मरण गद्य की अत्याधुनिक विधा है, जो आत्मकथा के अधिक समीप है। जब कोई रचनाकार अतीत की स्मृतियों से कुछ आकर्षक और प्रभावशाली स्मृतियों को चुनकर अद्भुत रमणीय कल्पना से रंगकर व्यंजनामूलक शैली में अभिव्यक्त करता है, तो ऐसे गद्य रूप को संस्मरण कहते हैं। संस्मरण लेखक की स्वानुभूति से अलग कुछ नहीं होता है। जिसे वह स्वयं देखता और अनुभव करता है, उसी का वर्णन करता है। इसी कारण यह गद्य की सबसे सशक्त विधा के रूप में उभरकर सामने आ रहा है। इसका प्रयोग निबंध, कहानी, आत्मचरित, जीवनी और रेखाचित्रों में हो रहा है। संस्मरण लेखक जब अपने विषय में लिखता है तो वह विधा आत्मकथा के निकट हो जाती है और जब दूसरे के बारे में लिखता है तो जीवनी के। प्रस्तुत संकलन में ऐसी दो रचनाएँ हैं – पहली आशापूर्णा देवी की **मेरा बचपन**, जो एक आत्मकथात्मक संस्मरण है। इसे पढ़ने के लिए इसमें वर्णित घटनाओं की सच्चाई को आशापूर्णा देवी की आँखों से देखना होगा। दूसरी रचना है धर्मवीर भारती की **भोर की पूजा** जिसे पढ़ते समय फ़ादर कामिल बुल्के का जीवन पक्ष उभरकर सामने आ जाता है। इसलिए यह रचना संस्मरणात्मक जीवनी के निकट पहुँच जाती है।

यात्रा-वृत्तांत – किसी भी प्रकार की यात्रा के विविध अनुभवों एवं प्रतिक्रियाओं की कलात्मक अभिव्यक्ति ही यात्रा-वृत्तांत कहलाती है। यद्यपि इसमें संस्मरण एवं वर्णनात्मक या ललित निबंध के तत्त्व भी मिले-जुले रहते हैं। फिर भी घटनाओं की गतिशीलता, परिवर्तित प्रकृति-चित्रों की सजीवता, यात्रा की कठिनाइयों से उत्पन्न रोमांच तथा उसका सामना करने की साहसी जिजीवषा शक्ति यात्रावृत्तांत को संस्मरण और वर्णनात्मक निबंध से भिन्न, अनूठा स्वरूप देते हैं।

यात्रा साहित्य में राहुल सांकृत्यायन का नाम महत्त्वपूर्ण है। उनकी तिब्बत यात्रा, लद्दाख यात्रा और यूरोप यात्रा पर लिखी पुस्तकें यात्रा साहित्य की महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हैं। प्रस्तुत संकलन में काका कालेलकर की **नेफा की यात्रा** संकलित है, जिसमें असम प्रदेश की विशेषताओं, कठिनाइयों और विकास की संभावनाओं को वर्ण्यविषय का आधार बनाया गया है।

कहानी – कहानी गद्य की सबसे रोचक और पुरानी विधा है। इसका विकास मूलत: मानव सभ्यता के विकास के साथ ही हुआ। आधुनिक युग में साहित्यिक विधा के रूप में कहानी ने स्वरूप ग्रहण किया। कहानी में जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव का चित्रण होता है। अत: कहानी का अध्यापन करते समय उस विशेष मनोभाव या अंग पर अवश्य ध्यान आकृष्ट करना चाहिए। ये कथा बिंदु ही विद्यार्थी को कहानी को स्वयं पढ़ने और समझने की दिशा देते हैं। कहानी में घटना-सूत्र और चरित्र की विशेषताओं पर बल देना होगा। पाठ्यपुस्तक में संकलित **भाड़े का टट्टू** (प्रेमचंद) कहानी को इन्हीं शिक्षण बिंदुओं के आलोक में देखना चाहिए।

पत्र – द्वितीय भाषा शिक्षण की दृष्टि से पत्र सबसे सशक्त विधा है। पत्रों की निजता और आत्मीयता भाषा की संप्रेषणीयता को अद्भुत शक्ति प्रदान करती है। साहित्यिक, राजनीतिक और ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में लिखे गए पत्रों में भी एक निजी भावनात्मक स्पर्श होता है। आज यंत्र माध्यमों के प्रचार के कारण इस विधा के अस्तित्व पर खतरे मँडराने लगे हैं। लेकिन भावना का स्थान मशीन नहीं ले सकती वैसे ही पत्र का स्थान यंत्र नहीं ले सकते। **पिता के पत्र पुत्री के नाम** से प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू का पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी को लिखे पत्र ऐतिहासिक महत्त्व के हैं। **मित्र-संवाद**, रामविलास शर्मा और केदारनाथ अग्रवाल के साहित्यिक पत्रों का महत्त्वपूर्ण संग्रह है। प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में **बापू के पत्र मीरा बेन के नाम**

संकलित है। इनमें निहित स्वतंत्रता आंदोलन की पृष्ठभूमि के साथ-साथ नितांत निजता को भी पहचाना जा सकता है।

वस्तुतः साहित्य या कला की कोई निर्धारित शिक्षा पद्धति नहीं होती। साहित्य एक नैसर्गिक कला है। इसको पढ़ने के लिए रचना की प्रकृति और प्रस्तुति के अनुसार शिक्षण बिंदु भी निर्धारित किए जाने चाहिए। शिक्षण को सार्थक, रोचक तथा संप्रेषणीय बनाने के लिए उसे नित्य नए-नए संदर्भों के साथ जोड़कर पढ़ना होगा। इस पुस्तक के माध्यम से हमारा उद्देश्य विद्यार्थी, अध्यापक तथा संसार के बीच संवाद कायम करना है।

सत्र वार पढ़ाने की दृष्टि से *मेरा बचपन, व्यक्ति का पुनर्निर्माण, मच्छर, गांधी के पत्र मीरा बेन के नाम* तथा *भाड़े का टट्टू* नामक पाठों को पहले सत्र में पढ़ाया जा सकता है तथा शेष अगले सत्र में।

1. आशापूर्णा देवी

(1909–1995)

आशापूर्णा देवी बंगाल की ही नहीं अपितु अखिल भारतीय स्तर की लेखिका के रूप में जानी जाती हैं। उन्होंने 13 वर्ष की अवस्था से लेखन प्रारंभ किया और आजीवन साहित्य रचना से जुड़ी रहीं। **मैं तो सरस्वती की स्टेनो हूँ**, उनका यह कथन उनकी रचनाशीलता का परिचायक है। गृहस्थ जीवन के सारे दायित्व को निभाते हुए उन्होंने लगभग दो सौ कृतियाँ लिखी, जिनमें से अनेक कृतियों का भारत की लगभग सभी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। उनकी रचना प्रथम प्रतिश्रुति पर उन्हें साहित्य के सर्वोच्च पुरस्कार ज्ञानपीठ से सम्मानित किया गया।

आशापूर्णा देवी जी की कई कृतियाँ निश्चय ही कालजयी हैं। उनकी प्रसिद्ध कृतियाँ **स्वर्णलता, प्रथम प्रतिश्रुति, प्रेम और प्रयोजन, बकुलकथा, गाछे पाता नील, जल** और **आगुन** आदि हैं।

आशापूर्णा देवी की लेखनी ने नारी जीवन के विभिन्न पक्षों, पारिवारिक जीवन की समस्याओं और समाज की कुंठा और लिप्सा को अत्यंत पैनेपन से उजागर किया है। उनकी कृतियों में नारी का व्यक्ति-स्वातंत्र्य और उसकी महिमा नई दीप्ति के साथ मुखरित हुई है। सरल, सहज, मुहावेरेदार भाषा आशापूर्णा देवी जी की रचनाओं की मुख्य विशेषता है। प्रतीकों, पात्रानुकूल संवादों के प्रयोग ने उनकी कथा-शैली को जीवंत बना दिया है।

प्रस्तुत आत्मकथात्मक संस्मरण **मेरा बचपन** में लेखिका ने अपने बचपन के विविध अनुभवों की तुलना कालांतर में परिवर्तित परिस्थितियों तथा जीवन शैली के साथ करते हुए बचपन के अभावों और वर्तमान

की सुख-सुविधाओं को आमने-सामने रख दिया है। वर्तमान समय में एक तरफ वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास हुआ है तो दूसरी तरफ सहृदयता, संवेदनशीलता, सहिष्णुता और जीवन मूल्यों का ह्रास हुआ है। यह ह्रास जीवन के विभिन्न स्तरों पर दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत संस्मरण में आशापूर्णा देवी ने जीवन के विभिन्न स्तरों पर होने वाले भावों (उपलब्धियों) और अभावों को चित्रात्मक भाषा में अभिव्यक्ति दी है।

मेरा बचपन

मेरा बचपन! क्या यह हाल की बात है? उस समय कोलकाता के रास्ते पर डोली चलती थी। सोचो! आज भी किसी रिमझिम दोपहर में जब कमरे में चुपचाप सोई रहती हूँ, रह-रहकर मानो सुदूर कहीं से आती हुई डोली के कहारों की वह 'हुन-हुन-नाह! हुन-हुन-नाह!' की आवाज़ आकर अंतरपट पर धक्का मारकर चली जाती है और तब आँखें मूँदकर सोचने को जी चाहता है कि यह आवाज़ उत्तर कोलकाता के एक बरामदे वाले मकान के सामने आकर रुकी। घाघरा पहने हुए एक छोटी-सी लड़की ने बरामदे में आकर झाँककर देखा। ज़मीन पर उतारी गई डोली में से बड़े कायदे से पहले एक पैर बाहर निकला, फिर सिर को झुकाकर बाहर निकाला और तब जाकर पूरे शरीर समेत बाहर निकल आई बड़ी मौसी या मझली नानी माँ और झामापोखर की भवानी बुआ।

ये ही बीच-बीच में आती थीं।

अकेले ही। हाँ, इनके अकेले आने में कोई डर की बात नहीं थी। क्योंकि ये सफ़ेद धोती पहने रहती थीं, शरीर पर गहने का नामोनिशान नहीं, सिर मुँड़ा हुआ। क्या लेंगे चोर-डकैत? अकेले आने के लिए पालकी के सिवा कोई चारा नहीं था, क्योंकि उस समय तक रिक्शा भी तो नहीं था, रिक्शे का नाम तक नहीं सुना था कोलकाता वालों ने।

आँखें मूँदते ही स्पष्ट देखती हूँ – बड़े कायदे से वे बाहर निकल आईं। ज़मीन पर खड़ी होकर आँचल की गाँठ खोलकर भाड़ा चुकाया।

चार-चार हट्टे-कट्टे कहारों ने डोली उतारकर अपने गंदे गमछे से बदन पोंछते-पोंछते एक चमकती 'दुअन्नी' ली, फिर उसी तरह डोली उठाकर चल दिए। ऊपर से यदि कोई दयाशील सवारी ताँबे का एक पैसा देकर कहती, 'बहुत पसीना बहा है! ले इससे थोड़ा जलपान कर लेना' तो उन चार चेहरों के आठ-आठ जोड़ी दाँत-आहा! मानो धूप में रखे आईने की तरह चमक उठते।

देखो भई, हमारा बचपन तो 'बहुत थोड़े से संतुष्ट' होने वाला दौर था। लोग थोड़े में संतुष्ट हो जाते थे, बच्चे थोड़े में संतुष्ट हो लेते। धोबी, नाई, कुली, कहार, गाड़ीवान, सब के सब वैसे ही थे।

धोबी को (यानी जिसे मैंने देखा है) यदि 'दो बीसी' (चालीस) कपड़ों के साथ दस-बारह छोटे-छोटे कपड़े, पाँच हाथ की धोती, साड़ी मुफ़्त में फींचने को देकर दो पैसा 'जलपान करना' कहकर दे दिया जाता था, तो वह खुशी के मारे गद्गद् हो जाता था। नाई? वह तो बड़ों के बाल काटते समय दो-चार छोटे बच्चों के बाल खुशी से 'फाव' (मुफ़्त) कहकर छाँट दिया करता था। लेकिन उन्हें पूरा सिर मुँड़वाने पर नकद एक डबल पैसा देना पड़ता था। शायद तुम लोगों ने वह पैसा देखा तक नहीं? गोलमटोल भारी-सा एक ताँबे का सिक्का। जिसमें 'बेलमुंडा राजा' (सातवें एडवर्ड) का चेहरा बना होता था।

खैर छोड़ो, वरना अभी तुम लोग कहने लगोगे कि धोबी-नाई की कहानी सुनकर क्या करेंगे? लेकिन जानते हो मैंने यह कहानी तुम लोगों को क्यों सुनाई? इसलिए कि हम लोगों ने अपने बचपन में संतुष्ट चेहरों की छवि कैसी होती है – वह देखी

है। क्या वे चेहरे तुम्हें अब नज़र आते हैं? अपने आस-पास, निकट-दूर, आईने के सामने!

आज के बच्चों की तो ज़ुबानी बोली ही है 'धत्! अच्छा नहीं लग रहा।' क्यों अच्छा नहीं लग रहा, शायद तुम लोग खुद भी नहीं जानते। असलियत तो यह है कि आसपास हमेशा 'अच्छा लगने वाला' चेहरा देखते-देखते तुम्हारी यह दशा हुई है। भई, हमारे बचपन में तो हमें हमेशा बहुत अच्छा लगता था। 'अच्छा नहीं लगता' जैसी भाषा ही नहीं जानते थे हम। सुबह उठकर अकारण ही 'अच्छा' लगा है। उस अकारण अच्छा लगने वाले सुनहरे पत्तर से मढ़ा हुआ है हमारा बचपन। लेकिन ज़रा सोचो, क्या था उस समय? इस युग की तुलना में, 'कुछ भी तो नहीं।' गाँव की बात तो छोड़ ही दो, खास कोलकाता शहर में ही जो था न, उसे सुनोगे तो तुम्हारी आँखें फटी-की-फटी रह जाएँगी। मैं तो खास कोलकाता की ही लड़की हूँ, यहीं पर बड़ी हुई और अब भी यहीं बैठे-बैठे बूढ़ी हो रही हूँ और देखती जा रही हूँ दिन-ब-दिन होने वाले परिवर्तनों को।

यद्यपि पैंसठ वर्ष पहले कोलकाता शहर का यह गौरव था कि 'इस शहर में पैसा फेंकने पर आधी रात में भी बाघ का दूध मिलता था'।

यह बात निहायत उड़ा देने वाली नहीं। जो कुछ रहता था, वह ज़रूर ही मिल जाता था। 'था' लेकिन 'है' नहीं कह सकते। दुकानदारों-व्यवसायियों की यह मानसिकता तब नहीं थी। बाघ का दूध किनके पास मिल सकता था मुझे नहीं मालूम, लेकिन यदि रहता तो वे अवश्य ही दे देते। 'कालाबाज़ारी' करने के लिए छिपाकर नहीं रखते।

फिर भी यह तो मानना ही होगा कि उन गौरवपूर्ण दिनों में भी कोलकाता में क्या-क्या नहीं था, इसकी यदि सूची बनाई जाए तो 'नहीं था' वाले शब्दों का एक शब्दकोश बन जाएगा।

की सुख-सुविधाओं को आमने-सामने रख दिया है। वर्तमान समय में एक तरफ वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास हुआ है तो दूसरी तरफ सहृदयता, संवेदनशीलता, सहिष्णुता और जीवन मूल्यों का ह्रास हुआ है। यह ह्रास जीवन के विभिन्न स्तरों पर दिखाई पड़ता है। प्रस्तुत संस्मरण में आशापूर्णा देवी ने जीवन के विभिन्न स्तरों पर होने वाले भावों (उपलब्धियों) और अभावों को चित्रात्मक भाषा में अभिव्यक्ति दी है।

मेरा बचपन

मेरा बचपन! क्या यह हाल की बात है? उस समय कोलकाता के रास्ते पर डोली चलती थी। सोचो! आज भी किसी रिमझिम दोपहर में जब कमरे में चुपचाप सोई रहती हूँ, रह-रहकर मानो सुदूर कहीं से आती हुई डोली के कहारों की वह 'हुन-हुन-नाह! हुन-हुन-नाह!' की आवाज़ आकर अंतरपट पर धक्का मारकर चली जाती है और तब आँखें मूँदकर सोचने को जी चाहता है कि यह आवाज़ उत्तर कोलकाता के एक बरामदे वाले मकान के सामने आकर रुकी। घाघरा पहने हुए एक छोटी-सी लड़की ने बरामदे में आकर झाँककर देखा। ज़मीन पर उतारी गई डोली में से बड़े कायदे से पहले एक पैर बाहर निकला, फिर सिर को झुकाकर बाहर निकाला और तब जाकर पूरे शरीर समेत बाहर निकल आई बड़ी मौसी या मझली नानी माँ और झामापोखर की भवानी बुआ।

ये ही बीच-बीच में आती थीं।

अकेले ही। हाँ, इनके अकेले आने में कोई डर की बात नहीं थी। क्योंकि ये सफ़ेद धोती पहने रहती थीं, शरीर पर गहने का नामोनिशान नहीं, सिर मुँड़ा हुआ। क्या लेंगे चोर-डकैत? अकेले आने के लिए पालकी के सिवा कोई चारा नहीं था, क्योंकि उस समय तक रिक्शा भी तो नहीं था, रिक्शे का नाम तक नहीं सुना था कोलकाता वालों ने।

आँखें मूँदते ही स्पष्ट देखती हूँ – बड़े कायदे से वे बाहर निकल आईं। ज़मीन पर खड़ी होकर आँचल की गाँठ खोलकर भाड़ा चुकाया।

चार-चार हट्टे-कट्टे कहारों ने डोली उतारकर अपने गंदे गमछे से बदन पोंछते-पोंछते एक चमकती 'दुअन्नी' ली, फिर उसी तरह डोली उठाकर चल दिए। ऊपर से यदि कोई दयाशील सवारी ताँबे का एक पैसा देकर कहती, 'बहुत पसीना बहा है! ले इससे थोड़ा जलपान कर लेना' तो उन चार चेहरों के आठ-आठ जोड़ी दाँत-आहा! मानो धूप में रखे आईने की तरह चमक उठते।

देखो भई, हमारा बचपन तो 'बहुत थोड़े से संतुष्ट' होने वाला दौर था। लोग थोड़े में संतुष्ट हो जाते थे, बच्चे थोड़े में संतुष्ट हो लेते। धोबी, नाई, कुली, कहार, गाड़ीवान, सब के सब वैसे ही थे।

धोबी को (यानी जिसे मैंने देखा है) यदि 'दो बीसी' (चालीस) कपड़ों के साथ दस-बारह छोटे-छोटे कपड़े, पाँच हाथ की धोती, साड़ी मुफ़्त में फींचने को देकर दो पैसा 'जलपान करना' कहकर दे दिया जाता था, तो वह खुशी के मारे गद्गद् हो जाता था। नाई? वह तो बड़ों के बाल काटते समय दो-चार छोटे बच्चों के बाल खुशी से 'फाव' (मुफ़्त) कहकर छाँट दिया करता था। लेकिन उन्हें पूरा सिर मुँड़वाने पर नकद एक डबल पैसा देना पड़ता था। शायद तुम लोगों ने वह पैसा देखा तक नहीं? गोलमटोल भारी-सा एक ताँबे का सिक्का। जिसमें 'बेलमुंडा राजा' (सातवें एडवर्ड) का चेहरा बना होता था।

खैर छोड़ो, वरना अभी तुम लोग कहने लगोगे कि धोबी-नाई की कहानी सुनकर क्या करेंगे? लेकिन जानते हो मैंने यह कहानी तुम लोगों को क्यों सुनाई? इसलिए कि हम लोगों ने अपने बचपन में संतुष्ट चेहरों की छवि कैसी होती है – वह देखी

है। क्या वे चेहरे तुम्हें अब नज़र आते हैं? अपने आस-पास, निकट-दूर, आईने के सामने!

आज के बच्चों की तो ज़ुबानी बोली ही है 'धत्! अच्छा नहीं लग रहा।' क्यों अच्छा नहीं लग रहा, शायद तुम लोग खुद भी नहीं जानते। असलियत तो यह है कि आसपास हमेशा 'अच्छा लगने वाला' चेहरा देखते-देखते तुम्हारी यह दशा हुई है। भई, हमारे बचपन में तो हमें हमेशा बहुत अच्छा लगता था। 'अच्छा नहीं लगता' जैसी भाषा ही नहीं जानते थे हम। सुबह उठकर अकारण ही 'अच्छा' लगा है। उस अकारण अच्छा लगने वाले सुनहरे पत्तर से मढ़ा हुआ है हमारा बचपन। लेकिन ज़रा सोचो, क्या था उस समय? इस युग की तुलना में, 'कुछ भी तो नहीं।' गाँव की बात तो छोड़ ही दो, खास कोलकाता शहर में ही जो था न, उसे सुनोगे तो तुम्हारी आँखें फटी-की-फटी रह जाएँगी। मैं तो खास कोलकाता की ही लड़की हूँ, यहीं पर बड़ी हुई और अब भी यहीं बैठे-बैठे बूढ़ी हो रही हूँ और देखती जा रही हूँ दिन-ब-दिन होने वाले परिवर्तनों को।

यद्यपि पैंसठ वर्ष पहले कोलकाता शहर का यह गौरव था कि 'इस शहर में पैसा फेंकने पर आधी रात में भी बाघ का दूध मिलता था'।

यह बात निहायत उड़ा देने वाली नहीं। जो कुछ रहता था, वह ज़रूर ही मिल जाता था। 'था' लेकिन 'है' नहीं कह सकते। दुकानदारों-व्यवसायियों की यह मानसिकता तब नहीं थी। बाघ का दूध किनके पास मिल सकता था मुझे नहीं मालूम, लेकिन यदि रहता तो वे अवश्य ही दे देते। 'कालाबाज़ारी' करने के लिए छिपाकर नहीं रखते।

फिर भी यह तो मानना ही होगा कि उन गौरवपूर्ण दिनों में भी कोलकाता में क्या-क्या नहीं था, इसकी यदि सूची बनाई जाए तो 'नहीं था' वाले शब्दों का एक शब्दकोश बन जाएगा।

हमारे बचपन में सिर्फ़ रिक्शा ही नहीं था, ऐसी बात नहीं। हम तो 'बस' का नाम तक नहीं जानते थे। सोच सकते हो? उस समय सिर्फ़ ट्रामगाड़ी और घोड़ागाड़ी तरह-तरह की ज़रूर थीं – फिटन, बग्घी, टमटम और छकड़ा।

एक-आध मोटरगाड़ी दिखती थी, वह बड़े-बड़े अंग्रेज़ साहबों की या फिर बहुत धनी लोगों की होती। हुड खुला हुआ, उसे अधिकतर हवागाड़ी ही कहा जाता था। टैक्सी? कहाँ थी उस समय कोई टैक्सी!

हमारे बचपन में कोई 'सार्वजनिक पूजा' नहीं होती थी, माइक नहीं था, बल्ब नहीं था, पूजा के लिए चंदा इकट्ठा नहीं किया जाता था। अच्छे घर की लड़कियों का रास्ते में निकलने का रिवाज़ नहीं था। आकाशवाणी नहीं थी, हवाई जहाज़ कैसे रहेगा? नहीं था। लेकिन जब हम थोड़े बड़े हुए तब पहली बार हवाई जहाज़ की आवाज़ सुनते ही भागकर छत पर जाते थे। हवाई जहाज़ को देखकर विश्वास करना ही पड़ा कि मेघनाद का मेघ की आड़ से लड़ा गया विमानयुद्ध निहायत काल्पनिक कथा नहीं है। 'मेघनाद' का मतलब मेघ का गर्जन। हवाई जहाज़ का गर्जन भी ठीक वैसा ही नहीं है क्या?

मुझे ऐसा सोचते हुए बहुत अच्छा लगता था। रामायण-महाभारत की कथा तो एकदम बचपन से ही सुनती आ रही हूँ।

गाड़ियों की बात भी अगर छोड़ दूँ तब भी बहुत-कुछ नहीं था। टी.वी. तो दूर की बात, रेडियो तक सुनने के लिए नहीं था। न ही था कोई सिनेमा हॉल। (हाँ, बायस्कोप नाम की एक चीज़ ज़रूर थी। वह भी निःशब्द, नीरव या सिर्फ़ अंग्रेज़ी में।)

कहूँगी तो हँसोगे, फ़ाउंटेन पेन भी नहीं था। जब पहली बार फ़ाउंटेन पेन निकला तो रवींद्रनाथ ने उसका नामकरण किया – 'झरना पेन'। फ़ाउंटेन पेन नहीं था, रीफ़िल पेन नहीं था।

प्लास्टिक नहीं था, पॉलिथिन नहीं था। गोलगप्पा नहीं था। नाइलॉन, टेरिलिन, टेरीकॉट, हवाई चप्पल कुछ भी नहीं था। विश्वास हो रहा है?

देखो, इस तरह आदमी चाँद पर जाकर खंभा गाड़ आएगा, महाशून्य में 'रॉकेट-स्टेशन' बनेगा, सिर्फ़ एक बम से पूरे शहर का विध्वंस करना सीखेगा, बंद 'हार्ट' को मशीन लगाकर फिर से चालू करना सीखेगा – ये बातें उस समय काल्पनिक ही लगती थी, किसी का इन पर रत्ती भर विश्वास नहीं था।

'लोड शेडिंग' नामक एक शब्द बनेगा, यह धारणा ही तब थी क्या? घर-घर में तो बिजली-बत्ती नहीं थी। इसलिए बिजली से संबंधित सभी चीज़ों को निर्भय निश्चिंत होकर छोड़ सकते हो।

विज्ञान की अविश्वसनीय प्रगति और आराम-सुविधा की जितनी भी सामग्री आज उपलब्ध है वह पिछले पचास-साठ वर्षों के दौरान ही हुई। इसलिए तुम लोगों के लिए जो भी उपलब्ध है उसका सातवाँ हिस्सा भी तब हमारे लिए नहीं था। लेकिन इससे यह न समझना कि लोगों में चमक-दमक, उत्सव-उल्लास नहीं था। वह सुनोगे तो तुम लोग हैरान रह जाओगे। दूल्हा जब शादी करने जाता था, तब फूलों से सजी मोटरगाड़ी अवश्य नज़र नहीं आती थी लेकिन जो नज़र आता था, वह कम नहीं था। सड़क पर बैगपाइप से अंग्रेज़ी बाजा बजता था, गोरों और रईसों की बरात आते देख हम सब भागते थे, खिड़कियों और बरामदे की छत की तरफ़। क्योंकि वह बहुत शानदार बरात हुआ करती थी।

संपन्न होने पर चार घोड़े, आठ घोड़े, सोलह घोड़े यहाँ तक कि बत्तीस घोड़ों वाली गाड़ी भी देखी जा सकती थी। उसके साथ-साथ अंग्रेज़ी बाजा और ऐसटिलिन गैस बत्तियों की आलोक-सज्जा वाली शोभायात्रा भी। उसमें हाथी के नाप का हाथी, घोड़े के नाप का घोड़ा, ऊँट के नाप का ऊँट। इसके अलावा दसमुंडी

वाला रावण, नाक-कान कटी शूर्पणखा, हाथ-पाँव फैलाए हुए ताड़का राक्षसी। इसके साथ ही राम-सीता, राधा-कृष्ण, शिव-पार्वती की जोड़ी भी रहती।

इन सबके बीच सिर पर ज़री की झालर लगे घोड़े जब कदम-से-कदम मिलाकर चलते थे तो सचमुच एक मनोरम दृश्य बनता था।

यह तो हुई बरात की बात। और, शादी घर! तुम लोग चाहे अब कितना ही डेकोरेटर से सजवा लो, चॉप, कटलेट, आइसक्रीम खाओ, हम जो आनंद-उल्लास मनाते थे, वह नहीं पाओगे। शादी से पहले और बाद के पंद्रह दिनों तक के लिए सभी नाते-रिश्तेदारों को घर पर बुला लिया जाता था। फिर दोनों जून इतना खाना बनता था मानो यज्ञ हो रहा हो। बच्चों का कोलाहल, महिलाओं का गप्पें मारना, घर के पुरुषों की भाग-दौड़, बच्चों का रोना-धोना – यह सब न होने पर भला शादी घर क्या? सब मिलाकर लगता था कि कुछ हो रहा है।

भोज का वर्णन न ही करूँ तो बेहतर होगा, क्योंकि सुनने से तुम लोगों का मन खराब हो जाएगा। लेकिन इतना कहे बिना रहा नहीं जा रहा कि निमंत्रितों को जब विदा किया जाता था, तब ज़बरदस्ती उनके हाथ में आने-जाने का किराया तक दे दिया जाता था। और गाड़ी में चढ़ाते समय प्रति व्यक्ति एक प्लेट मिठाई (यानी मिट्टी के बरतन में आठ से बारह-सोलह तक मिठाइयाँ) दी जाती थी। जो कुछ यहाँ खाया है घर जाकर एक बार फिर खाने का मन कर सकता है! इसका मतलब यह था।

हमारे बचपन में बहुत-कुछ भले ही नहीं था लेकिन बहुत कुछ था भी, जिसका नाम है – हृदय। इतने दिनों तक निमंत्रण वाले घर में रुक जाने से बच्चे अवश्य ही स्कूल में अनुपस्थित हो जाते थे लेकिन इससे क्या! उठते-बैठते इतनी परीक्षाएँ तो नहीं

देनी पड़ती थीं उस समय। न ही बच्चों पर ज़्यादा उनकी किताबों का वज़न था।

साल भर तो पढ़ेगा ही। लेकिन इसका यह तो मतलब नहीं कि बच्चे शादी-घर में ज़रा उछल-कूद नहीं करेंगे! और जब तक वे स्कूल में रहते हैं बच्चे ही तो रहते हैं! तुम लोग सुनकर व्यंग्यात्मक हँसी हँस रहे हो न? हँसो। लेकिन याद रखना, इसी माहौल में उन्नीसवीं शताब्दी के महान-महान पंडितों और विद्वानों ने ही इस बीसवीं शताब्दी को सोने से मढ़ दिया है।

ज़्यादा दूर जाने की ज़रूरत नहीं। यही सोचो कवि रवींद्रनाथ किरासन की रोशनी में पढ़कर, दवात में कलम डुबो-डुबोकर लिखते हुए 'रवींद्रनाथ' बने और वीरभूम की भीषण गरमी में ताल के पत्ते का पंखा झलकर हवा खाते हुए गीत लिखा है – गाँव की उस लाल मिट्टी के रास्ते मेरा मन बहलाते हैं।

दरअसल सब कुछ तुलनात्मक है। तुम लोग अभी हमारे ज़माने की बात सुनकर अवश्य ही सोच रहे होंगे – आहा बेचारे! कितना दुख झेला है, कितना दुखी रहे। लेकिन हममें था बेहद संतोष। थोड़े में ही संतोष।

'तब के लोगों' में सिर्फ़ धोबी, नाई, कुली, मिस्त्री, गाड़ीवान, कहार, बच्चे ही थोड़े में संतुष्ट नहीं होते थे। देखो न, 'कागज़' (अखबार पत्रिका) के संपादक भी वैसे ही थे। वरना क्या मैं आज 'लेखिका' बन पाती?

लेखन में हाथ डाला, यह भी तो बचपन की ही बात है। सिर्फ़ तेरह वर्ष की उम्र में। और दुस्साहस के साथ उसी लेखन को एक संपादक के दफ़्तर में भेज दिया। तुरंत वह छप गया। फिर संपादक महोदय ने पत्र भी लिखा, 'बहुत अच्छा लिखा। और लिखो। हमें भेजती रहो।'

अब बताओ, क्या वह समय अच्छा नहीं था। यदि वे उतना प्रभावित न होते, यदि प्रथम लेखन को कूड़े की टोकरी में डाल देते, बार-बार मुझसे रचना न माँगते तो आशापूर्णा देवी के 'आशापूर्णा देवी' बनने का बारह बज गया होता। मिलेगा अब वैसा संपादक? जिसे देखो, वह नाक सिकोड़े हुए है – 'नया लेखक? धत् तेरे की!' क्या उन सबकी अब ऐसी मानसिकता है?

इसलिए कह रही थी, हमारा बचपन बड़े अच्छे ज़माने में था। भई! हमेशा इस तरह लोगों को टेंशन में दिन नहीं बिताना पड़ता था। मौसी की शादी में एक महीने तक मामा के घर रहने के बाद भी 'पास' हुआ जा सकता था। पास होते ही नौकरी मिल जाती थी। बच्चों को साल के किसी भी महीने स्कूल में भर्ती करने के लिए ले जाओ, सीट मिल जाती थी।

स्कूल की पुस्तकें एक बार खरीदने से पीढ़ी-दर-पीढ़ी उन्हीं को पढ़कर 'पास' होती चली जाती थी। हँसो नहीं, यह सच है! मेरे बड़े ताऊ की किताबों से एक-के बाद-एक तीनों ताऊ पढ़े, फिर मेरे पिताजी और चाचा ने भी वही किताबें पढ़कर एंट्रेंस पास किया। फिर उन्हीं में से छाँट-छाँटकर मेरे भैया लोगों ने भी काम चला लिया। उन सभी ने तो आराम से ही दिन बिता लिए।

एक लड़के के लिए किताबें लीं और उनसे सात लड़के पढ़ लेंगे, क्या यह कम सुख की बात है? बक्सा-बिस्तर के साथ स्टेशन पर जाकर टिकट लेते ही रेलगाड़ी में सीट मिल जाती थी, क्या यह कम सुखद बात थी? अब बताओ, क्या वह ज़माना बुरा था?

बचपन की बातें शुरू करने में खतरा है। स्मृतियों का समुद्र उफन उठता है।

याद आती है, विजयादशमी के खुशी के उन दिनों की, सरस्वती पूजा की जब सिर्फ़ दवात और कलम की ही पूजा होती

थी। फिर भी कितना उत्तेजनापूर्ण था। वासंती रंग का कपड़ा पहनना है ही। सरस्वती पूजा से पहले बेर खाने के बारे में तो सोचूँ तक नहीं। पूजा के दिन गलती से एक लाइन पढ़ न डालूँ ...

पूजा से पहले वाली रात दीवार पर टँगे कैलेंडरों को उलट-उलट कर रख देती, किताब-कॉपी हटाकर रखती, ताकि छू न जाए। निष्ठा का वह आनंद बड़ा सुखदाई होता था। रथ, होली किस पर्व पर हम खुशी न मनाते? छोटे-छोटे मिट्टी के रथ खींचने का आनंद लेते। होली खेलने की बहुत नपी-तुली छूट थी हमें। लेकिन असली खुशी तो पर्व-की ही थी।

हर पर्व में एक चमकदार चाँदी की 'दुअन्नी' (दो आना) जो मिलती थी, वह उस समय के लिए राज-ऐश्वर्य था! तीनों बहनें मिलकर उसे किस तरह खर्च करेंगी, दो-चार दिन पहले से इस पर सोच-विचार करती रहती। खीर की कुल्फ़ी? गुलाबी रेवड़ी? काँचकड़ा की पुतलियाँ? लालफीता? दीदी गुस्से से कहती, 'जा, तू चाहे कुछ भी कह, आखिर में तो लाइनदार कॉपी खरीद कर पैसा खर्च कर देगी।'

बात भी सही थी। बचपन में मेरी सबसे ज़्यादा कमज़ोरी यह चीज़ ही थी – लाइन खींची हुई कॉपी। दो आने में दो मिलती थीं। जिल्द चढ़ी होने पर एक मिलती थी। पैसा मिलते ही मैं इस इच्छा को पूरा करती थी। मेरे लिए कॉपी खरीदने से ही पैसा सार्थक होता था।

एक बार भैया की एक खोई हुई किताब ढूँढ़ देने पर उसने मुझे एक मोटी-सी कॉपी उपहार में दी थी। यद्यपि भैया भी उस समय स्कूल का छात्र ही था तब भी उसने अपने टिफ़िन का पैसा जोड़-जोड़कर मुझे वह उपहार दिया था। ...आहा! उस दिन भैया मुझे स्वर्ग के देवता के बराबर लगा था। और वह रूलदार कॉपी! स्वर्ग का एक टुकड़ा। आज भी वह स्मृति मानो मन में

चमक रही है। उसके बाद तो कितना कुछ मिला, लेकिन जीवन का पहला उपहार जो किसी ने मेरे मन को पढ़कर दिया था क्या उसके साथ किसी की तुलना हो सकती है? प्यार को समझना, स्नेह की अनुभूति, यह था हमारे ज़माने में। उस कॉपी की कीमत थी चार आना। एक बार माँ को कहते सुना था एक कॉपी का दाम चार आना! बाप रे, दिन-ब-दिन चीज़ों का दाम कितना बढ़ रहा है।...

हाँ, उनके हिसाब से तो चीज़ों का दाम बढ़ ही रहा था। चीनी से जमाया गया खॉटी दही छह आना सेर से कम में नहीं मिलता, रबड़ी एक सेर चौदह आना की हो गई। कटी हुई रोहू मछली आठ आने सेर से कम में देना ही नहीं चाहते।

यह सब है हमारे बचपन की बातें।...हाँ, लेखिका-जीवन की भी कुछ बातें हैं। पहले ही बताया न, पहली रचना का छप जाना, वह रचना जिस पत्रिका में छपी थी, उसका नाम था 'शिशुसाथी' उसमें दिए पते पर दूसरी-दूसरी बाल पत्रिकाओं से चिट्ठी आने लगी – 'अपनी रचना भेजो।'

'भेजो' नहीं लिखेंगे तो क्या 'भेजिए' लिखेंगे? बच्चों की पत्रिका में जो लिखती थी। और खुद भी तो तब छोटी ही थी। 'खोकाखुकू' नामक एक पत्रिका थी उसमें तो अनगिनत लिखा है।... अब तो वह सब पता नहीं कहाँ खो गया। तब क्या पता था कि बच्चों की लेखिका होते-होते अंततः लेखिका ही हो जाऊँगी। छपा, सबने पढ़ा, कोई-कोई पढ़ने के लिए ले गया तो फिर वापस ही नहीं किया, बस। उस 'खोकाखुकू' पत्रिका से ही मुझे दो बार साहित्य-प्रतियोगिता में पुरस्कार मिला। एक बार द्वितीय पुरस्कार और एक बार प्रथम पुरस्कार। भई, वह स्वाद जीवन में फिर नहीं मिला। तुम्हारे 'ज्ञानपीठ' से भी नहीं।

बचपन की प्राप्ति ही परम-प्राप्ति होती है, उसका स्वाद ही निराला होता है।

लेकिन यह कहानी सुनकर तुम क्या करोगे? इसके बदले यदि कोई भूत की कहानी हो या जासूसी कहानी हो तो तुम अवश्य ज़्यादा खुश होते न? शायद सोच रहे होगे, धत् इतनी देर तक इसे पढ़कर समय नष्ट न करके टी.वी. देखता तो कुछ काम बनता।

लेकिन मैं क्या करूँ, बोलो? इसमें मेरा कोई दोष नहीं। दोष तुम्हारे संपादक महोदय का है। खैर, इसके साथ तुम्हारे लिए छोड़ रही हूँ ढेर सारी शुभकामनाएँ।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. बड़ी मौसी या मझली नानी माँ का अकेले आना डर की बात क्यों नहीं थी?
2. हवाई जहाज़ को देखकर लेखिका को मेघनाद के विमानयुद्ध की कथा काल्पनिक क्यों नहीं लगी?
3. लेखिका को बचपन की बातें शुरू करने में खतरा क्यों लगता है?
4. लेखिका को पहला उपहार क्या मिला और वह उस उपहार को जीवन में मिले अन्य उपहारों से श्रेष्ठ क्यों मानती है?
5. लेखिका की प्रारंभिक रचनाएँ किन-किन पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं?

लिखित

1. लेखिका ने अपने बचपन को 'बहुत थोड़े में संतुष्ट होने वाला दौर' क्यों कहा है?
2. लेखिका अपने बचपन और आज के बच्चों के बचपन में क्या-क्या अंतर पाती है?
3. कोलकाता में बहुत कुछ न होने पर भी अपने बचपन में कोलकाता में बिताए गए दिनों को लेखिका ने गौरवपूर्ण क्यों कहा है?

4. वर्तमान प्रगति की कौन-सी बातें लेखिका को अपने बचपन में काल्पनिक लगती थीं?
5. प्रस्तुत पाठ में आजकल के संपादकों पर क्या व्यंग्य किया गया है?
6. आशय स्पष्ट कीजिए –
   - हमारे बचपन में बहुत कुछ भले ही नहीं था, लेकिन बहुत कुछ था भी, जिसका नाम है हृदय।
   - निष्ठा का वह आनंद बड़ा सुखदाई होता था।
   - बचपन की प्राप्ति ही परम-प्राप्ति होती है, उसका स्वाद ही निराला होता है।
7. लेखिका के मन में अपने बचपन की कौन-सी स्मृतियाँ उमड़ती-घुमड़ती रहती हैं? उन स्मृतियों में से किस स्मृति ने आपको सर्वाधिक प्रभावित किया और क्यों?

भाषा-अध्ययन

1. **पढ़िए और समझिए :**

   (क) दाँत मानो धूप में रखे आईने की तरह हों।
   दाँतों को देखकर ऐसा लगता हे जैसे धूप में रखा आईना हो।

   (ख) यह तो हुई बरात की बात।
   हमने अभी तक बरात की चर्चा की। (हम आगे दूसरी बात करेंगे)।

   (ग) क्या लेंगे चोर-डकैत?
   मेरे पास ऐसा कुछ नहीं है जो चोर-डकैत ले सकें।

   (घ) घर जाकर एक बार फिर खाने का मन कर सकता है।
   घर वापस जाकर एक बार फिर खाने की इच्छा हो सकती है।

   (ङ) दिन-ब-दिन चीज़ों का दाम कितना बढ़ रहा है।
   हर दिन चीज़ों का दाम कितना बढ़ रहा है।

2. (क) **द्वंद्व समास में दो शब्द 'और', 'या' से जोड़े जाते हैं, जैसे – रात-दिन (रात और दिन), पचास-साठ (पचास या साठ)। तत्पुरुष समास में अन्य संबंध आते हैं; जैसे – राजपुत्र (राजा का पुत्र), विचार-मग्न (विचार में मग्न)।**

तदनुरूप निम्नलिखित समस्त शब्दों का विग्रह करके समास का नाम लिखिए :

चोर-डकैत	....	दो-ढाई	....
चमक-दमक	....	राम-दास	....
राम-कृष्ण	....	नपी-तुली	....
जीवन-मरण	....	जीवन-दाता	....

(ख) पुल्लिंग आ-कारांत संज्ञा शब्द के साथ 'दार' प्रत्यय आने पर मूल शब्द ए-कारांत में बदल जाता है। स्त्रीलिंग आकारांत तथा अन्य संज्ञा शब्दों के साथ 'दार' आने पर मूल शब्द नहीं बदलता, जैसे– हिस्सा – हिस्सेदार

निम्नलिखित शब्दों में 'दार' प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाइए :

जिम्मा	....	हवा	....
जान	....	धार	....
धारी	....	ईमान	....
पहरा	....	दुनिया	....

3. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :

> अब मेरे पास साइकिल है। ⇒ पहले मेरे पास साइकिल नहीं थी।
> अब मैं क्रिकेट खेलता हूँ। ⇒ पहले मैं क्रिकेट नहीं खेलता था।

(क) अब हम दिल्ली में रहते हैं। ....।
(ख) आजकल मैं हिंदी बोलती हूँ। ....।
(ग) आजकल हमारे पास कार है। ....।
(घ) मैं इन दिनों कभी-कभी कॉफी पीती हूँ। ....।
(ङ) अब मैं नेहरू स्कूल का छात्र हूँ। ....।
(च) अब मेरी साइकिल बहुत पुरानी है। ....।

4. नीचे दिए संदर्भों को ध्यान में रखकर अपने पिछले जीवन की घटनाओं के बारे में छः वाक्य लिखिए। जैसे – 'मैं' कक्षा पाँच में था/उन दिनों मैं फुटबॉल खेलता था।

(क) रहने का स्थान – शहर
(ख) खाने-पीने की आदतें – खेलकूद की रुचि

(ग) घर के लोग
(घ) घर में आने वाले रिश्तेदार
(ङ) त्योहार मनाना

5. **कल की घटना के संदर्भ में डायरी के रूप में पाँच वाक्य लिखिए। जैसे – मैं कल बाज़ार गई।**
(क) चीज़े खरीदना
(ख) लोगों से मिलना
(ग) होटल में खाना-पीना
(घ) टी.वी. देखना/किताबें पढ़ना
(ङ) घर का काम करना

6. **निम्नलिखित मुहावरों द्वारा सार्थक वाक्य बनाइए :**
(क) गद्गद होना
(ख) आँखें फटी-की-फटी रह जाना,
(ग) चारा न होना
(घ) नाक कटना
(ङ) लाल-पीला होना

योग्यता-विस्तार

कल्पना कीजिए की आप किसी ऐसे स्थान पर हैं जहाँ न आज जैसे यातायात के साधन हैं, न टेलीफ़ोन और न ही बिजली की सुविधा। एक अनुच्छेद लिखकर बताइए कि ऐसे में आपका जीवन कैसा होगा।

शब्दार्थ और टिप्पणी

डोली – पालकी
कहार – पालकी ढोने वाला
अंतरपट – हृदय
घाघरा – स्त्रियों का कमर में पहनने का घेरेदार पहनावा, बड़ा लहँगा
कायदा – नियम, विधि
नामोनिशान – चिह्न
गमछा – तौलिया

गद्गद	–	खुश होना, पुलकित होना
चारा न होना	–	कोई विकल्प न होना, कोई उपाय शेष न रहना
दुअन्नी	–	बारह पैसे मूल्य का सिक्का
फींचना	–	कपड़े पछाड़कर धोना
छवि	–	शोभा, सुंदरता
निहायत	–	अत्यंत, बिलकुल
आँखें फटी-की-फटी रह जाना	–	चकित होना
मानसिकता	–	सोच
रिवाज़	–	रीति, रस्म
उत्तेजना	–	तीव्र उत्सुकता
मेघनाद	–	रावण के ज्येष्ठ पुत्र का नाम, बादलों की आवाज़
नीरव	–	जिसमें किसी प्रकार की ध्वनि न हो, नि:शब्द
विध्वंस	–	विनाश
काल्पनिक	–	ज़िसकी कल्पना की गई हो और जो वास्तव में न हो
विश्वास	–	भरोसा
धारणा	–	कल्पना
अविश्वसनीय	–	जिस पर विश्वास न हो
उपलब्ध	–	प्राप्त, विद्यमान
हैरान रह जाना	–	आश्चर्य में पड़ना
आलोक सज्जा	–	रोशनी की सजावट

2. डॉ. क्षमाशंकर पांडेय

(जन्म 1955)

डॉ. क्षमाशंकर पांडेय का जन्म मीरजापुर जनपद (उ.प्र) के नियामतपुर कलाँ ग्राम में हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उन्होंने एम.ए. (हिंदी) की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। इस समय पांडेय जी श्रीमती इंदिरा गांधी राजकीय महाविद्यालय लालगंज मीरजापुर में वरिष्ठ प्रवक्ता के रूप में कार्यरत हैं।

पांडेय जी की प्रकाशित पुस्तकें हैं – ***मुक्तिबोध की काव्य भाषा, तुलसीदास****। हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में उनके अनेक शोध-लेख एवं विविध विषयों से संबंधित निबंध प्रकाशित हुए हैं। आधुनिक काव्य एवं साहित्य की समालोचना इनका प्रिय विषय है।*

प्रस्तुत निबंध 'आग, अलाव और हम' में अलाव ग्राम्य-जीवन की संस्कृति का प्राण है। वह लोक-जीवन की सामूहिक चेतना का भी प्रतीक है। ग्राम्य-जीवन में परस्पर स्नेह, एकता, मेल-मिलाप, सुख-दुख में भागीदारी, समस्या-समाधान और ऊर्जा का दूसरा नाम है – अलाव। अलाव अभाव और संघर्ष से भरे कठिन ग्रामीण-जीवन को सरल और सहज बना देता है। प्रस्तुत निबंध आग, अलाव और हम में अग्नि को इसी रूप में प्रस्तुत किया गया है। अग्नि के बहुत से रूपों की चर्चा करते हुए लेखक अग्नि के लोक कल्याणकारी स्वरूप पर ही विशेष आग्रह करता है। बिना आग में तपे हमारा जीवन कुंदन नहीं बन सकता। जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए हमें निश्चय ही अग्नि-पथ से गुज़रना होगा।

वस्तुतः अलाव माध्यम है समाज को एक सूत्र में बाँधने का। लेखक के अनुसार आग और अलाव दोनों ही एक-दूसरे के पूरक हैं और साथ ही हमारी संस्कृति के पोषक भी।

आग, अलाव और हम

आज सुबह शहर की सूनी सड़क से गुज़रते हुए जब तीखी हवा ने अखबारों के अनुसार शीतलहरी के लौटने की घोषणा की, मन और तन दोनों को ही तत्काल ताप या कि कहें आँच की आवश्यकता प्रतीत हुई। प्रशासन की घोषणाओं के बाद भी कुंदे अभी चौराहों पर जले नहीं थे। हाथ मलते और मुँह से 'सी-सी' की आवाज़ निकालते सहसा ही स्मृतियाँ पहुँच गईं गाँव की चौपाल पर, जहाँ सुबह होते ही बाबा का अलाव जल जाता था। नित्यकर्म से निवृत्त हुए लोग हाथ सेंकने के लिए पहुँचते और फिर बातों का तार टूटने का नाम ही नहीं लेता था। हाथ-पाँव सेंकते हुए लोग-बाग सुख-दुःख, खेती-गृहस्थी, हाल-रोज़गार, सब-कुछ अलाव के पास ही बैठकर जान-समझ लेते थे। और तो और कुत्ता भी सुबह बुझे अलाव की राख में सोया हुआ मिलता था। इन सब की तलाश थी अलाव में सिमटी आग, आँच। जब-जब हम ठंडे होते हैं, हमारे उत्साह पर, उल्लास पर पाला पड़ता है, हम आग की तलाश करते हैं। आग हमारे लिए निहायत जरूरी चीज़ है। यह आग न हो तो हमारा आकार ग्रहण करना भी संभव न हो, क्योंकि जिन पाँच तत्त्व से मिलकर यह मानव चोला बना है, उसमें आग या अग्नि का भी सहयोग है, गोस्वामी जी की साक्षी है कि –

क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरा।
पंच रचित यह मनुज सरीरा।।

इस पंच तत्त्व समवाय में आग केंद्र-स्थानी है और केंद्र-विहीन रचना कैसी होगी इसकी कल्पना सहज ही की जा सकती है। आदिमानव ने जिन चीज़ों को अत्यंत उत्सुकतापूर्वक आविष्कृत किया था उसमें आग सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण थी। हमारे विकास की समूची यात्रा में आग का महत्त्वपूर्ण स्थान है, वह दैनिक कृत्य हो, यज्ञ हो या प्रकाश हो, वह सब इस आग की चिंगारी से ही आकार पाता था। आर्यों की समूची यात्रा में आग बराबर उसके साथ रही। वे जहाँ-जहाँ गए आग को भी अपने साथ ले गए। कहा जाता था कि सद्गृहस्थ के घर की आग कभी भी नहीं बुझती। वह पत्थरों की टकराहट रही हो या अरणि-मंथन। यह आग प्रज्वलित रहे तो हम हर प्रकार की चुनौतियों का सामना करने में समर्थ हो सकते हैं।

कच्चे को पक्का आग ही तो करती है। यदि हमें अपने को पक्का करना है तो फिर अग्नि-परीक्षा से गुज़रना ही होगा। कंचन को भी कुंदन की संज्ञा पाने के लिए अग्नि-परीक्षा देनी ही पड़ती है। जिस तत्त्व को कच्चे से पक्के की यात्रा करनी है उसे आग का योग करना ही पड़ेगा फिर वह चाहे मिट्टी हो या भोजन। इतना ही क्यों, जिस मन की आग बुझ जाए, जिसके ह्रदय में किसी काम के प्रति आग ही न हो, फिर वह संसार की चुनौतियों को कितना स्वीकार कर सकेगा यह विचारणीय है। शायद इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए स्वर्गीय दुष्यंत कुमार ने कहा था कि –

मेरे सीने में न सही, तेरे सीने में सही।
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।।

लेकिन आज तो यह आग अनियंत्रित होती जा रही है। आग लगना और लगाना आम बातें हो गई हैं। दूसरों के घर में आग लगाकर हाथ सेंकने वालों की तादाद दिनों-दिन बढ़ती जा रही

है। सोचता हूँ क्या आग का यही स्वरूप हमारा काम्य था। गोस्वामी जी की कई बार पढ़ी-पढ़ाई पंक्ति सोच को नए संदर्भों में ढकेलती है कि –

"भानु-पीठ सेइय उर आगी।"

अर्थात् आग का सामना करना चाहिए। उसे अपने दृष्टि-पथ से ओझल नहीं होने देना चाहिए। यदि किसी कारणवश आग अनियंत्रित भी होती है तो उसे पीठ दिखाने से काम नहीं चलेगा। अच्छा तो यह होगा हम आग पर नियंत्रण रखें, क्योंकि किसी भी शक्ति का अनियंत्रित विस्तार अंततः कष्ट का ही कारण बनता है। आज जब देश और समाज भिन्न-भिन्न आगों में दहक और सुलग रहे हैं, यह 'सेइय उर आगी' की चेतावनी और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। शक्ति को नियंत्रण में रखते हुए उसे लोक-कल्याणकारी स्वरूप दें। यही सदा से मानव मेधा और मन का काम्य रहा है। इसी की साधना और आराधना मनुष्य ने समूची यात्रा में की है।

आग के इस लोकानुग्रही रूप का विग्रह अलाव भी है, जो न केवल शीत दूर करने का माध्यम है बल्कि लोक की सामूहिक चेतना का प्रतीक भी है। अलाव से ही जुड़े हैं नेह-छोह के अदृश्य बंधन जिनके पाश में बँधा हुआ था समूचा गाँव। जैसे-जैसे बदलाव ने पाँव पसारे हैं अलाव भी अब प्रायः स्मृति की चीज़ बनता जा रहा है। गाँव जो अलाव के पास बैठकर अपने दुःख-सुख बाँटता था, शिकवे-शिकायतें करता था और कभी-कभी अपनी समस्याओं का समाधान भी पाता था, वह अब शहराता जा रहा है। समय के साथ-साथ हमारे प्रेम और अपनत्व के दायरे सिमटते जा रहे हैं। दूसरों का घर जलाकर हाथ सेंकना, जब आदत बन गई हो तो क्या ज़रूरत पड़ी है अलाव जलाने और जलवाने की। शहरों से आयातित शहरीपन गाँव की नस-नस में

समाता जा रहा है। शायद कृत्रिमता ही सभ्यता और संस्कृति का चरम मानक हो। दुमुँहापन आज की सबसे बड़ी आवश्यकता बनता जा रहा है। ऐसे में चौपाल पर अलाव के इर्द-गिर्द बैठकर इकहरे मन से बातें भला किसे रुचे।

ठंड का आलम जैसे-जैसे बढ़ता जा रहा है; आग और अलाव की आवश्यकता वैसे ही दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। अग्निपूजक आर्यों की संततियाँ सचमुच आग का प्रताप और परंपरा भूलती जा रहीं हैं। एक कच्चापन हमें मोहित किए हुए है। हम पकना चाहते ही नहीं, पर क्या बिना पके हमारी मुक्ति संभव है? आग और अलाव दोनों ही वियोग नहीं बल्कि योग के साधक हैं। दोनों ही जोड़ते हैं। एक चीज़ों को जोड़ती है, दूसरी मनों एवं समाज को।

हमारा यह दायित्व है कि आग एवं अलाव के संदेश एवं संकेत को सही ढंग से समझें। तभी इस ठिठुराने वाले मौसम की मार से मुक्ति संभव है। जब तक अलाव जलते रहेंगे तब तक बची रहेगी आग, बची रहेगी सामूहिकता, बचा रहेगा खुलकर कह-सुन सकने का चलन। अतएव ग्राम-जीवन से उजड़ते जा रहे अलाव को बचाना अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को भी बचाना होगा।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. लेखक को गाँव की चौपाल की स्मृति क्यों हो आई?
2. गाँव के लोग सुबह होते ही चौपाल पर क्यों एकत्र हो जाते थे?
3. अलाव के पास बैठकर लोग किस-किस प्रकार की बातें किया करते थे?

4. मानव शरीर किन पाँच तत्त्वों से मिलकर बना है?
5. चुनौतियों का सामना करने के लिए किस आवश्यकता पर बल दिया है?

लिखित

1. हमारे जीवन में आग का क्या महत्त्व है?
2. लेखक की दृष्टि में आग का कौन-सा स्वरूप वाँछनीय नहीं है?
3. अलाव को लोक की सामूहिक चेतना का प्रतीक क्यों कहा गया है?
4. गाँवों पर शहरी प्रभाव देखकर लेखक ने वर्तमान सभ्यता और संस्कृति पर क्या टिप्पणी की है?
5. अपनी सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिए लेखक हमें किस दायित्व की याद दिलाता है?
6. आशय स्पष्ट कीजिए –
   - कंचन को भी कुंदन की संज्ञा पाने के लिए अग्नि परीक्षा देनी ही पड़ती है।
   - ठंड का आलम जैसे-जैसे बढ़ता जा रहा है, आग और अलाव की आवश्यकता वैसे ही दिनों-दिन बढ़ती जा रही है।
7. लेखक के अनुसार अलाव भी अब स्मृति की चीज़ क्यों बनता जा रहा है? (नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प के सामने सही (✓) का चिह्न लगाइए।)
   (क) बिजली आ जाने से अलाव की कोई आवश्यकता नहीं रही।
   (ख) शहर के प्रभाव ने गाँव की जीवन-शैली बदल दी है।
   (ग) अलाव जलाने की सामग्री उपलब्ध नहीं है।
   (घ) गाँव के लोगों के पास समय का अभाव है।

भाषा-अध्ययन

1. **पढ़िए और समझिए :**
   (क) बातों का तार टूटने का नाम ही नहीं लेता था।
   बातों का सिलसिला चलता ही जाता था।
   (ख) हर काम में आग का महत्त्वपूर्ण स्थान है, चाहे वह दैनिक कृत्य हो, यज्ञ हो या प्रकाश हो।

हमारे दैनिक कृत्य में आग का महत्त्वपूर्ण स्थान है, लेकिन प्रकाश के लिए भी आग का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

(घ) अर्थात, आग का सामना करना चाहिए।
इस बात का अर्थ/मतलब यह है कि हमें आग का सामना करना चाहिए।

(ङ) अच्छा तो यह होगा कि हम आग पर नियंत्रण रखें।
हमारे लिए आग पर नियंत्रण रखना अच्छा होगा।

2. उदाहरण के अनुसार 'इत' प्रत्यय वाले विशेषण से वाक्य बदलकर लिखिए :

आदि मानव ने आग का आविष्कार किया
⇒ आदि मानव ने आग को आविष्कृत किया।

(क) हमारी सरकार ने एक लाख टन तेल का आयात किया है।
(ख) प्रधानमंत्री ने सभा से पहले दीप-प्रज्वलन किया।
(ग) आदि मानव ने आग का नियंत्रण किया।
(घ) जादूगर ने सभी दर्शकों का सम्मोहन किया।
(ङ) छात्र सचिव ने समारोह का सफलतापूर्वक आयोजन किया।

3. उदाहरण के अनुसार मिश्र वाक्य को सरल वाक्य में बदलकर लिखिए :

जब हम बाज़ार से गुज़र रहे थे तब हमने देखा.......
⇒ बाज़ार से गुज़रते हुए हमने देखा.......।

(क) जब मैं पाठ पढ़ रहा था मुझे नींद आ गई।
(ख) जब बच्चे मार्च पास्ट में जा रहे थे तब वे ऊँचे स्वर में गा रहे थे।
(ग) जब तुम स्कूल से लौटो तो दो किलो आलू लाना।
(घ) जब गाड़ी दिल्ली जा रही थी तो रास्ते में अचानक रुक गई।
(ङ) जब तुम पाठ पढ़ो तब टी.वी. देखना अच्छी आदत नहीं है।

4. उदाहरण के अनुसार वाक्य जोड़कर लिखिए :

आज मैं बहुत चला इस कारण मैं थक गया ⇒ आज मैं चलते-चलते थक गया।

(क) मैंने लोगों से पूछा, इस तरह चाचा के घर पहुँच गया।

(ख) रात को मैं बहुत देर तक पढ़ा इसलिए मुझे अचानक नींद आ गई।

(ग) मैंने मामा का घर बहुत ढूँढ़ा, इससे मैं बहुत परेशान हो गया।

(घ) मोहन ने आज बहुत गाया परिणामस्वरूप उसका गला रुंध गया।

(ङ) गीता बहुत तेजी से नीचे उतरी इसलिए सीढ़ियों पर फिसल गई।

5. नीचे दिए गए मुहावरों के युग्म एक-दूसरे के विपरीत अर्थ वाले हैं। इनका अर्थ समझिए और सही संदर्भ में वाक्यों में इनका प्रयोग कीजिए :

आग लगाना	....	आग बुझाना	....
नाक कटना	....	नाक रखना	....
चेहरा मुर्झाना	....	चेहरा खिलना	....
बात बन जाना	....	बात बिगड़ जाना	....
आँखें खुलना	....	अकल पर पर्दा पड़ना	....

योग्यता-विस्तार

पुस्तकालय से अथवा शिक्षक की सहायता से रामवृक्ष बेनीपुरी द्‌वारा रचित निबंध 'मशाल' प्राप्त करके पढ़िए और जीवन में अग्नि के महत्त्व के बारे में कक्षा में चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

अलाव – तापने के लिए जलाई हुई आग
शीतलहरी – बहुत तीखी सरदी की लहर
कुंदा – लकड़ी का ठूँठ (मोटा टुकड़ा)
नित्य कर्म – शौच, स्नान, आदि रोज़ किए जाने वाले काम
चौपाल – गाँव के लोगों के लिए बैठने का खुला स्थान
स्मृति – याद

मानव चोला	–	मनुष्य का शरीर
आविष्कृत किया	–	खोजा
सद्गृहस्थ	–	अच्छा गृहस्थी, अच्छे परिवार वाला
कृत्य	–	काम
अरणि-मंथन	–	आग के लिए दो सूखी (अरणी) लकड़ियों को रगड़ना
प्रज्वलित रहना	–	जलते रहना
चुनौतियाँ	–	ललकार
कंचन	–	सोना
कुंदन	–	तपाकर शुद्ध किया हुआ सोना
विचारणीय	–	विचार के योग्य
दृष्टि पथ से	–	नज़र से
अनियंत्रित	–	जिसे वश में न रखा जा सके
तादाद	–	संख्या, मात्रा
काम्य	–	चाहा हुआ, अभीष्ट
दहकना	–	तेजी से जलना
सुलगना	–	धीरे-धीरे जलना, आग पकड़ लेना
मेधा	–	बुद्धि
लोक कल्याणकारी / लोकानुग्राही	–	लोगों का भला करने वाला
विग्रह	–	स्वरूप
नेह-छोह	–	प्रेम-प्यार
पाश	–	बंधन
समाधान	–	हल
पाँव पसारना	–	पैर फैलाना
शहराना	–	शहर का हो जाना, शहरी ढंग से प्रभावित होना
आभिजात्य	–	उच्च कुल में उत्पन्न, कुलीनता
सिमटना	–	सिकुड़ना
आयातित	–	बाहर से मँगाया हुआ
चरम मानक	–	अंतिम पैमाना

दुमुँहापन	–	अवसरवादिता, कभी कुछ कभी कुछ कहना
इर्द-गिर्द	–	आस-पास
सहेजना	–	सँजोकर रखना
संततियाँ	–	संतानें
पकना	–	पुष्ट होना, प्रौढ़ होना, परिपक्व होना
दायित्व	–	ज़िम्मेदारी, भार
ठिठुरना	–	ठंड से काँपना
पाँच तत्त्व	–	क्षिति (पृथ्वी), जल, पावक (आग), गगन (आकाश), समीर (हवा)। यह माना जाता है कि इन्हीं पाँच तत्त्वों से मनुष्य का शरीर बना है।
अग्नि परीक्षा	–	आग में तपाकर परखना, स्वयं को निर्दोष सिद्ध करने के लिए आग पर चलकर या जलता अंगार आदि हाथ में लेकर प्रमाण देना।
आग लगाना	–	आग से जलाना, फूट डालना, ईर्ष्या या क्रोध भड़काना
हाथ सेंकना	–	लाभ उठाना, तमाशा देखना
सेइय उर आगी	–	आग सामने की ओर से तापी जानी चाहिए
अरणि-मंथन करना	–	(यज्ञ के लिए) आग जलाने के लिए सूखी (अरणी) लकड़ियों को रगड़कर आग पैदा करना

3. काका कालेलकर

(1885–1982)

काका कालेलकर का जन्म महाराष्ट्र के सतारा नगर में हुआ। उनकी मातृभाषा मराठी थी, लेकिन वे 'राष्ट्रभाषा प्रचार' कार्य में गांधी जी के साथ जुड़े रहे। उस समय 'हिंदी' के लिए ही 'राष्ट्रभाषा' शब्द का प्रयोग होता था। उन्हें हिंदी, गुजराती और बँगला भाषाओं का भी अच्छा ज्ञान था। वे कई वर्षों तक साहित्य अकादमी में गुजराती भाषा के प्रतिनिधि रहे।

काका कालेलकर की लगभग तीस पुस्तकें प्रकाशित हैं जिनमें अधिकांश भारतीय भाषाओं में अनूदित हैं। उनकी कुछ प्रमुख कृतियाँ हैं – ***हिमालयनो प्रवास, लोकमाता (यात्रा विवरण), स्मरण-यात्रा, धर्मोदय (आत्मचरित), जीवननो आनंद, अवरनावर (निबंध-संग्रह)****।*

काका कालेलकर उच्चकोटि के विद्‌वान और विचारक थे। उनका योगदान हिंदी भाषा के प्रचार तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने हिंदी साहित्य को भी समृद्‌ध किया है। काका साहब घुमक्कड़ प्रवृत्ति के थे। उन्होंने देश-विदेश का भ्रमण किया और वहाँ की समस्याओं, रहन-सहन तथा जीवन से संबंधित विशेषताओं का अपनी पुस्तकों में बड़ा सजीव वर्णन किया है। उन्होंने हिंदी में यात्रा-साहित्य की कमी को पूरा किया। सरल और ओजस्वी भाषा में विचारपूर्ण निबंध और विभिन्न विषयों की तर्कपूर्ण व्याख्या उनकी लेखन-शैली की विशेषता है। उनकी दृष्टि बड़ी सूक्ष्म है, उनकी भाषा शैली सजीव और

प्रभावशाली है। उनके चिंतनप्रधान निबंधों में भी भावात्मकता के सहज दर्शन होते हैं।

*प्रस्तुत यात्रा-वृत्तांत **नेफ़ा की यात्रा** में भारत के उत्तर-पूर्व क्षेत्र के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ-साथ सामाजिक-सांस्कृतिक विकास की ओर भी संकेत किया गया है। वहाँ के निवासियों के सम्मुख प्राकृतिक आपदाओं के कारण आने वाली कठिनाइयों का वर्णन किया गया है। बार-बार भूचाल और बाढ़ से इस क्षेत्र में भौगोलिक अस्थिरता बनी रहती है, जिसके कारण यहाँ के निवासियों को विवश होकर सौंदर्यमयी प्रकृति के साथ संघर्ष का रास्ता अपनाना पड़ता है। इस प्रदेश के लोगों का विश्वकर्मा की उपासना में रत रहना इस बात का प्रमाण है कि हमारी संस्कृति में मति से अधिक कृति को प्रधानता दी गई है। कृति ही कर्म और संस्कृति का पर्याय है। लेखक का संदेश है कि हम कर्मशील बनें, हमारी कारीगरी बढ़े, तभी हमारा भाग्योदय होगा।*

नेफ़ा की यात्रा

मैं नेफ़ा हो आया। तेजपुर से बोमडी-ला, और वहाँ से लाँघकर तवांग तक हो आया।

नेफ़ा कोई पुराना या नया नाम नहीं है। जिस तरह पंजाब का नाम पेप्सु (पटियाला एंड ईस्ट पंजाब स्टेट्स यूनियन) प्रचलित हुआ, उसी तरह असम के उत्तर की ओर नेफ़ा नाम प्रचलित हुआ। 'नार्थ-ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी' (North-East Frontier Agency) ऐसे लंबे-चौड़े अंग्रेज़ी नाम के आद्यक्षर लेकर नेफ़ा (NEFA) नाम बना है। सच तो यह है कि यह ईशान प्रदेश है। किसी ने इसे 'उर्वशी' नाम दिया है। कई साल पहले मैंने नेफ़ा के सुदूर पूर्व भाग में यात्रा की थी। तब मैंने इसे 'परशुराम क्षेत्र' के तौर पर पहचाना था।

मुंबई की ओर सह्याद्रि का पहाड़ और समुद्र के बीच जो भूमि भाग है, उसे 'परशुराम क्षेत्र' कहते हैं। ब्राह्मण परशुराम ने क्षत्रिय रूप धारण कर भारत के क्षत्रियों के साथ कई बार युद्ध किया था। वे फरसा (परशु) लेकर लड़ते थे इसलिए उनका नाम हुआ परशुराम। कहते हैं, परशुराम के हाथ से फरसा चिपक गया था। छूटता नहीं था। जब ब्रह्मपुत्र और लोहित नदों का दर्शन करके परशुराम ने ब्रह्मकुंड जाकर उसमें स्नान किया तब उनके हाथ का फरसा छूट गया। उनका आवेश उतर गया। उनका कार्य पूरा हुआ।

उसके बाद मैं वहाँ से लौटकर सदिया, पासीघाट और निज़ामघाट तक गया। वहाँ के मीरी, डफला आदि आदिम जाति

लोगों की झोंपड़ियों में जाकर मैंने उनका जीवनक्रम देखा था। रूई से वे लोग अच्छे गलीचे (कालीन) तैयार करते हैं, उनमें से एक-दो बढ़िया कालीन मैंने खरीद लिए थे। सारा क्षेत्र जंगल से भरा हुआ सुंदर है। पासीघाट के पास दिहंग नदी बहती है और निज़ामघाट के पास दिबंग।

मैं इस प्रदेश में घूमा था, इसके बाद वहाँ पर बड़ा भूचाल आया। सदिया शहर सारा का सारा नष्ट हुआ और पौराणिक काल से जिसका माहात्म्य था, वह ब्रह्मकुंड अथवा परशुराम कुंड भी टूट गया। सदिया के इर्द-गिर्द अनेक नदियों के संगम हैं लेकिन वहाँ की भूमि अभी स्थिर नहीं हुई है। भूचाल और नदी की बाढ़ बार-बार सारे प्रदेश की शक्ल बदल देती है। और एक दफ़े असम गया था, तब श्री जयराम रामदास दौलतराम असम के राज्यपाल थे। उन दिनों नेफ़ा में जो गड़बड़ी चल रही थी, उसकी सब बातें बड़े नक्शे के ज़रिए समझ ली थीं। भूचाल और बाढ़ के साथ गड़बड़ी के कारण ही उस प्रदेश में कुछ अस्थिरता रहती है। लेकिन मेरा खयाल है, उस प्रदेश के लोग यूँ तो शांति से रहना चाहते हैं, जब गलतफ़हमी होती है तब बिगड़ बैठते हैं। उन्हें तो कुदरत के साथ अखंड लड़ना ही पड़ता है। उनका आधुनिक जगत की सुविधाओं से परिचय कम है। मेरे मन में तो उसी समय विचार आया था कि जिनको पहाड़ी जीवन की आदत है, ऐसे हमारे लोग अगर नेफ़ा में जाकर रहें और वहाँ के लोगों की सेवा करें, तो बहुत जल्दी वह सारा प्रदेश सुधर जाएगा। पहाड़ी झरनों से चाहे जितनी बिजली पैदा हो सकती है। जंगलों की वनस्पति संपत्ति असीमित है। पहाड़ी रास्तों के साथ टेलीफ़ोन का प्रबंध हो जाए और वहाँ के नवयुवकों को इंजीनियरिंग की शिक्षा दी जाए तो भारत में स्कॉटलैंड की शोभा और समृद्धि हम खड़ी कर सकेंगे। कुदरत ने देने में कंजूसी नहीं की है, लेकिन हमारी शक्ति ही कम है।

अबकी बार जब हम नेफ़ा गए, तब बहुत बरसों के बाद असम के दर्शन हो रहे थे। हम दिल्ली से गुवाहाटी पहुँचे। हवाई जहाज़ के अड्डे से मोटर में बैठकर जाते हुए मन में दो ही कुतूहल थे। एक था गुवाहाटी यूनिवर्सिटी के मकानात देखने का, क्योंकि असम राज्य के सबसे पहले मुख्यमंत्री गोपीनाथ बरदलै ने मुझे उसकी सेवा के लिए बुलाया था। उनका बहुत आग्रह होने पर भी मैंने इनकार किया था, यह कहकर कि गुवाहाटी यूनिवर्सिटी का पहला वाइसचांसलर असम का ही व्यक्ति होना चाहिए।

मेरा दूसरा कुतूहल था ब्रह्मपुत्र नद के ऊपर नया बना हुआ पुल देखने का। ब्रह्मपुत्र को मैं माता कहने को तैयार नहीं था। वह नदी नहीं, नद है। ब्रह्मपुत्र के लंबे-चौड़े विस्तार में एक ही पुल है, जो जवाहरलाल जी ने खोला था। आज तक आमीन गाँव से पांडु तक यात्रियों को स्टीमर में बैठकर ही जाना पड़ता था। अब दिल्ली का यात्री ट्रेन से नीचे उतरे बिना सारे असम प्रांत में जहाँ जाना चाहे, वहाँ जा सकता है। इस नए विशाल पुल का लश्करी महत्त्व भी कम नहीं है। मैं जब कभी असम प्रांत में गया हूँ, ब्रह्मपुत्र के इस बाजू ही ज़्यादा घूमा हूँ। जैसा एक दफ़े ब्रह्मपुत्र लाँघकर सदिया के पास उस पार गया था, उसी तरह तेजपुर जाने के लिए सिर्फ़ दो बार ही ब्रह्मपुत्र नद लाँघा था।

अबकी बार हम पुल की मदद से उस पार होकर तेजपुर जा रहे थे। रास्ते में धान के खेतों की शोभा दूर तक फ़ैली हुई थी और स्वच्छ आकाश में तारे भी अच्छी तरह से फैले थे। हम जब तेजपुर पहुँचे, रात के आठ हो गए थे। सुदूर पूर्व के इस प्रदेश में सूर्योदय भी जल्दी होता है और सूर्यास्त भी उतना ही जल्दी होता है।

यहाँ जब पहले आया था, तब भगवान श्रीकृष्ण के समय का बाणासुर का महल हम देखने गए थे। एक बड़ी टेकरी पर

बड़े-बड़े पत्थर इधर-उधर गिरे थे। तेजपुर का पुराना नाम शोणितपुर है। यहाँ की भाषा में शोणित याने रक्त को तेज कहते हैं, इसलिए शोणितपुर का तेजपुर हो गया होगा।

तेजपुर ब्रह्मपुत्र के किनारे बसा हुआ सुंदर शहर है। काफ़ी ऊँचाई पर होने के कारण ब्रह्मपुत्र में चाहे जितनी बाढ़ आए, उसका पानी तेजपुर में प्रवेश नहीं कर सकता। डिब्रूगढ़ और गुवाहाटी चाहे पानी में डूब जाएँ, तेजपुर सुरक्षित ही रहेगा।

अबकी बार हमें बीवी अमतुस्सलाम के आश्रम में ठहरना था। आश्रम नद के किनारे पर ही है। यहाँ से ब्रह्मपुत्र का विस्तार दूर तक दीख पड़ता है और उसमें छोटे-छोटे टापू पानी की शोभा में वृद्धि करते हैं। ये टापू हर साल अपना स्थल बदलते हैं, इसलिए किश्ती वालों को ढूँढ़-ढूँढ़ कर अपना रास्ता तय करना पड़ता है। तेजपुर से किश्ती में बैठकर लोग सीलघाट पहुँचते हैं, वहाँ से नवगाँव जाते हैं। अब तो थोड़े ही दिनों में लोग हवाई जहाज़ की मदद से असम में जहाँ चाहे वहाँ जा सकेंगे।

तेजपुर पहुँचे तो वहाँ पर भगवान विश्वकर्मा का उत्सव घर-घर मनाया जा रहा था। विश्वकर्मा कारीगरों के देवता हैं। तरह-तरह के औज़ार लेकर मिट्टी, लकड़ी, ताँबा, सोना, लोहा इत्यादि पदार्थों पर काम करके मनुष्य के लिए झोंपड़ी, घर, शाला, प्रासाद आदि बस्ती की सहूलियतें और कौशल बढ़ाने में मदद करने वाले, तरह-तरह के औज़ार बनाने वाले कुम्हार, राज बढ़ई, लोहार, सुनार आदि कारीगरों का देव है। संस्कृत में विश्वकर्मा-माहात्म्य के नाम के ग्रंथ भी पाए जाते हैं। इसी वैदिक देव ने इंद्र के लिए वज्र बनाया, विष्णु के लिए सुदर्शन, शंकर के लिए त्रिशूल। इसी ने श्रीकृष्ण के लिए द्वारिका बसाई और वृंदावन भी तैयार कर दिया, त्रिपुरासुर के नाश के लिए इंद्र का रथ बनाया। दधीचि की हड्डियों का वज्र बनाया। विश्वकर्मा ने

यज्ञ के समय ब्रह्मदेव का मुंडन भी किया। इसलिए यह नाइयों का भी देव है। उसने माली, कसेरा, दर्जी, संगतराश, छीपी जैसे अनेक कारीगर तैयार किए। विश्वकर्मा के नाम घर बनाने का एक शास्त्र भी मौजूद है।

मनुष्य की शक्तियाँ दो हैं। एक, सोचना और दूसरी, काम करना। मनुष्य जो कुछ भी सोचता है, उसे अमल में लाए बिना उसे संतोष नहीं होता। सोचने के लिए उसे मन मिला और काम करने के लिए करण यानी इंद्रियाँ मिली। इसीलिए मन को कहा है, अंदरूनी इंद्रिय अथवा अंदरूनी औज़ार-अंतःकरण। उसके सब औज़ार करण ही है।

जब तक हम लोग इस विश्वकर्मा की प्रत्यक्ष रूप से उपासना करते रहे तब तक हमारी उन्नति हुई, संस्कृति में हम आगे बढ़े। संस्कृति में मति से भी कृति को अधिक प्रधानता दी है। यह सब बताता है कि हमें सामर्थ्य और संस्कृति बनाने के लिए विश्वकर्मा की ही उपासना करनी चाहिए। हम कर्मशील बनें, हमारी कारीगरी बढ़े, तभी हमारा भाग्योदय होगा।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. असम के उत्तर की ओर के क्षेत्र का नाम 'नेफ़ा' क्यों पड़ा?
2. सह्याद्रि के पहाड़ और समुद्र के बीच के भूमि भाग को किस नाम से जाना जाता है।
3. गुवाहाटी पहुँचकर मोटर में जाते समय लेखक के मन में कौन से दो कुतूहल थे?
4. तेजपुर का पुराना नाम क्या है?
5. ब्रह्मपुत्र में बाढ़ आ जाने पर भी तेजपुर सुरक्षित क्यों रहता है?

6. विश्वकर्मा किसके देवता हैं?
7. लेखक ने मन की कौन सी दो शक्तियाँ बताई हैं?

लिखित

1. ब्रह्मकुंड को 'परशुराम कुंड' क्यों कहा जाता है?
2. नेफ़ा प्रदेश के सुधार के लिए क्या-क्या किया जा सकता है?
3. तेजपुर में भगवान विश्वकर्मा का उत्सव घर-घर में क्यों मनाया जाता है?
4. लेखक ने मन की दोनों शक्तियों का परस्पर क्या संबंध बताया है?
5. विश्वकर्मा की प्रत्यक्ष उपासना करने से क्या अभिप्राय है?
   (नीचे दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प के सामने सही का चिह्न (✓) लगाइए)
   (क) उनकी मूर्ति बनाकर पूजा करना
   (ख) नित्यप्रति उनका गुणगान करना
   (ग) निरंतर कर्मशील बने रहना
   (घ) मंदिर में बैठकर उनका जाप करना
6. "संस्कृति में मति से भी कृति को अधिक प्रधानता दी गई है।" – आशय स्पष्ट कीजिए।

भाषा-अध्ययन

(क) कहते हैं परशुराम के हाथ से फरसा चिपक गया था।
यह माना जाता है कि परशुराम के हाथ से फरसा चिपक गया था।
यह मान्यता है कि परशुराम के हाथ से फरसा चिपक गया था।

(ख) पहाड़ और समुद्र के बीच जो भूमि है, इसे परशुराम क्षेत्र कहते हैं।
पहाड़ और समुद्र के बीच के भूमि भाग का नाम परशुराम क्षेत्र है।
पहाड़ और समुद्र के बीच परशुराम क्षेत्र नामक भूमि भाग है।

(ग) इसीलिए मन को कहा है, अंदरुनी इंद्रिय।
इसीलिए लोगों ने मन को अंदरुनी इंद्रिय कहा है।

(घ) मनुष्य की शक्तियाँ दो हैं – एक, सोचना और दूसरी, काम करना।
मनुष्य की एक शक्ति है सोचना और दूसरी शक्ति है काम करना।

(च) मन में दो ही कुतूहल थे। एक था गुवाहटी युनिवर्सिटी देखने का....
दूसरा कुतूहल था, नया पुल देखने का।
मेरे मन में गुवाहाटी युनिवर्सिटी और नया पुल देखने का कुतूहल था।

2. (क) संधि-विग्रह कीजिए :

त्रिपुरासुर	....	बाणासुर	....
सूर्यास्त	....	उदयाचल	....
सेवाश्रम	....	प्रधानाचार्य	....

(ख) संधि कीजिए :

भाग्य	+	उदय	सूर्य	+	उदय
नव	+	उदय	मानव	+	उचित
पूर्व	+	उक्त	पुनः	+	उद्धार

3. उदाहरण के अनुसार समास का विस्तार कीजिए :

जीवनक्रम ⇒ जीवन का क्रम

त्रिपुरासुर	....	बाणासुर	....
ईश्वर पूजा	....	ब्रह्म कुंड	....
ऋण मुक्त	....	बाढ़ पीड़ित	....
सहनशक्ति	....	लेखन कौशल	....
प्रेममग्न	....	मालगोदाम	....

4. नमूने के अनुसार वाक्य बदलिए :

हमें कर्मशील बनना चाहिए।
⇒ हम कर्मशील बनें।

(क) पहला वाइस चांसलर असम का ही व्यक्ति होना चाहिए।
(ख) हमें विश्वकर्मा की उपासना करनी चाहिए।
(ग) बच्चों को मन लगाकर पढ़ना चाहिए।
(घ) तुम्हें कर्मशील बनना चाहिए।
(ङ) तुम्हें समय पर स्कूल जाना चाहिए।

5. उदाहरण के अनुसार वाक्य रचना बदलकर लिखिए :

हम लोग किश्ती में बैठे और सीलघाट पहुँचे।
⇒ हम लोग किश्ती में बैठकर सीलघाट पहुँचे।

(क) मैं दिल्ली से लौटी और जयपुर गई।
(ख) मैंने काम पूरा किया और घर लौटा।
(ग) हम बाज़ार गए और फल खरीदे।
(घ) अच्छी तरह सोचो फिर निर्णय करो।

6. रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :

(जगह-जगह, दूर-दूर तक, लंबे-चौड़े, अपने-अपने, इर्द-गिर्द)

(क) सदिया के .... अनेक नदियों के संगम हैं।
(ख) तेजपुर में .... काम करने वाले हमारे कार्यकर्ता इकट्ठा होते हैं।
(ग) सब लोग .... काम में लगे रहते हैं।
(घ) ब्रह्मपुत्र के .... विस्तार में एक ही पुल है।
(ङ) रास्ते में धान के खेतों की शोभा .... फैली हुई है।

7. वाक्य शुद्ध कीजिए :

(क) मैंने इन प्रदेशों में बहुत घूमा था।
(ख) पहाड़ी रास्तों के मार्ग से हम आगे बढ़ा।
(ग) हमें विश्वकर्मा की उपासना करना चाहिए।
(घ) पढ़ाई में अच्छी तरह ध्यान दो।
(ङ) मनुष्य के शक्तियां दो हैं।

योग्यता-विस्तार

1. अपनी किसी यात्रा के रोचक अनुभव कक्षा में सुनाइए।
2. अपने राज्य के प्रमुख दर्शनीय स्थानों की सूची बनाइए और उनका संक्षिप्त परिचय लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

ला – दर्रा, दो पहाड़ों के बीच से जाने वाला तंग रास्ता बोमडी ला, से-ला दर्रों के नाम हैं

लाँघकर	–	पार करके
आद्यक्षर	–	नाम के आरंभ का अक्षर
आवेश	–	क्रोध, गुस्सा
ईशान (प्रदेश)	–	उत्तर-पूर्व (प्रदेश)
भूचाल	–	भूकंप
माहात्म्य	–	महत्त्व
एक दफ़ा	–	एक बार
शक्ल	–	आकार, सूरत
के ज़रिए	–	के द्वारा
इर्द-गिर्द	–	आसपास
गलतफ़हमी	–	भ्रम, किसी बात को गलत समझना
कुदरत	–	प्रकृति
अखंड	–	निरंतर, लगातार, एक, बिना टूटा हुआ
असीम	–	सीमा रहित, अत्यधिक
समृद्धि	–	धन-दौलत
कंजूसी	–	कृपणता, पैसा होते हुए भी खर्च न करना
कुतूहल	–	तीव्र इच्छा, आश्चर्य
आग्रह करना	–	अनुरोध, ज़ोर देकर कहना
लश्करी महत्त्व	–	सैन्य महत्त्व, सेना की दृष्टि से उपयोगिता
बाजू	–	बगल, पार्श्वभाग
किश्ती	–	नाव
सहूलियत	–	सुविधा
कौशल	–	महारत, निपुणता
कारीगर	–	दस्तकार, हाथ का काम करने वाला
कसेरा	–	काँसे के बरतन बनाने, बेचने वाला
संगतराश	–	पत्थर काटने वाला
छीपी	–	छापे का काम करने वाला
मौजूद	–	विद्यमान, उपस्थित
अमल में लाना	–	प्रयोग करना, व्यवहार में लाना
अंदरूनी	–	भीतरी
करण	–	औज़ार, इंद्रिय

अंतःकरण	–	भीतरी इंद्रिय (मन, बुद्धि आदि)
उपासना	–	पूजा, आराधना
मति	–	बुद्धि, विचार
कृति	–	बनाई हुई वस्तु, रचना
सामर्थ्य	–	बल, क्षमता, ताकत
सूर्योदय जल्दी होता है और सूर्यास्त भी	–	पृथ्वी के पश्चिम से पूर्व की ओर घूमने के कारण पूर्व में स्थित भागों में सूर्योदय पहले होता है। नेफ़ा भारत के पूर्व में है, अतः भारत के मानक समय की अपेक्षा यहाँ का स्थानीय समय आगे रहता है। सूर्योदय और सूर्यास्त जल्दी होते हैं।
विस्तार	–	फैलाव
शोभा में वृद्धि करना	–	सुंदरता बढ़ाना

4. हज़रत ख्वाजा हसन निज़ामी

(1878–1955)

हज़रत ख्वाजा हसन निज़ामी का जन्म प्रसिद्ध सूफ़ी शमासुल उल्मा ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के घराने में दिल्ली में हुआ। उन्होंने अनेक हिंदू तीर्थ स्थलों की पैदल यात्रा की और वेदांत का गहन अध्ययन किया। राष्ट्रीय भावना के कारण ख्वाजा साहब की अनेक रचनाओं को ब्रिटिश सरकार ने ज़ब्त कर लिया। उन्होंने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन और प्रकाशन किया।

ख्वाजा जी ने ***श्री राम, श्री कृष्ण, हज़रत ईसा*** *एवं* ***पैगंबर हज़रत मुहम्मद*** *की जीवनियाँ लिखी। उनकी कृष्ण गीता पुस्तक बहुत प्रसिद्ध है। उन्होंने कुरानशरीफ़ का हिंदी में अनुवाद किया, गीता के मूल संदेश उर्दू में लिखे।*

ख्वाजा साहब प्रतिभा संपन्न साहित्यकार थे। उन्होंने अपनी रचनाओं में यह दिखाने का प्रयत्न किया कि सभी धर्मों की मूलभूत शिक्षा एवं सिद्धांत एक समान हैं और सभी पारस्परिक प्रेम और सौहार्द का संदेश देते हैं। विषय की दृष्टि से उनकी रचनाओं में बहुत विविधता है। अपनी सरल और मर्मस्पर्शी भाषा एवं रुचिकर शैली के कारण जनता में वे बहुत लोकप्रिय हुए।

पस्तुत हास्य-व्यंग्यात्मक निबंध ***मच्छर*** *में लेखक ने मच्छर के गुण-दोषों का बहुत ही सटीक और व्यंग्यात्मक शैली में वर्णन किया है। व्यंग्य के साथ-साथ उस में हास्य का भी पुट है। एक ओर मच्छर मनुष्य को चुनौती देता है तो दूसरी ओर मनुष्य उसे नष्ट करने की योजना बनाता रहता है किंतु उसमें सफल नहीं होता।*

मच्छर अपने काम को बहुत चतुराई से करता है और अपने काम को उचित ठहराते हुए कहता है कि सोने में समय नष्ट मत करो, जागो और समय का सदुपयोग करो।

मच्छर

यह भुनभुनाता हुआ नन्हा-सा परिंदा आपको बहुत सताता है। रात की नींद हराम कर दी है। हिंदू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी सब समान रूप से इससे नाराज़ हैं। हर रोज़ इसके मुकाबले के लिए लड़ाई की तैयारी होती है, जंग के नक्शे बनाए जाते हैं। मगर मच्छरों के 'जनरल' के सामने किसी की नहीं चलती। शिकस्त पर शिकस्त हुई चली जाती है और मच्छरों की सेना बढ़ी चली जाती है।

इतने बड़े डीलडौल का इनसान ज़रा से भुनगे पर काबू नहीं पा सकता। तरह-तरह के मसाले भी बनाता है कि उनकी 'बू' से मच्छर भाग जाएँ। लेकिन मच्छर हमले से बाज़ नहीं आते। आते हैं और नारे लगाते हुए आते हैं। बेचारा आदमज़ाद हैरान रह जाता है और किसी तरह उनका मुकाबला नहीं कर सकता।

अमीर-गरीब, अदना-आला, बच्चे-बूढ़े, औरत-मर्द कोई उसके वार से बचा नहीं। यहाँ तक कि आदमी के पास रहने वाले जानवरों को भी उनसे तकलीफ़ है। मच्छर जानता है कि दुश्मन के दोस्त भी दुश्मन होते हैं। इन जानवरों ने मेरे दुश्मन की खिदमत की है तो मैं उनको भी मज़ा चखाऊँगा।

आदमियों ने मच्छरों के खिलाफ़ 'एजीटेशन' करने में कोई कसर नहीं उठा रखी। हर आदमी अपनी समझ और अक्ल के मुआफ़िक मच्छरों पर इल्ज़ाम रखकर लोगों में उनके खिलाफ़ जोश पैदा करना चाहता है। मगर मच्छर उसकी कुछ परवाह नहीं करता।

ताऊन (प्लेग) ने गड़बड़ मचाई तो इनसान ने कहा कि ताऊन मच्छर और पिस्सू के ज़रिए से फैलता है। इनको खत्म कर दिया जाए तो यह खतरनाक बीमारी दूर हो जाएगी। मलेरिया फैला तो उसका इल्ज़ाम भी मच्छर पर लागू हुआ। इस सिरे से उस सिरे तक काले-गोरे आदमी शोर मचाने लगे कि मच्छरों को मिटा दो, मच्छरों को कुचल डालो, मच्छरों को तहस-नहस कर दो और ऐसी कोशिश करो जिससे मच्छरों की नस्ल ही समाप्त हो जाए।

इनसान कहता है कि मच्छर बड़ा कमज़ात है। कूड़े-करकट, मैल-कुचैल से पैदा होता है और गंदी मोरियों में ज़िंदगी बसर करता है और बुज़दिली तो देखो, उस वक्त हमला करता है जब कि हम सो जाते हैं। सोते पर वार करना, बेखबर को डंक मारना मर्दानगी नहीं इंतहा दर्जे की कमीनगी है। सूरत तो देखो, काला-भूतना, लंबे-लंबे पाँव, बेडौल चेहरा। इस शान-शौकत वाले और गोरे-चिट्टे मिलनसार आदमी से दुश्मनी बेअक्ली और जहालत ही तो है।

मच्छर की सुनो तो वह आदमी को खरी-खरी सुनाता है और कहता है कि जनाब हिम्मत है तो मुकाबला कीजिए। जात, गुण न देखिए। मैं काला सही, बदरौनक सही, नीच और कमीना सही, मगर यह तो कहिए कि किस दिलेरी से आप का मुकाबला करता हूँ और क्योंकर आपकी नाक में दम करता हूँ।

यह इल्ज़ाम सरासर गलत है कि बेखबरी में आता हूँ और सोते में सताता ू। यह तो तुम अपनी आदत के मुआफिक सरासर नाइंसाफ़ी करते हो। हज़रत! मैं तो पहले कान में आकर 'अल्टीमेटम' देता हूँ कि होशियार हो जाओ। अब हमला होता है। तुम्हीं गाफ़िल रहो तो मेरा क्या कसूर! ज़माना खुद फ़ैसला कर

देगा कि मैदाने-जंग में काला भूतना, लंबे-लंबे पाँव वाला बेडौल फ़तेहयाब होता है या गोरा-चिट्टा आन-बान वाला।

मेरे कारनामों की शायद तुमको खबर नहीं कि मैंने दुनिया पर क्या-क्या जौहर दिखाए हैं। अपने भाई नमरूद का किस्सा भूल गए जो खुदाई का दावा करता था और अपने सामने किसी की हकीकत न समझता था। किसने उसका गरूर तोड़ा, कौन उस पर हावी हुआ, किसके कारण उसकी खुदाई खाक में मिली? अगर आप न जानते हों तो अपने ही किसी भाई से दरयाफ़्त कीजिए या मुझसे सुनिए कि मेरे ही एक भाई मच्छर ने उस सरकश का खातमा किया था। और तुम हो, नाहक बिगड़ते हो। खामखाह अपना दुश्मन बना लेते हो। मैं तुम्हारा मुखालिफ़ नहीं हूँ। अगर तुमको यकीन न आए तो अपने किसी शब्बेदार सूफ़ी भाई से दरयाफ़्त कर लो। देखो वह मेरी शान में क्या कहेगा। कल एक शाह साहब प्रार्थना के वक्त अपने एक शिष्य से फ़रमा रहे थे कि मैं मच्छर की ज़िंदगी को दिल से पसंद करता हूँ। दिन भर बेचारा इबादतखानों में रहता है। रात को जो खुदा की याद का वक्त है, बाहर निकलता है और फिर तमाम रात तस्बीह के पाक तराने गाया करता है। आदमी गफ़लत में पड़े सोते हैं तो उसको उन पर गुस्सा आता है। चाहता है कि यह भी सचेत होकर अपने मालिक के दिए हुए इस सुहाने खामोश वक्त की कदर करें और खुदा की तारीफ़ के गीत गाएं। इसलिए पहले उनके कान में जाकर कहता है, "उठो मियाँ उठो, जागो, जागने का वक्त है। सोने का और हमेशा सोने का वक्त अभी नहीं आया। जब आएगा तो बेफ़िक्र होकर सोना। अब तो होशियार रहने और कुछ काम करने का मौका है।" मगर इनसान इस सुरीली नसीहत की परवाह नहीं करता और सोता रहता है तो मच्छर मजबूर होकर गुस्से में आ जाता है और उसके चेहरे और

हाथ-पाँव पर डंक मारता है। पर वाह रे इनसान, आँखें बंद किए हुए हाथ पाँव मारता है और बेहोशी में बदन को खुजाकर फिर सो जाता है। और जब सुबह उठता है तो बेचारे मच्छर को बुरा-भला कहता है कि रात-भर सोने नहीं दिया। कोई इस झूठे आदमी से पूछे कि जनाबेआली! कितने सेकेंड जागे थे जो सारी रात जागते रहने का शिकवा हो रहा है।

शाह साहब की ज़बान से ज्ञान की बातें सुनकर मेरे दिल को भी तसल्ली हुई कि गनीमत है कि इन आदमियों में भी इंसाफ़ वाले मौजूद हैं। बल्कि मैं दिल में शरमाया कि कभी-कभी ऐसा हो जाता है कि शाह साहब आसन पर बैठे नमाज़ पढ़ा करते हैं और मैं उनके पैरों का खून पिया करता हूँ, यह तो मेरी निस्बत, ऐसी अच्छी और नेक राय दें और मैं उनको तकलीफ़ दूँ। यद्यपि दिल ने यह समझाया कि तू काटता थोड़े ही है,कदम चूमता है और उन बुजुर्गों के कदम चूमने ही के काबिल होते हैं। लेकिन असल यह है कि उससे मेरी शर्मिंदगी दूर नहीं होती और अब तक मेरे दिल में उसका अफ़सोस बाकी है।

अगर सब इनसान ऐसा तरीका इख्तियार कर लें जैसा कि सूफ़ी साहब ने किया तो यकीन है कि हमारी कौम इनसान को सताने से खुद-ब-खुद बाज़ आ जाएगी, वरना याद रहे कि मेरा नाम मच्छर है, लुत्फ़ से जीने न दूँगा।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. लेखक के अनुसार मच्छर जानवरों को क्यों काटता है?
2. मच्छर के काटने से क्या-क्या बीमारियाँ होती हैं?

3. मच्छर सोए हुए लोगों के कान में क्या कहता है?
4. मच्छर ने आदमी को झूठा क्यों कहा है?

लिखित

1. मनुष्य ने मच्छर पर काबू पाने के लिए क्या-क्या उपाय किए हैं?
2. लेखक ने मनुष्य से मच्छर की दुश्मनी को बेवकूफ़ी क्यों कहा है?
3. मच्छर अपने प्रति लगाए गए इल्ज़ाम को किस तरह ग़लत साबित कर रहा है?
4. नमरूद के किस्से द्वारा मच्छर ने अपने किस जौहर की ओर संकेत किया है?
5. मच्छर ने आदमी के किस स्वभाव पर व्यंग्य किया है?
6. मच्छर ने मनुष्य को क्या चुनौती दी है?
7. आशय स्पष्ट कीजिए –
   - सोते पर वार करना, बेखबर को डंक मारना मर्दानगी नहीं, इंतहा दर्जे की कमीनगी है।
   - गनीमत है कि इन आदमियों में भी इंसाफ़ वाले मौजूद हैं।

भाषा-अध्ययन

1. **पढ़िए और समझिए :**

(क) मच्छरों के सामने किसी की नहीं चलती।
मच्छरों से बचने का कोई रास्ता–तरीका नहीं है।

(ख) औरत-मर्द कोई उसके वार से बचे नहीं। यहाँ तक कि जानवरों को भी उनसे तकलीफ़ है।
मच्छर औरत-मर्द सभी को काटते हैं। यही नहीं–इतना ही नहीं वे जानवरों को भी परेशान करते हैं।

(ग) तुम्हीं गाफ़िल रहो तो मेरा क्या कसूर?
तुम खुद तो असावधान हो, मेरी चेतावनी नहीं समझते हो तो मैं तुम्हें काटूँगा ही, इसमें मेरा क्या दोष?

(घ) और तुम हो, नाहक बिगड़ते हो।
मैंने अत्याचारी नमरूद को काटा तो वह मर गया। इसकी तारीफ़ करना तो दूर, तुम मुझे दोष दे रहे हो।

(ङ) गनीमत है कि तुम आ गए।
यह बहुत अच्छा हुआ कि तुम आ गए।

2. **समानार्थी शब्द लिखिए :**

अमीर	....	इंसाफ़	....
जंग	....	मुकाबला	....
अक्ल	....	कोशिश	....
वक्त	....	मेहनत	....

3. **उदाहरण के अनुसार वाक्य रचना बदलकर लिखिए :**

सरकार योजनाएँ बनाती है।
योजनाएँ बनती हैं।
⇒ योजनाएँ बनाई जाती हैं।

(क) माँ ने दीवाली में बहुत-सी मिठाइयाँ बनाईं।
(ख) ड्राइवर बस तेज़ी से चला रहा है।
(ग) शीला ने मेज़ पर खाना लगाया।
(घ) मालिक ने नौकर को घर से निकाल दिया।
(ङ) मोहन ने राम को नीचे गिरा दिया।

4. **उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :**

यह चिट्ठी भेज दूँ?
⇒ यह चिट्ठी भेज दी जाए?

(क) कपड़े अलमारी में रख दूँ?
(ख) खाना लगा दें?
(ग) पार्टी में राम और रतन को भी बुला लें?
(घ) हम पाठ शुरू करें?

5. **उदाहरण के अनुसार सार्थक ढंग से वाक्य पूरे कीजिए :**

मैं नहीं जाऊँगा और तुम्हें.............
⇒ मैं नहीं जाऊँगा और तुम्हें भी जाने नहीं दूँगा।

(क) हम नहीं पढ़ेंगे और ....
(ख) वह खुद भी काम नहीं करता ....
और दूसरों को

(ग) तुम चुपचाप किताब पढ़ो और मुझे भी ....
(घ) तुम भी नहीं खेलते हो और मुझे ....
(ङ) पिताजी खुद फ़िल्म देखने चले गए ....
लेकिन हमें

6. वाक्य शुद्ध करके लिखिए :

(क) मच्छरों ने हमारी रात की नींद हराम कर दिया है।
(ख) शीला ने मेज़ पर खाना लगाई।
(ग) आप मुझे परीक्षा में बैठने दो।
(घ) जल्दी जाओ वरना तुम्हें बस मिल जाएगी।
(ङ) मच्छर मजबूर होकर गुस्से पर आ जाता है।

योग्यता-विस्तार

मच्छर किस प्रकार पनपते हैं? उनके कारण कौन-कौन से रोग उत्पन्न होते हैं तथा उनका इलाज किस प्रकार किया जा सकता है, इस विषय में जानकारी प्राप्त कीजिए और कक्षा में चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

परिंदा	–	परों (पंखों) वाला
नींद हराम करना	–	बहुत परेशान करना, नींद न आने देना
शिकस्त	–	हार
भुनगा	–	उड़ने वाला छोटा कीड़ा
काबू पाना	–	नियंत्रण करना
बाज़ न आना	–	चैन न पड़ना, न करना
आदमज़ाद	–	मनु की संतान, मनुष्य
अदना	–	छोटा
आला	–	बड़ा
ख़िदमत	–	सेवा
मज़ा चखाना	–	बदला लेना
कसर उठा न रखना		पूरा प्रयत्न करना

मुआफ़िक	–	अनुकूल
इल्ज़ाम	–	आरोप
तहस-नहस	–	नष्ट
नस्ल	–	जाति, वंश
कमज़ात	–	नीच कुल का
मोरियाँ	–	नालियाँ
बुज़दिली	–	डरपोकपन
मर्दानगी	–	पौरुष, बल
कमीनगी	–	इंतहादर्जे की नीचता, असीम नीचता
गाफ़िल	–	भूला हुआ, बेसुध
ज़हालत	–	अज्ञान
बदरौनक	–	कुरूप
दिलेरी	–	हौसला, हिम्मत
क्योंकर	–	कैसे
नाक में दम करना (मुहावरा)	–	बहुत परेशान करना
नाइंसाफ़ी	–	अन्याय
मैदाने-जंग	–	युद्ध-भूमि, लड़ाई का मैदान
अल्टीमेटम	–	चेतावनी
फ़तेहयाब	–	विजयी
कारनामा	–	करतूत
गरूर	–	श्रेष्ठता, खूबी
नमरूद	–	अरब देश का अहंकारी बादशाह जो खुदा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता था। कहते हैं कि उसकी नाक में एक मच्छर घुस गया था जो सिर तक पहुँच गया था और जिसके कारण उसकी मृत्यु बहुत कष्ट की स्थिति में हुई।
हकीकत	–	वास्तविकता

खाक – मिट्टी, राख
खुदाई – सृष्टि, संसार
दरियाफ़्त – पड़ताल, ज्ञात
सरकश – उद्दंड, विरोध करने वाला
खात्मा – समाप्ति
नाहक – व्यर्थ, बेकार
खामखाह – व्यर्थ ही
मुखलिफ़ – विरोधी
शब्बेदार – रातभर जागकर जप-तप करने वाला

फ़रमाना – कहना (आदरसूचक)
इबादत खाना – प्रार्थना का कमरा
तस्बीह – माला
तमाम रात – सारी रात
शिकवा – शिकायत
पाक – पवित्र
तराना – गीत
गफ़लत – लापरवाही
नसीहत – राय, परामर्श
कदम चूमना – गहरा आदर व्यक्त करना
तसल्ली – धैर्य
गनीमत – संतोष की बात
बुरा-भला कहना – कोसना
मेरी निस्बत – मेरे लिए
काबिल – योग्य
खुद-बखुद – अपने आप
बाज़ आना – थमना, दूर होना
लुत्फ़ – आनंद

5. प्रेमचंद

(1880–1936)

कथा सम्राट के रूप में प्रसिद्ध प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपतराय था। उनका जन्म वाराणसी के निकट लमही नामक गाँव में हुआ था। उनका पूरा जीवन अभाव और कष्टों में बीता। यही कारण है कि उनके पूरे साहित्य में अभाव और कष्ट में पड़े हुए पीड़ित जनों का दुख-दर्द व्यक्त हुआ है। प्रेमचंद की आरंभिक शिक्षा उर्दू में हुई थी। शिक्षा के साथ-साथ वे अध्यापन भी करते रहे। आगे चलकर गांधीजी के व्याख्यान से प्रभावित होकर उन्होंने सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और पूरी तरह साहित्य-साधना में जुट गए।

*प्रेमचंद ने लेखन का आरंभ उर्दू में किया था। उन्होंने से*वा**सदन** *उपन्यास हिंदी में लिखा। इसके बाद से वे निरंतर हिंदी में लिखने लगे।*

प्रेमचंद की लगभग तीन सौ कहानियाँ ***मानसरोवर*** *के आठ भागों में प्रकाशित हैं। उनके उपन्यास हैं –* ***सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि*** *और* ***गोदान****। उनका अंतिम उपन्यास* ***मंगलसूत्र*** *अपूर्ण है। इसके अतिरिक्त* ***मर्यादा***, *माधुरी,* ***जागरण*** *और* ***हंस*** *नामक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन करते हुए उन्होंने वैचारिक लेख भी लिखे।*

प्रेमचंद के साहित्य का मुख्य स्वर है समाज-सुधार। उन्होंने समाज-सुधार और राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत कई कहानियाँ और उपन्यास लिखे। प्रेमचंद बोलचाल की भाषा के पक्षधर थे। इसलिए अरबी-फारसी के प्रचलित शब्दों का भी खुलकर प्रयोग किया है। मुहावरों के प्रयोग से उनकी भाषा की सामर्थ्य बढ़ गई है।

*प्रस्तुत कहानी **भाड़े का टट्टू** में प्रेमचंद ने दो मित्रों के बहाने पैसे के लिए बिकते ईमान का वर्णन किया है। दोनों मित्रों की मित्रता की अस्थिरता का कारण स्वार्थ है। मित्रों के जीवन में आए अनेक उतार-चढावों का चित्रण करने वाली यह कहानी यह भी स्पष्ट कर देती है कि निःस्वार्थ भाव से की गई मित्रता ही स्थाई होती है।*

भाड़े का टट्टू

आगरा कॉलेज के मैदान में संध्या-समय दो युवक हाथ से हाथ मिलाए टहल रहे थे। एक का नाम यशवंत था, दूसरे का रमेश। यशंवत डीलडौल में ऊँचा और बलिष्ठ था। उसके मुख पर संयम और स्वास्थ्य की कांति झलकती थी। रमेश छोटे कद और इकहरे बदन का तेजहीन और दुर्बल आदमी था। दोनों में किसी विषय पर बहस हो रही थी।

यशवंत ने कहा – मैं आत्मा के आगे धन का कुछ मूल्य नहीं समझता।

रमेश बोला – बड़ी खुशी की बात है।

यशवंत – हाँ देख लेना। तुम ताना मार रहे हो, लेकिन मैं दिखला दूँगा कि धन को कितना तुच्छ समझता हूँ।

रमेश – खैर, दिखला देना। मैं तो धन को तुच्छ नहीं समझता। धन के लिए 15 वर्षों से किताब चाट रहा हूँ। धन के लिए माँ-बाप, भाई-बंद सबसे अलग यहाँ पड़ा हूँ, न जाने अभी कितनी सलामियाँ देनी पड़ेंगी, कितनी खुशामद करनी पड़ेगी? क्या इसमें आत्मा का पतन न होगा? मैं तो इतने ऊँचे आदर्श का पालन नहीं कर सकता। यहाँ तो अगर किसी मुकदमे में अच्छी रिश्वत पा जाएँ तो शायद छोड़ न सकें। क्या तुम छोड़ दोगे?

यशवंत – मैं उनकी ओर आँख उठाकर भी न देखूँगा और मुझे विश्वास है कि तुम जितने नीच बनते हो, उतने नहीं हो।

रमेश – मैं उससे कहीं नीच हूँ, जितना कहता हूँ।

यशवंत – मुझे तो यकीन नहीं आता कि स्वार्थ के लिए तुम किसी को नुकसान पहुँचा सकोगे?

रमेश – भाई, संसार में आदर्श का निर्वाह केवल संन्यासी ही कर सकता है; मैं तो नहीं कर सकता। मैं तो समझता हूँ कि अगर तुम्हें धक्का देकर तुमसे बाजी जीत सकूँ, तो तुम्हें ज़रूर गिरा दूँगा। और बुरा न मानो तो कह दूँ, तुम भी मुझे ज़रूर गिरा दोगे। स्वार्थ का त्याग करना कठिन है।

यशवंत – तो मैं कहूँगा कि तुम भाड़े के टट्टू हो।

रमेश – और मैं कहूँगा कि तुम काठ के उल्लू हो।

2

यशवंत और रमेश साथ-साथ स्कूल में दाखिल हुए और साथ-ही-साथ उपाधियाँ लेकर कॉलेज से निकले। यशवंत कुछ मंदबुद्धि, पर बला का मेहनती था। जिस काम को हाथ में लेता, उससे चिमट जाता और उसे पूरा करके ही छोड़ता। रमेश तेज़ था पर आलसी। घंटे-भर जमकर बैठना उसके लिए मुश्किल। एम.ए. तक तो वह आगे रहा और यशवंत पीछे, मेहनत बुद्धि-बल से परास्त होती रही; लेकिन सिविल-सर्विस में पासा पलट गया। यशवंत सब धंधे छोड़कर किताबों पर पिल पड़ा, घूमना-फिरना, सैर-सपाटा, सरकस-थिएटर, यार-दोस्त, सबसे मुँह मोड़कर अपनी एकांत कुटीर में जा बैठा। रमेश दोस्तों के साथ गपशप उड़ाता, क्रिकेट खेलता रहा। कभी-कभी मनोरंजन के तौर पर किताब देख लेता। कदाचित् उसे विश्वास था कि अबकी भी मेरी तेज़ी बाजी ले जाएगी। अक्सर जाकर यशवंत को दिक् करता। उसकी किताब बंद कर देता; कहता, क्यों प्राण दे रहे हो? सिविल-सर्विस कोई मुक्ति तो नहीं है, जिसके लिए दुनिया से नाता तोड़ लिया जाए! यहाँ तक कि यशवंत उसे आते देखता, तो किवाड़ बंद कर लेता।

आखिर परीक्षा का दिन आ पहुँचा। यशवंत ने सब-कुछ याद किया था, पर किसी प्रश्न का उत्तर सोचने लगता, तो उसे मालूम होता, उसने जितना पढ़ा था, सब भूल गया। वह बहुत घबराया हुआ था। रमेश पहले से कुछ सोचने का आदी न था। सोचता, जब परचा सामने आएगा, उस वक्त देखा जाएगा। वह आत्मविश्वास से फूला-फला फिरता था।

परीक्षा क़ा फल निकला, तो सुस्त कछुआ तेज़ खरगोश से बाजी मार ले गया था।

अब रमेश की आँखें खुलीं पर वह हताश न हुआ; योग्य आदमी के लिए यश और धन की कमी नहीं, यह उसका विश्वास था। उसने कानून की परीक्षा की तैयारी शुरू की और यद्‌यपि उसने बहुत ज्यादा मेहनत न की, लेकिन अव्वल दरजे में पास हुआ। यशवंत ने उसको बधाई का तार भेजा; अब एक जिले का अफसर हो गया था।

3

दस साल गुजर गए। यशवंत दिलोजान से काम करता था और उसके अफसर उससे बहुत प्रसन्न थे पर अफसर जितने प्रसन्न थे, मातहत उतने ही अप्रसन्न रहते थे। वह खुद जितनी मेहनत करता था, मातहतों से भी उतनी ही मेहनत लेना चाहता था, खुद जितना बेलौस था, मातहतों को भी उतना ही बेलौस बनाना चाहता था। ऐसे आदमी बड़े कारगुज़ार समझे जाते हैं। यशवंत की कारगुजारी का अफसरों पर सिक्का जमता जाता था। पाँच वर्षों में ही वह जिले का जज बना दिया गया।

रमेश इतना भाग्यशाली न था। वह जिस इज़लास में वकालत करने जाता, वहीं असफल रहता। हाकिम को नियत समय पर आने में देर हो जाती, तो खुद भी चल देता और फिर बुलाने से भी न आता। कहता – अगर हाकिम वक्त की पाबंदी नहीं करता,

तो मैं क्यों करूँ? मुझे क्या गरज पड़ी है कि घंटों उनके इज़लास पर खड़ा उनकी राह देखा करूँ? बहस इतनी निर्भीकता से करता कि खुशामद के आदी हुक्काम की निगाहों में उसकी निर्भीकता गुस्ताखी मालूम होती। सहनशीलता उसे छू नहीं गई थी। हाकिम हो या दूसरे पक्ष का वकील, जो उसके मुँह लगता, उसकी खबर लेता था। यहाँ तक कि एक बार वह जिला-जज ही से लड़ बैठा। फल यह हुआ कि उसकी सनद छीन ली गई। किंतु मुवक्किलों के हृदय में उसका सम्मान ज्यों-का-त्यों रहा।

तब उसने आगरा कॉलेज में शिक्षक का पद प्राप्त कर लिया। किंतु यहाँ भी दुर्भाग्य ने साथ न छोड़ा। प्रिंसिपल से पहले ही दिन खटपट हो गई। प्रिंसिपल का सिद्धांत यह था कि विद्यार्थियों को राजनीतिक जलसे में शरीक न होने दिया जाए। रमेश पहले ही दिन से इस आज्ञा का खुल्लमखुल्ला विरोध करने लगा। उसका कथन था कि अगर किसी को राजनीतिक जलसों में शामिल होना चाहिए, तो विद्यार्थी को। यह भी उसकी शिक्षा का अंग है। अन्य देशों में छात्रों ने युगांतर उपस्थित कर दिया है, तो इस देश में क्यों उनकी जबान बंद की जाती है। इसका फल यह हुआ कि साल खत्म होने से पहले ही रमेश को इस्तीफा देना पड़ा। किंतु विद्यार्थियों पर उसका दबाव तिल भर भी कम न हुआ।

इस भाँति कुछ तो अपने स्वभाव और कुछ परिस्थितियों ने रमेश को मार-मारकर हाकिम बना दिया। पहले मुवक्किलों का पक्ष लेकर अदालत से लड़ा, फिर छात्रों का पक्ष लेकर प्रिंसिपल से रार मोल ली और अब प्रजा का पक्ष लेकर सरकार को चुनौती दी। वह स्वभाव से ही निर्भीक, आदर्शवादी, सत्यभक्त तथा आत्माभिमानी था। ऐसे प्राणी के लिए प्रजा सेवक बनने के सिवा और उपाय ही क्या था? समाचार-पत्रों में वर्तमान परिस्थिति पर उसके लेख निकलने लगे। उसकी आलोचनाएँ इतनी स्पष्ट,

इतनी व्यापक और इतनी मार्मिक होती थीं कि शीघ्र ही उसकी कीर्ति फैल गई। लोग मान गए कि इस क्षेत्र में एक नई शक्ति का उदय हुआ है। अधिकारी लोग उसके लेख पढ़कर तिलमिला उठते थे। उसका निशाना इतन ठीक बैठता था कि उससे बच निकलना असंभव था।

देश की राजनीतिक स्थिति चिंताजनक हो रही थी। यशवंत अपने पुराने मित्र के लेखों को पढ़-पढ़कर काँप उठते थे। भय होता, कहीं वह कानून के पंजे में न आ जाए। बार-बार उसे संयत रहने की ताक़ीद करते, बार-बार मिन्नतें करते कि ज़रा अपनी कलम को और नरम कर दो, जान-बूझकर क्यों विषधर कानून के मुँह में उँगली डालते हो? लेकिन रमेश को नेतृत्व का नशा चढ़ा हुआ था। वह इन पत्रों का जवाब तक न देता था।

पाँचवें साल यशवंत बदलकर आगरे का जिला-जज हो गया।

4

देश की राजनीतिक दशा चिंताजनक हो रही थी। खुफ़िया-पुलिस ने एक तूफान खड़ा कर दिया था। उसकी कपोल-कल्पित कथाएँ सुन-सुनकर हुक्कामों की रूह फ़ेना हो रही थी। कहीं अखबारों का मुँह बंद किया जाता था, कहीं प्रजा के नेताओं का। खुफिया-पुलिस ने अपना उल्लू सीधा करने के लिए हुक्कामों के कुछ इस तरह कान भरे कि उन्हें हर एक स्वतंत्र विचार रखने वाला आदमी खूनी और कातिल नज़र आता था।

रमेश यह अँधेर देखकर चुप बैठने वाला मनुष्य न था। ज्यों-ज्यों अधिकारियों की निरंकुशता बढ़ती थी, त्यों-त्यों उसका भी जोश बढ़ता था। रोज़ कहीं न कहीं व्याख्यान देता और उसके प्रायः सभी व्याख्यान विद्रोहात्मक भावों से भरे होते थे। स्पष्ट और खरी बातें कहना ही विद्रोह है। अगर किसी का राजनीतिक

भाषण विद्रोहात्मक नहीं माना गया, तो समझ लो, उसने अपने आंतरिक भावों को गुप्त रखा है। प्रजा का नेता बनकर जेल और फाँसी से डरना क्या! जो आफ़त आनी हो, आवे। वह सब कुछ सहने को तैयार बैठा था। अधिकारियों की आँखों में भी वही सबसे ज्यादा गड़ा हुआ था।

एक दिन यशवंत ने रमेश को अपने यहाँ बुला भेजा। रमेश के जी में तो आया कि कह दे, तुम्हें आते क्या शरम आती है? आखिर हो तो गुलाम ही। लेकिन फिर कुछ सोचकर कहला भेजा, कल शाम को आऊँगा। दूसरे दिन वह ठीक छह बजे यशवंत के बँगले पर जा पहुँचा। उसने किसी से इसका ज़िक्र न किया। कुछ तो यह ख्याल था कि लोग कहेंगे, मैं अफसरों की खुशामद करता हूँ और कुछ यह कि शायद इससे यशवंत को कोई हानि पहुँचे।

वह यशवंत के बँगले पर पहुँचा तो चिराग जल चुके थे। यशवंत ने आकर उसे गले से लगा लिया। आधी रात तक दोनों मित्रों में खूब बातें होती रहीं। यशवंत ने इतने में नौकरी के जो अनुभव प्राप्त किए थे, सब बयान किए। रमेश को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि यशंवत के राजनीतिक विचार कितने विषयों में मेरे विचारों से भी ज्यादा स्वतंत्र हैं। उसका यह ख्याल बिल्कुल गलत निकला कि वह बिल्कुल बदल गया होगा, वफ़ादारी के राग अलापता होगा।

रमेश ने कहा – भले आदमी, जब इतने जले हुए हो; तो छोड़ क्यों नहीं देते नौकरी? और कुछ न सही, अपनी आत्मा की रक्षा तो कर सकोगे!

यशवंत – मेरी चिंता पीछे करना, इस समय अपनी चिंता करो। मैंने तुम्हें सावधान करने को बुलाया है। इस वक्त सरकार की नज़र में तुम बेतरह खटक रहे हो। मुझे भय है कि तुम कहीं पकड़े न जाओ।

रमेश – इसके लिए तो तैयार बैठा हूँ।

यशवंत – आखिर आग में कूदने से लाभ ही क्या?

रमेश – हानि-लाभ देखना मेरा काम नहीं। मेरा काम तो अपने कर्तव्य का पालन करना है।

यशवंत – हठी तो तुम सदा के हो, मगर मौका नाजुक है, सँभले रहना ही अच्छा है। अगर मै देखता कि जनता में वास्तविक जागृति है, तो तुमसे पहले मैदान में आता। पर जब देखता हूँ कि अपने ही मरे स्वर्ग देखना है, तो आगे कदम रखने की हिम्मत नहीं पड़ती।

दोनों दोस्तों ने देर तक बातें की। कॉलेज के दिन याद आए। सहपाठियों के लिए कॉलेज की पुरानी स्मृतियाँ, मनोरंजन और हास्य का अविरल स्रोत हुआ करती हैं। अध्यापकों पर आलोचनाएँ हुईं कौन-कौन साथी क्या कर रहा है, इसकी चर्चा हुई। बिलकुल यह मालूम होता था कि दोनों अब भी कॉलेज के छात्र हैं। गंभीरता नाम को भी न थी।

रात ज्यादा हो गई। भोजन करते-करते एक बज गया। यशवंत ने कहा – अब कहाँ जाओगे, यहीं सो रहो और बातें हों। तुम तो कभी आते भी नहीं?

रमेश तो रमते जोगी थे ही; खाना खाकर बात करते-करते सो गए। नींद खुली, तो नौ बज गए थे। यशवंत सामने खड़े मुस्करा रहे थे।

इस रात को आगरे में भयंकर डाका पड़ गया।

5

रमेश दस बजे घर पहुँचे, तो देखा, पुलिस ने उसका मकान घेर रखा है। इन्हें देखते ही एक अफ़सर ने वारंट दिखाया। तुरंत घर की तलाशी होने लगी। मालूम नहीं, क्योंकर रमेश के मेज की दराज में एक पिस्तौल निकल आया। फिर क्या था, हाथों में

हथकड़ी पड़ गई। अब किसे उनके डाके में शरीक होने से इनकार हो सकता था। और भी कितने ही आदमियों पर आफत आई। सभी प्रमुख नेता चुन लिए गए। मुकदमा चलने लगा।

औरों की बात को ईश्वर जाने, पर रमेश निरपराध था। इसका उसके पास ऐसा प्रबल प्रमाण था, जिसकी सत्यता से किसी को इनकार न हो सकता था। पर क्या वह इस प्रमाण का उपयोग कर सकता था।

रमेश ने सोचा, यशवंत स्वयं मेरे वकील द्वारा सफ़ाई के गवाहों में अपना नाम लिखाने का प्रस्ताव करेगा। मुझे निर्दोष जानते हुए वह कभी मुझे जेल न जाने देगा। वह इतना हृदय-शून्य नहीं है लेकिन दिन गुजरते जाते थे और यशवंत की ओर से इस प्रकार का कोई प्रस्ताव न होता था; और रमेश खुद संकोचवश उसका नाम लिखाते हुए डरते थे। न जाने इसमें उसे क्या बाधा हो। अपनी रक्षा के लिए वह उसे संकट में न डालना चाहते थे।

यशवंत हृदय-शून्य न थे, भाव-शून्य न थे, लेकिन कर्म-शून्य अवश्य थे। उन्हें अपने परम मित्र को निर्दोष मारे जाते देखकर दुःख होता था, कभी-कभी रो पड़ते थे; पर इतना साहस न होता था कि सफ़ाई देकर उसे छुड़ा लें। न जाने अफसरों का क्या खयाल हो! कहीं यह न समझने लगें कि मैं भी षड्यंत्रकारियों से सहानुभूति रखता हूँ, मेरा भी उनके साथ कुछ संपर्क है। यह मेरे हिंदुस्तानी होने का दंड है! जानकर ज़हर निगलना पड़ रहा है। पुलिस ने अफ़सरों पर इतना आतंक जमा दिया कि चाहे मेरी शहादत से रमेश छूट भी जाए, खुल्लमखुल्ला मुझ पर अविश्वास न किया जाए, पर दिलों से यह संदेह क्योंकर दूर होगा कि मैंने केवल एक स्वदेश-बंधु को छुड़ाने के लिए झूठी गवाही दी? और बंधु भी कौन? जिस पर राज-विद्रोह का अभियोग है!

इसी सोच-विचार में एक महीना गुजर गया। उधर मजिस्ट्रेट ने यह मुकदमा यशवंत ही के इज़लास में भेज दिया। डाके में कई खून हो गए थे। और मजिस्ट्रेट को उतनी ही कड़ी सजाएँ देने का अधिकार था जितनी उसके विचार में दी जानी चाहिए थी।

6

यशवंत अब बड़े संकट में पड़ा। उसने छुट्टी लेनी चाही; लेकिन मंजूर न हुई, सिविल सर्जन अंग्रेज था। इस वजह से उसकी सनद लेने की हिम्मत न पड़ी। बला सिर पर आ पड़ी थी और उससे बचने का उपाय न सूझता था।

भाग्य की कुटिल क्रीड़ा देखिए। साथ खेले और साथ पढ़े हुए दो मित्र एक-दूसरे के सम्मुख खड़े थे, केवल एक कठघरे के अंदर था। पर एक की जान दूसरे की मुट्ठी में थी। दोनों की आँखें कभी चार न होतीं। दोनों सिर नीचा किए रहते थे। यद्यपि यशवंत न्याय के पद पर था और रमेश मुलज़िम, लेकिन यथार्थ में दशा इसके प्रतिकूल थी। यशवंत की आत्मा लज्जा, ग्लानि और मानसिक पीड़ा से तड़पती थी और रमेश का मुख निर्दोषिता के प्रकाश से चमकता रहता था।

दोनों मित्रों में कितना अंतर था एक उदार था, दूसरा कितना स्वार्थी। रमेश चाहता तो, भरी अदालत में उस रात की बात कह देता। लेकिन यशवंत जानता था, रमेश फाँसी से बचने के लिए भी उस प्रमाण का आश्रय न लेगा, जिसे मैं गुप्त रखना चाहता हूँ।

जब तक मुकदमे की पेशियाँ होती रहीं, तब तक यशवंत को असह्य मर्मवेदना होती रही। उसकी आत्मा और स्वार्थ में नित्य संग्राम होता रहता था; पर फैसले के दिन तो उसकी वही दशा हो रही थी, जो किसी खून के अपराधी की हो। इज़लास पर जाने की हिम्मत न पड़ती थी। वह तीन बजे कचहरी पहुँचा।

मुलज़िम अपना भाग्य-निर्णय सुनने को तैयार खड़े थे। रमेश भी आज रोज़ से ज्यादा उदास था। उसके जीवन-संग्राम में वह अवसर आ गया था, जब उसका सिर तलवार की धार के नीचे होगा। अब तक भय सूक्ष्म रूप में था, आज उसने स्थूल रूप धारण कर लिया था।

यशवंत ने दृढ़ स्वर में फैसला सुनाया। जब उसके मुख से ये शब्द निकले कि रमेशचंद्र को सात वर्ष की कठिन कारावास, तो उसका गला रुँध गया। उसने तजवीज़ मेज पर रख दी। कुर्सी पर बैठकर पसीना पोंछने के बहाने आँखों से उमड़े हुए आँसुओं को पोंछा। इसके आगे तजवीज़ उससे न पढ़ी गई।

7

रमेश जेल से निकलकर पक्का क्रांतिवादी बन गया। जेल की अँधेरी कोठरी में दिनभर के कठिन परिश्रम के बाद वह दोनों के उपकार और सुधार के मनसूबे बाँधा करता था। सोचता, मनुष्य क्यों पाप करता है? इसलिए न कि संसार में इतनी विषमता है। कोई तो विशाल भवनों में रहता है और किसी को पेड़ की छाँह भी मयस्सर नहीं। कोई रेशम और रत्नों से मढ़ा हुआ है, किसी को फटा वस्त्र भी नहीं। ऐसे न्यायविहीन संसार में यदि चोरी, हत्या और अधर्म है तो यह किसका दोष? वह एक ऐसी समिति खोलने का स्वप्न देखा करता, जिसका काम संसार से इस विषमता को मिटा देना हो। संसार सबके लिए है उसमें सबको सुख भोगने का समान अधिकार है। न डाका, डाका है, न चोरी, चोरी। धनी अगर अपना धन खुशी से नहीं बाँट देता, तो उसकी इच्छा के विरुद्ध बाँट लेने में क्या पाप! धनी उसे पाप कहता है तो कहे। उसका बनाया हुआ कानून दंड देना चाहता है, तो दे। हमारी अदालत भी अलग होगी। उसके सामने वे सभी मनुष्य अपराधी होंगे, जिसके पास ज़रूरत से ज्यादा सुख-भोग

की सामग्रियाँ हैं। हम भी इन्हें दंड देंगे, हम भी उनसे कड़ी मेहनत लेंगे।

जेल से निकलते ही उसने इस सामाजिक क्रांति की घोषणा कर दी। गुप्त सभाएँ बनने लगीं, शस्त्र जमा किए जाने लगे और थोड़े ही दिनों में डाकों का बाजार गरम हो गया। पुलिस ने उसका पता लगाना शुरू किया। उधर क्रांतिकारियों ने पुलिस पर भी हाथ साफ करना शुरू किया। उनकी शक्ति दिन-पर-दिन बढ़ने लगी। काम इतनी चतुराई से होता था कि किसी को अपराधी का कुछ सुराग न मिलता। रमेश कहीं गरीबों के लिए दवाखाना खोलता, कहीं बैंक। डाके के रुपयों से उसने इलाके खरीदना शुरू किया। जहाँ कोई इलाका नीलाम होता वह उसे खरीद लेता। थोड़े ही दिनों में उसके अधीन एक बड़ी जायदाद हो गई। इसका नफा गरीबों के उपकार में खर्च होता था। तुर्रा यह कि सभी जानते थे, यह रमेश की करामात है, पर किसी की मुँह खोलने की हिम्मत न होती थी। सभ्य-समाज की दृष्टि में रमेश से ज्यादा घृणित और कोई प्राणी संसार में न था। उसका नाम सुन कानों पर हाथ रख लेते थे। शायद उसे प्यासों मरता देखकर कोई एक बूँद पानी भी उसके मुँह में न डालता। लेकिन किसी की मजाल न थी कि उस पर आक्षेप कर सके।

इस तरह कई साल गुजर गए। सरकार ने डाकुओं का पता लगाने के लिए बड़े-बड़े इनाम रखे। योरप से गुप्त पुलिस से सिद्धहस्त आदमियों को बुलाकर इस काम पर नियुक्त किया। लेकिन ग़जब के डकैत थे, जिनकी हिकमत के आगे किसी की कुछ न चलती थी।

पर रमेश खुद अपने सिद्धांतों का पालन न कर सका। ज्यों-ज्यों दिन गुजरते थे, उसे अनुभव होता था कि मेरे अनुयायियों में असंतोष बढ़ता जाता है। उनमें भी जो ज्यादा चतुर और साहसी

थे, वे दूसरे पर रोब जमाते और लूट के माल में बराबर हिस्सा न देते थे। यहाँ तक कि रमेश से कुछ लोग जलने लगे। वह राजसी ठाट से रहता था। लोग कहते उसे हमारी कमाई को यों उड़ाने का क्या अधिकार है? नतीजा यह हुआ कि आपस में फूट पड़ गई।

रात का वक्त था; काली घटा छाई हुई थी। आज डाकगाड़ी में डाका पड़ने वाला था। प्रोग्राम पहले से तैयार कर लिया गया था। पाँच साहसी युवक इस काम के लिए चुने गए थे।

सहसा एक युवक ने खड़े होकर कहा – आप बार-बार क्यों चुनते हैं? हिस्सा लेने वाले तो सभी हैं, मैं ही क्यों बार-बार अपनी जान जोखिम में डालूँ?

रमेश ने दृढ़ता से कहा – इसका निश्चय करना मेरा काम है कि कौन कहाँ-कहाँ भेजा जाए। तुम्हारा काम केवल मेरी आज्ञा का पालन है।

युवक – अगर मुझसे काम ज्यादा लिया जाता है, तो हिस्सा क्यों नहीं ज्यादा दिया जाता?

रमेश ने उसकी त्योरियाँ देखीं। और चुपके से पिस्तौल हाथ में लेकर बोले– इसका फैसला वहाँ से लौटने के बाद होगा।

युवक – मैं जाने से पहले इसका फैसला करना चाहता हूँ।

रमेश ने इसका जवाब न दिया। वह पिस्तौल से उसका काम तमाम कर देना ही चाहते थे कि युवक खिड़की से नीचे कूद पड़ा और भागा। कूदने-फाँदने में उसका जोड़ न था। चलती रेलगाड़ी से फाँद पड़ना उसके बाएँ हाथ का खेल था।

वह वहाँ से सीधा गुप्त पुलिस के प्रधान के पास पहुँचा।

8

यशवंत ने भी पेंशन लेकर वकालत शुरू की थी। न्याय-विभाग के सभी लोगों से उसकी मित्रता थी। उनकी वकालत बहुत जल्द

चमक उठी। यशवंत के पास लाखों रुपए थे। उन्हें पेंशन भी बहुत मिलती थी। वह चाहते, तो घर बैठे आनंद से अपनी उम्र के बाकी दिन काट देते। देश और जाति की कुछ सेवा करना भी उनके लिए मुश्किल न था। ऐसे ही पुरुषों से निस्वार्थ सेवा की आशा की जा सकती है। यशवंत ने अपनी सारी उम्र रुपए कमाने में गुजारी थी और वह अब कोई ऐसा काम न कर सकते थे, जिसका फल रुपयों की सूरत में न मिले।

यों तो सारा सभ्य-समाज रमेश से घृणा करता था, लेकिन यशवंत सबसे बढ़ा हुआ था। कहता, अगर कभी रमेश पर मुकदमा चलेगा, तो मैं बिना फीस लिए सरकार की तरफ से पैरवी करूँगा। खुल्लमखुल्ला रमेश पर छींटे उड़ाया करता – यह आदमी नहीं, शैतान है; राक्षस है; ऐसे आदमी का तो मुँह न देखना चाहिए। उफ! इसके हाथों कितने भले घरों का सर्वनाश हो गया। कितने भले आदमियों के प्राण गए। कितनी स्त्रियाँ विधवा हो गईं। कितने बालक अनाथ हो गए। आदमी नहीं, पिशाच हैं मेरा बस चले, तो इसे गोली मार दूँ, जीता चुनवा दूँ।

9

सारे शहर में शोर मचा हुआ था – रमेश बाबू पकड़े गए! बात सच्ची थी। रमेश चुपचाप पकड़ा गया। उसी युवक ने, जो रमेश के सामने कूदकर भागा था, पुलिस के प्रधान से सारा कच्चा चिट्ठा बयान कर दिया था। अपहरण और हत्या का कैसा रोमांचकारी, कैसा पैशाचिक, कैसा पापपूर्ण वृत्तांत था।

भद्र समुदाय बगलें बजाता था। सेठों के घरों में घी के चिराग जलते थे। उनके सिर पर एक नंगी तलवार लटकती रहती थी, आज वह हट गई। अब वे मीठी नींद से सो सकते थे।

अखबारों में रमेश के हथकंडे छपने लगे। वे बातें जो अब तक मारे भय के किसी की ज़बान पर न आती थीं, अब अखबारों

में निकलने लगीं। उन्हें पढ़कर पता चलता था कि रमेश ने कितना अँधेर मचा रखा था। कितने ही राजे और रईस उसे माहवार टैक्स दिया करते थे। उसका पुरजा पहुँचता, फलाँ तारीख को इतने रुपये भेज दो फिर किसकी मज़ाल थी कि उसका हुक्म टाल सके। वह जनता के हित के लिए जो काम करता, उसके लिए भी अमीरों से चंदे लिए थे। रक़म लिखना रमेश का काम था। अमीर को बिना कान-पूँछ हिलाए वह रकम दे देनी पड़ती थी।

लेकिन भद्र समुदाय जितना ही प्रसन्न था, जनता उतनी ही दुखी थी। अब कौन पुलिसवालों के अत्याचार से उनकी रक्षा करेगा? कौन सेठों के जुल्म से उन्हें बचाएगा, कौन उनके लड़कों के लिए कला-कौशल के मदरसे खोलेगा? वे अब किसके बल पर कूदेंगे? वह अब अनाथ थे। वही उनका अवलंब था। अब वे किसका मुँह ताकेंगे! किसको अपनी फ़रियाद सुनाएँगे?

पुलिस शहादतें जमा कर रही थी। सरकारी वकील ज़ोरों से मुक़दमा चलाने की तैयारियाँ कर रहा था। लेकिन रमेश की तरफ़ से कोई वकील न खड़ा होता था। जिले भर में एक ही आदमी था, जो उसे कानून के पंजे से छुड़ा सकता था। वह था यशवंत! लेकिन यशवंत जिसके नाम से कानों पर उँगली रखता था, क्या उसकी वकालत करने को खड़ा होगा? असंभव।

रात के नौ बजे थे यशवंत के कमरे में एक स्त्री ने प्रवेश किया। यशवंत अखबार पढ़ रहा था। बोला – क्या चाहती हो।

स्त्री – अपने पति के लिए वकील।

यशवंत – तुम्हारा पति कौन है?

स्त्री – वह जो आपके साथ पढ़ता था और जिस पर डाके का झूठा अभियोग चलाया जाने वाला है।

यशवंत ने चौंक कर पूछा – तुम रमेश की स्त्री हो?

स्त्री – हाँ।

यशवंत – मैं उनकी वकालत नहीं कर सकता।

स्त्री – आपको अख्तियार है। आप अपने जिले के आदमी हैं और मेरे पति के मित्र रह चुके हैं। इसलिए सोचा था, क्यों बाहर वालों को बुलाऊँ। मगर अब इलाहाबाद या कलकत्ते से ही किसी को बुलाऊँगी।

यशवंत – मेहनताना दे सकोगी?

स्त्री ने अभिमान के साथ कहा – बड़े-से-बड़े वकील का मेहनताना क्या होता है?

यशवंत – तीन हज़ार रुपए रोज?

स्त्री – बस, आप इस मुकदमे को ले लें, मैं आपको तीन हज़ार रुपए रोज दूँगी।

यशवंत – तीन हज़ार रुपए रोज।

स्त्री – हाँ, और यदि आपने उन्हें छुड़ा लिया, तो पचास हज़ार रूपए आपको इनाम के तौर पर और दूँगी।

यशवंत के मुँह में पानी भर आया। अगर मुकदमा दो महीने भी चला, तो कम-से-कम एक लाख रुपए सीधे हो जाएँगे। पुरस्कार ऊपर से, पूरे दो लाख की गोटी है। इतना धन तो जिंदगी-भर में भी जमा न कर पाए थे। मगर दुनिया क्या कहेगी। अपनी आत्मा भी तो नहीं गवाही देती। ऐसे आदमी को कानून के पंजे से बचाना असंख्य प्राणियों की हत्या करना है। लेकिन गोटी दो लाख की है। कुछ रमेश के फँस जाने से इस जत्थे का अंत तो हुआ नहीं जाता। इसके चेले-चापड़ तो रहेंगे ही। शायद वे अब और भी उपद्रव मचाएँ। फिर मैं दो लाख की गोटी क्यों जाने दूँ! लेकिन मुझे कहीं मुँह दिखाने की जगह न रहेगी। न सही। जिसका जी चाहे खुश हो जिसका जी चाहे नाराज। ये दो लाख

तो नहीं छोड़े जाते। मैं किसी का गला तो दबाता नहीं, चोरी तो करता नहीं? अपराधियों की रक्षा करना तो मेरा काम ही है।

सहसा स्त्री ने पूछा – आप जवाब देते हैं।

यशवंत – मैं कल जवाब दूँगा। ज़रा सोच लूँ?

स्त्री – नहीं, मुझे इतनी फुरसत नहीं है अगर आपको कुछ उलझन हो तो साफ़-साफ़ कह दीजिएगा, मैं और प्रबंध करूँ।

यशवंत को और विचार करने का अवसर न मिला। जल्दी से फैसला स्वार्थ ही की ओर झुकता है। यहाँ हानि की संभावना नहीं रहती।

यशवंत – आप कुछ रुपए पेशगी के दे सकती हैं?

स्त्री – रुपयों की मुझसे बार-बार चर्चा न कीजिए। उनकी जान के सामने रुपयों की हस्ती क्या है? आप जितनी रक़म चाहें, मुझसे ले लें। आप चाहे उन्हें छुड़ा न सकें लेकिन सरकार के दाँत खट्टे ज़रूर कर दें।

यशवंत – खैर, मैं ही वकील हो जाऊँगा। कुछ पुरानी दोस्ती का निर्वाह भी तो करना चाहिए।

10

पुलिस ने एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाया, सैकड़ों शहादतें पेश की। मुखबिर ने तो पूरी गाथा ही सुना दी; लेकिन यशवंत ने कुछ ऐसी दलीलें की; शहादतों को कुछ इस तरह झूठा सिद्ध किया और मुखबिर की कुछ ऐसी खबर ली कि रमेश बेदाग छूट गए। उन पर कोई अपराध सिद्ध न हो सका। यशवंत जैसे संयत और विचारशील वकील का उनके पक्ष में खड़े हो जाना ही इसका प्रमाण था कि सरकार ने गलती की।

संध्या का समय था। रमेश के द्वार पर शामियाना तना हुआ था। गरीबों को भोजन कराया जा रहा था। मित्रों की दावत हो

रही थी। यह रमेश के छूटने का उत्सव था। यशवंत को चारों ओर से धन्यवाद मिल रहे थे। रमेश को बधाइयाँ दी जा रही थीं। यशवंत बार-बार रमेश से बोलना चाहता था, लेकिन रमेश उनकी ओर से मुँह फेर लेते थे। अब तक उन दोनों में एक बात भी न हुई थी।

आखिर यशवंत ने एक बार झुँझलाकर कहा – तुम तो मुझसे इस तरह ऐंठे हुए हो, मानो मैंने तुम्हारे साथ कोई बुराई की है।

रमेश – और आप क्या समझते हैं कि मेरे साथ भलाई की है? पहले आपने मेरे इस लोक का सर्वनाश किया था, अबकी परलोक का किया।

यशवंत – यह तो कहोगे कि इस मामले में कितने साहस से काम लेना पड़ा।

रमेश – आपने साहस से काम नहीं लिया, स्वार्थ से काम लिया। आप अपने स्वार्थ के भक्त हैं। मैं तो आपको 'भाड़े का टट्टू' समझता हूँ। मैंने अपने जीवन का बहुत दुरुपयोग किया, लेकिन उसे आपके जीवन से बदलने को किसी दशा में तैयार नहीं हूँ। आप मुझसे धन्यवाद की आशा न रखें।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. *'सुस्त कछुआ तेज़ खरगोश से बाजी मार ले गया'* – लेखक ने यह टिप्पणी किसके लिए की है?
2. रमेश किसका नेता था और फाँसी से क्यों नहीं डरता था?
3. आगरे में भयंकर डाके की रात रमेश कहाँ था?
4. रमेश को जेल से छुड़ाने के लिए उसकी पत्नी ने यशवंत को कितनी फीस देने की बात की?

5. दूसरी बार जेल से छूटने के बाद रमेश ने यशवंत से क्या कहा?

लिखित

1. यशवंत और रमेश का विद्यार्थी जीवन कैसा था?
2. वकील और शिक्षक के रूप में रमेश क्यों असफल रहा?
3. रमेश के निरापराधी होने पर भी यशवंत ने उसे क्यों सजा दी?
4. पहली बार जेल से छूटने के बाद रमेश के जीवन में क्या परिवर्तन आया?
5. रमेश और यशवंत के चरित्र की विशेषताएँ बताइए?

भाषा-अध्ययन

1. **पढ़िए और समझिए :**
   - (क) मैं आत्मा के आगे धन का कुछ मूल्य नहीं समझता।
     मेरे लिए आत्मा के आगे धन का कोई मूल्य नहीं है।
   - (ख) भले आदमी, जब इतने जले हुए हो; तो छोड़ क्यों नहीं देते नौकरी?
     जब तुम्हें परेशानी है तो नौकरी छोड़ क्यों नहीं देते।
   - (ग) मुझे भय है कि तुम कहीं पकड़े न जाओ।
     तुम्हारे पकड़े जाने का भय सताता है।
   - (घ) आखिर आग में कूदने से लाभ ही क्या?
     परेशानियों में जान बूझकर पड़ने से कोई लाभ नहीं है।
   - (ङ) आप मुझसे धन्यवाद की आशा न रखें।
     मेरी ओर से धन्यवाद की आशा रखना व्यर्थ है।
2. **उदाहरण के अनुसार विशेषण के स्थान पर संज्ञा में बदलकर वाक्य लिखिए :**

   (i)

वह आलसी है।
⇒ उसमें आलस है।

   (क) वह साहसी है।
   (ख) वह आत्माभिमानी है।
   (ग) वह पराक्रमी है।

(ii)

> वह अपराधी है।
> ⇒ उसने अपराध किया है।

(क) वह खूनी है।
(ख) वह अत्याचारी है।
(ग) वह बहुत परिश्रमी है।

3. उदाहरण के अनुसार वाक्यों में रूपांतरण कीजिए :

(i)

> साल खत्म होने से पहले ही रमेश को इस्तीफ़ा देना पड़ा।
> ⇒ साल खत्म होने से पहले ही रमेश ने इस्तीफ़ा दे दिया।

(क) मोहन के आते ही विलियम को पुस्तक देनी पड़ी।
(ख) अध्यापक के कहते ही सुरेश को निबंध लिखना पड़ा।
(ग) माताजी के डाँटने पर शीला को काम करना पड़ा।

(ii)

> मैं ही क्यों अपनी जान जोखिम में डालूँ?
> ⇒ मैं अपनी जान जोखिम में नहीं डालना चाहता।

(क) मैं ही क्यों मोहन का काम करूँ?
(ख) शीला ही क्यों रमेश के लिए यह खतरा मोल ले?
(ग) मोहन ही क्यों उसके लिए मुसीबत में पड़े?

4. अलग-अलग वर्गों में वाक्यांश दिए गए हैं, उनमें परस्पर मिलान कीजिए :

क वर्ग	**ख वर्ग**
1. मैं उससे कहीं नीच हूँ	तो मैं क्या करूँ?
2. अगर हाकिम वक्त की पाबंदी नहीं करता	तो छोड़ क्यों नहीं देते नौकरी?
3. जब इतने जले हुए हो	जितना कहता हूँ।
4. मैं कल जवाब दूँगा	अबकी परलोक का किया।
5. पहले आपने मेरे इस लोक का सर्वनाश किया था	ज़रा सोच लूँ।

5. निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त मुहावरा लिखिए :

(ताना मारना, काठ का उल्लू, मुँह में पानी भर आना, रार मोल लेना, कच्चा चिट्ठा बयान करना)

1. इस युवक ने रमेश के बारे में पुलिस से सारा ....।
2. तुम क्यों .... रहे हो, मैं तो धन को तुच्छ समझता हूँ।
3. रमेश ने छात्रों के पक्ष में प्रिंसिपल से ....।
4. तुम तो .... हो, इतना भी नहीं समझते।
5. मुकदमा लड़ने के लिए दो लाख रुपए मिलने की बात सुनकर यशवंत के ....।

योग्यता-विस्तार

प्रेमचंद की कहानियाँ 'मानसरोवर' के आठ भागों में संकलित हैं। पुस्तकालय से ये कहानी-संग्रह प्राप्त कर पढ़िए और जो कहानी आपको सबसे अच्छी लगे, उसे कक्षा में सुनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

चिमटा लेना – चिपका लेना, गले लगाना
डील-डौल – शरीर की लंबाई-चौड़ाई, शरीर का विस्तार
रिश्वत – घूस, नियम विरुद्ध काम कराने के लिए दिया जाने वाला धन
भाड़े का टट्टू (मुहावरा) – जो पैसे के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाए
काठ के उल्लू (मुहावरा) – निरा बेवकूफ
परास्त – हारा हुआ, पराजित
कुटीर – कुटिया
हताश – जिसकी आशा नष्ट हो गई हो
अव्वल – सर्वश्रेष्ठ
मातहत – आज्ञाधीन, नीचे काम करने वाला
बेलौस – बेबाक

हाकिम – हुक्म करने वाला, मालिक
इज़लास – अधिकार क्षेत्र, अधिवेशन, सभा
गुस्ताखी – गलती
मुवक्किल – वकील करने वाला
रार – झगड़ा
कपोल कल्पित – बनावटी, मनगढ़ंत
अविरल – लगातार, निरंतर
शहादत – युद्ध में वीरगति को प्राप्त करना
मुलजिम – जिस पर कोई दोष लगाया गया हो
मर्मवेदना – हार्दिक कष्ट
तज़वीज़ – फैसला, प्रस्ताव, सम्मति
मनसूबे – योजना, जोड़-तोड़, इरादा
मयस्सर – उपलब्ध
तुर्रा – घमंड, पगड़ी या टोपी आदि में लगा हुआ फूदना
आक्षेप – दोषारोपण
हिकमत – बुद्धिमानी, चतुराई
अनुयायी – किसी मत या नेता का अनुसरण करने वाला
जोखिम – खतरा, ऐसी चीज़ जो विपत्ति का कारण हो
हथकंडे – हाथ की सफाई, चतुराई की चाल
पुरजा – पर्ची
अख्तियार – सामर्थ्य, ज़ोर

6. धर्मवीर भारती

(1926–1997)

धर्मवीर भारती का जन्म इलाहाबाद के अतरसुइया मुहल्ले में हुआ था। बचपन में ही पिता के देहावसान होने पर अपने मामा की छत्रछाया में उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए और बाद में पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। उसी विश्वविद्यालय में हिंदी प्राध्यापक पद पर कार्य किया। 1960 से ***धर्मयुग*** *पत्रिका के संपादक पद पर कार्यरत रहे। भारती ने देश-विदेश की अनेक यात्राएँ की। युद्ध के मोर्चों पर जाकर उसका प्रामाणिक विवरण भी प्रस्तुत किया। उन्हें अनेक राष्ट्रीय पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया।*

भारती ने गद्य और पद्य दोनों विधाओं में लिखा है। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं : ***अंधायुग, गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा, ठेले पर हिमालय, बंद गली का आखिरी मकान, सपना अभी भी*** *आदि। उनकी कृतियों में सामाजिक विसंगतियाँ और विडंबनाएँ प्रभावी रूप से उभरकर सामने आई हैं।*

स्वतंत्रता के बाद गिरते हुए जीवन मूल्य, विश्वयुद्धों से उपजा हुआ डर और अमानवीयता उनके केंद्रीय विषय हैं। उन्होंने पौराणिक आख्यानों का भी भरपूर प्रयोग किया है। भारती की भाषा में एक प्रकार की ताज़गी और हृदय को छूने की अद्भुत क्षमता है।

मोर की पूजा *एक संस्मरणात्मक जीवनी है। इसमें वर्णित फादर कामिल बुल्के का व्यक्तित्व देशकाल और राग-द्वेष की सीमा से परे मनुष्यता का बोध कराता है। उनकी उपस्थिति मात्र से सारा परिवेश प्रार्थना के स्वर में गूँजने लगता है।*

प्रस्तुत निबंध में फादर कामिल बुल्के अपनी धार्मिक आस्था से ऊपर उठकर भारतीय संस्कृति में गहरी आस्था प्रकट करते हैं। माता मरियम की गोद में लेटे शिशु जीसस से कामिल बुल्के का व्यक्तित्व "ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पैजनियाँ" की वात्सल्य भरी यात्रा तय करता है। भारती जी ने कामिल बुल्के को कर्मनिष्ठ तपस्वी ऋषि की तरह चित्रित किया है।

भोर की पूजा

क्वार की हलकी खुनकी। एक अपरिचित शहर की कोहरे डूबी, अधसोई सड़कें और खामोश खड़े मकान। तड़के भोर के मुँह अँधेरे में जल्दी-जल्दी पाँव बढ़ाते हुए वे दोनों कहाँ जा रहे हैं? इधर तो कोई बस्ती भी नहीं है?

मिथिला के इस राजनगर दरभंगा की सभी इमारतें, कचहरी, कोठी, कॉलेज, होस्टल सभी पीले रंग से पुते हैं। लेकिन शहर से दूर एक निर्जन टीले पर खड़ा वह पुराना गिरजाघर कभी बादामी रंग से पुता होगा, मगर अब तो इसकी दीवारों और कंगूरों पर बरसात की काई जम गई है, पलस्तर उखड़ गया है, सीढ़ियाँ जगह-जगह से टूट गई हैं।

अब पूरी तरह से उजाला फूट आया है। वे दोनों गिरजाघर की सीढ़ियों पर पहुँच कर रुक गए हैं। रविवार की सुबह है पर न चर्च की घंटियाँ, न कोई सज-धजकर आने वाले भक्त। सिर्फ़ उनकी पदचाप से चौंककर पंख फड़फड़ाकर कंगूरों पर बैठे कबूतर उड़ जाते हैं।

इन दोनों में से एक है शुभ्र गौरांग, हलकी नीली आँखें, भूरी सुनहरी छितरी दाढ़ी और गरदन से पाँवों तक लहराता पादरियों वाला लंबा चोगा, दूसरा दुबला, साँवला, घने बाल, कुरता-पाजामा, सदरी, छोटी मगर तेज़ चमकदार आँखें। उसकी आँखें पहले ऊपर गिरजाघर के शिखर पर लगे क्रास पर टिकती हैं, फिर नीचे दूर-दूर तक फैले उस कस्बे और इर्द-गिर्द के हरे-भरे

खेतों और पोखरों पर। ऊपर क्रास है, जीसस के महान आत्मदान और बलिदान का और नीचे है दूर-दूर तक फैली मिथिला-विद्यापति की मिथिला, विदेह राजा जनक की मिथिला।

अब देखिए न, चले थे इलाहाबाद से दरभंगा में आयोजित अखिल भारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस के डेलीगेट बनकर। प्रयाग विश्वविद्यालय के कुलपति गुरुवर डॉ. अमरनाथ झा दरभंगा के होने के नाते इसके स्वागताध्यक्ष। उन्होंने अंग्रेजी से आच्छादित ओरियंटल कांफ्रेंस का उद्घाटन कराया था। दादा पं. माखनलाल चतुर्वेदी से जिनके जादू भरे भाषण ने देश-विदेश से सैंकड़ों आचार्यों और विद्वानों को मंत्रमुग्ध कर दिया था। हिंदी को विश्व चेतना के धरातल पर गौरवान्वित करने वाले पहले मनीषी माखनलाल जी ही तो थे, आज हम उनको भले भूल जाएँ, पर इस लड़के को क्या कहिए। रात बीतते यह भूल गया डॉ. अमरनाथ झा को भी, दादा के भाषण को भी और प्रातः गोष्ठी छोड़-छाड़ कर आ खड़ा हुआ, इस उजाड़ गिरजाघर की सीढ़ियों पर जिससे उसका कुछ लेना-देना नहीं।

बात यह थी कि रात को उसके अंग्रेज़ मित्र बुल्के ने बताया कि यहाँ एक पुराना गिरजाघर है। बंद पड़ा है। कोई पादरी भी नहीं जो पूजा कराए। उन्हें (कामिल बुल्के) डेलीगेटों की भीड़ में देखकर किसी ने आकर प्रार्थना की कि सौभाग्य से वे यहाँ आए ही हैं तो सुबह पूजा करा दें। प्रार्थना करने वाला, एक दुबला-पतला बहुत गरीब-सा बनियाइन-अँगोछा पहने एक स्थानीय ईसाई इस समय एक पोटली में कुछ मोमबत्तियाँ, धूप नैवेद्य और फूल लाया है और कुछ डबल रोटियाँ और मक्खन। बुल्के सारा सामान लेकर गिरजाघर के अंतः प्रकोष्ठ में चले गए हैं, पूजा की तैयारी करने। बाहर खड़ा वह लडका उस बनियाइन-अँगोछे वाले से बतिया रहा है।

बुल्के अब पूजा के वस्त्र धारण करके आ गए हैं। सौम्य तो वैसे ही हैं, इस समय कितने भव्य कुछ-कुछ रहस्यमय लग रहे हैं। चर्च के अंदर काफी अँधेरा-सा है। पुरोहित हैं बुल्के। इतने बड़े पूरे हॉल में केवल एक भक्त है जिसने इस समय अँगोछे पर एक फटी कमीज़ भी डाल ली है और खाली हॉल में लगी डेस्कों-बेंचों पर लहराते, दीवारों से टकराकर गूँजते बुल्के के मंत्रों जैसे प्रार्थना के स्वर। मैं एक डेस्क के सहारे खड़ा चुपचाप। धार्मिक होना तो दूर लगभग नास्तिक ही समझिए! ईश्वर तो है या नहीं यह ईश्वर ही जानता है, ईश्वर के पुत्र जीसस थे, ईश्वर का अवतार राम थे, यह भी ईश्वर ही जाने। मैं तो उस समय यह सोच रहा था कि मनुष्य का आत्मदान, मनुष्य का संकल्प कैसा चमत्कारी होता है, देशों की सीमा लाँघकर, युगों की सीमा लाँघकर कैसे जीवंत और प्रेरणादाई बना रहता है। कैसे थे येरुशलम के जीसस जो इस सुदूर मिथिला के इस उजाड़ गिरजाघर में इस समय भी जीवित हो रहे हैं और कैसे थे इस मिथिला में आकर जानकी को ब्याहने वाले मर्यादा पुरुषोत्तम जो हज़ारों साल बाद सात समुद्र पार से अपना घर-बार छोड़कर आनेवाले रेवरेंड फादर बुल्के के अप्रतिम शोध का विषय बन गए हैं। कौन-सी वह भटकन होगी, कौन-सी वह प्रेरणा होगी जो सुदूर बेलजियम के इस सुंदर भव्य बुल्के को खींचकर लाई, भारत की मिट्टी से उन्हें एकाकार कर दिया। जीसस में, श्रीराम में जो महान संकल्प शक्ति थी वही, उसी का अंश, उसी का ज्वलंत कण इस लंबे शुभ्र नीली आँखों वाले व्यक्तित्व में कब कैसे धधक उठा? दरभंगा के उस अनजान गिरजाघर की वह विचित्र पूजा मुझे आज तक नहीं भूलती। और मुझे नहीं भूलती वे छोटी-छोटी घटनाएँ जिनमें हम दो अत्यंत अलग स्वभाव, अलग आस्थाओं और अलग परिवेश वाले व्यक्तियों की पहचान

हुई, धीरे-धीरे मित्रता में बदली, मित्रता प्रगाढ़ हुई और आजीवन बंधुता में परिणत होकर पारिवारिकता में परिपक्व हो गई। कितनी ही बातें याद आती है।

प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में डॉ. धीरेंद्र वर्मा के कमरे के सामने एक बरामदा है। बरामदे की सीढ़ियों पर हम सहपाठी छात्रों की एक ऊधमी टोली अक्सर बैठी दुनिया भर की शरारतें सोचती रहती थी। एक दिन साइकिल पर सफ़ेद चोगा पहने नीली आँखें, सुनहरी दाढ़ी, ऊँचे माथेवाला एक पादरी आकर सीढ़ियों के सामने साइकिल से उतरता है। हम सबको गहरा कुतूहल है, कौन है, यहाँ क्यों आया है? ज्ञात होता है कि बेलजियम के हैं फादर बुल्के। भाषाविज्ञान का विशेष अभ्यास करने आए हैं और धीरेंद्र जी के निर्देशन में रिसर्च करेंगे। हम लोग पहले संकोच में दूर-दूर से उन्हें देखते हैं, फिर संकोच टूटता है, पास जाकर बातें करते हैं। विदेशी समझकर हम अंग्रेज़ी में बोलते हैं और बुल्के सहज मुसकान के साथ हिंदी में जवाब देते हैं। पहले हमें धक्का-सा लगता है, कुछ शर्म भी आती है और फिर दो ही चार दिन में दूरी खत्म हो जाती है। मैत्री का स्नेह सूत्र जुड़ जाता है।

अतरसुइया के अपने जिस घर में उन दिनों मैं रहता था वहाँ पहुँचने में पार्क के बाद एक बहुत पतली गली पड़ती थी। इतनी पतली कि दो आदमी साथ नहीं चल सकते थे। एक दिन मुहल्ले वाले देखते हैं कि एक गोरा लंबा अंग्रेज़ पादरी साइकिल पर आया, गली के मुहाने पर रुका, फिर साइकिल हाथ में लेकर चोगा सँभालता हुआ गली पार करने लगा। कई बच्चे खेल छोड़-छाड़ कर पीछे-पीछे लग लिए। बुल्के उनसे बतियाते हुए चले आ रहे हैं। जब बुल्के आकर हमारी बैठक में बैठ गए, तब भी वे बच्चे बाहर से झाँकते रहे। फिर तो बुल्के धीरे-धीरे हमारे परिवार

में सबके लाड़ले बन गए। रक्षाबंधन के दिन माँ ने विशेष रूप से उनके लिए कचौड़ी, रायता, सोंठ की चटनी बनाई। बुल्के ने टीका तो नहीं लगवाया पर बहनों से राखी बँधवाई। बहनों में उस समय सबसे छोटी थी मामा जी की लड़की शशि, जो दाढ़ी बाबा से इतनी हिल-मिल गई कि मेरे मुंबई चले आने के बाद भी जब-जब बुल्के राँची से इलाहाबाद जाते तो मामाजी के घर ज़रूर जाते और शशि जो अब काफी बड़ी हो गई थी, "दाढ़ी बाबा" के आने से पुलक उठती।

बुल्के उन दिनों सेंट जोसेफ़ सेमीनरी में रहते थे। इलाहाबाद की छायादार चौड़ी कलात्मक सड़कों में से एक के किनारे एक बहुत बड़ी इमारत थी स्कूल की, बड़े-बड़े मैदान, बाग-बगीचे, सेमीनरी और गिरजाघर। छायादार वृक्षों के बीच सेमीनरी में चौड़ा बरामदा और एक कतार में बने बहुत ऊँची छतों वाले बड़ी-बड़ी खिड़कियों वाले कमरे। उन्हीं में से एक कमरे में रहते थे रेवरेंड फादर कामिल बुल्के। विश्वविद्यालय से लौटते समय या कभी-कभी छुट्टियों के दिन तीसरे पहर उनके कमरे में पहुँच जाता था। वे मिलते तो ठीक, नहीं मिलते तो देर तक वहाँ पेड़ों के नीचे, फूलों की क्यारियों के पास टहलता रहता। जहाँ ईंट-पत्थर जमाकर बनाई गुफा में माता मरियम की सौम्य संगमरमरी प्रतिमा खड़ी थी वहाँ दूर-दूर तक ज़मीन में बरबीना फैली थी। नीले-नीले रहस्यमय फूल। इन नीले फूलों की लहराती झील जाने कैसी शांति दे जाती थी उद्विग्न मन को।

बुल्के से जुड़कर मैं उस एक पूरे संसार से जुड़ गया था जहाँ शाम को बजती हुई चर्च की घंटियाँ थीं, मरियम का वत्सल मुख था, सलीब पर लटके करुणा मूर्ति जीसस थे, नीले फूल थे और थे बुल्के के साथी मित्रगण, फादर आई. ए. एक्स्ट्रास, फादर धीरांबद भट्ट जो अब बिशप हैं। इलाहाबाद की कितनी ही साहित्यिक दोस्तियाँ विपत्ति के समय झूठी और खोटी निकल

गईं। लेकिन सलीब की छाया से बनी ये दोस्तियाँ आज तक कायम हैं । बस पता भर चल जाए कि फादर एक्स्ट्रास या फादर भट्ट आए हैं तो सारे काम छोड़ कर मन होता था भागकर उनके पास पहुँचूँ और पहुँचने पर, मिलने पर दो ही विषय होते थे बातों के, पहला बुल्के, दूसरा अब उजड़ा हुआ इलाहाबाद।

माँ का बुल्के से बहुत लगाव था। वे मेरे मुंबई आने के कुछ ही समय बाद गुज़र गईं। लगभग साल भर बाद अचानक फ़ोन आया सेंट ज़ेवियर्स मुंबई से कि फ़ादर बुल्के आए हैं आपसे मिलने को उत्सुक हैं। मैं तुरंत गाड़ी लेकर गया। कई मंज़िल ऊपर वे एक छोटे-से कमरे में टिके थे। ऊँचा सुनने लगे थे, बुढ़ापा झलकने लगा था और सारे आधुनिक साजो-सामान और बंबइया टीमटाम के बीच काफ़ी बेचैन से । "यहाँ कैसे मन लगेगा आपका? चलिए न घर!" बुल्के खिल उठे। परिवार में उनका मन लगता है, बस सामान उठाया, चल पड़े। घर आकर पुष्पा और बच्चों के बीच में प्रसन्न। बच्चों ने मुंबई के सारे अंग्रेज़ियत भरे वातावरण के बीच पहली बार अंकल के बजाय ताऊजी कहना सीखा। बुल्के बच्चों से घिरे बैठे थे, उन्हें अँगूठा तोड़ने और जोड़ने का जादू सिखा रहे थे। बच्चों के बीच इस कदर घुल-मिल जाने का वात्सल्य उन्हें कहाँ से मिला था। माता मरियम की गोद में लेटे शिशु जीसस से या "ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पैजनियाँ" से? या शायद दोनों से!

और ऐसे क्षणों में फिर वही सवाल मेरे मन को अक्सर मथ जाता था। कौन-सी थी वह प्रेरणा जिससे कैशोर्य में ही बेलजियम में अपना भरापूरा परिवार छोड़कर मानव सेवा के लिए निकल पड़े होंगे बुल्के? क्या कभी याद नहीं आती घर की? रामचंद्र तो 14 वर्ष के वनवास के बाद घर लौट आए थे, पर बुल्के तो आजीवन प्रवास ले बैठे और ऐसा प्रवास कि अब भारत, भारत की संस्कृति, भारत की भाषा उन्हें भारतीयों से भी अधिक प्रिय हो

चुकी है। सारी एशियाई भाषाओं के साहित्य को छानकर उन्होंने रामकथा के जितने आयाम खोज निकाले हैं, वह क्या कोई और कर पाया? अंग्रेज़ी-हिंदी कोश जैसा सटीक, प्रामाणिक और उपयोगी कोश उन्होंने बनाया, क्या कोई और बना पाया? और साथ ही जीसस की सेवा में भी कोई कोताही नहीं। यहाँ तक कि बाइबल का नया हिंदी अनुवाद भी कर डाला।

मेरी वर्षगाँठ संयोग से क्रिसमस के दिन पड़ती है। उस दिन वे कही भी हों, क्रिसमस की अर्धरात्रि की विशेष प्रार्थना में जिन प्रियजनों को विशेष रूप से स्मरण कर लेते थे उनमें मैं ज़रूर रहता था। उनका एक पत्र हर साल वर्षगांठ के आसपास ज़रूर आता था आशीर्वादों से भरा और सूचित करते हुए कि "क्रिसमस के दिन तुम्हारे लिए प्रार्थना करूँगा"। और पत्र चाहे जन्मदिन के बाद मिले लेकिन उस दिन मैं कहीं भी होऊँ मेरे मन में बजने लगती हैं चर्च की घंटियाँ, और खिल जाते हैं नीले बरबीना के फूल, मरियम के चरणों के पास बिखेरे हुए और एक पवित्र अनजानी भोर का-सा वातावरण दिनभर बना रहता है, वैसी ही भोर जिसमें मैं उनके साथ मुँह-अँधेरे उठकर दरभंगा के गिरजाघर में पूजा कराने गया था।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. डॉ. अमरनाथ झा ने ओरियंटल कांग्रेस का उद्घाटन किससे करवाया?
2. लेखक ने पं. माखनलाल चतुर्वेदी का गुणगान किन शब्दों में किया है?
3. कामिल बुल्के से सुबह पूजा करा देने की प्रार्थना किसने की?
4. लेखक का कामिल बुल्के के साथ स्नेह संबंध कैसे जुड़ गया?
5. फ़ादर बुल्के के शोध का विषय क्या था?

6. फ़ादर एक्सट्रास और फ़ादर भट्ट के साथ लेखक की चर्चा के विषय क्या थे?

लिखित

1. "बुल्के से जुड़कर मैं उस पूरे संसार से जुड़ गया था।" इस वाक्य में किस संसार की ओर संकेत किया गया है?
2. फ़ादर बुल्के ने कौन-कौन से महत्त्वपूर्ण कार्य किए?
3. लेखक के साथ बुल्के के पारिवारिक संबंधों का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
4. इस पाठ में फ़ादर बुल्के की कौन-कौन सी विशेषताएँ उभरकर आई हैं?
5. टिप्पणी कीजिए कि फ़ादर कामिल बुल्के जन्म से भारतीय न होकर भी सच्चे भारतीय हैं।

भाषा-अध्ययन

पढ़िए और समझिए :

1. दूसरा दुबला, घने बाल, कुरता-पाजामा, सदरी, छोटी मगर तेज़, चमकदार आँखें
   दूसरा व्यक्ति दुबला और साँवला है, उसके घने बाल हैं। वह कुरता-पाजामा और सदरी पहने है। उसकी छोटी मगर तेज और चमकदार आँखें हैं।
2. धार्मिक होना तो दूर, लगभग नास्तिक ही समझिए।
   आप यह समझ लीजिए मैं धार्मिक तो हूँ नहीं, लगभग नास्तिक ही हूँ।
3. अंग्रेज़ी-हिंदी कोश जैसा सटीक, प्रामाणिक और उपयोगी कोश उन्होंने बनाया, क्या कोई और बना पाया?
   उन्होंने अंग्रेज़ी-हिंदी कोश नामक सटीक प्रामाणिक और उपयोगी कोश बनाया वैसा कोश कोई और नहीं बना पाया।
4. पर इस लड़के से क्या कहिए?
   पर यह लड़का अपने व्यवहार में सबसे अलग है।
5. ईश्वर है या नहीं, यह तो ईश्वर ही जाने?
   यह बात भी ईश्वर ही जानता है कि ईश्वर है या नहीं (यानी हम मनुष्य यह बात नहीं जानते)

1. उदाहरण के अनुसार विलोम शब्द बनाइए :

उदाहरण :

पवित्र-अपवित्र / अर्थ-अनर्थ

उपयोगी	....	सामान्य	....
प्रसन्न	....	आवश्यक	....
आदर	....	प्रिय	....
प्रामाणिक	....	इच्छा	....

2. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्द के स्थान पर उसके पर्याय का उपयोग करते हुए वाक्य बदलिए :

(क) बुल्के जी पूजा के शुद्ध वस्त्रों में चर्च में आए।

(ख) दोनों में प्रगाढ़ मित्रता थी।

(ग) गुफ़ा में माता मरियम की सौम्य संगमरमरी प्रतिमा खड़ी थी।

(घ) यह मित्रता आजीवन बंधुता में परिणत हो गई।

3. निम्नलिखित वाक्यों का उदाहरण के अनुसार रूपांतरण कीजिए :

माखनलाल चतुर्वेदी के भाषण ने विद्वानों को मंत्रमुग्ध कर दिया। ⇒ माखनलाल चतुर्वेदी के भाषण से विद्वान मंत्रमुग्ध हो गए।

1. कामिल बुल्के की पूजा ने लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया।
2. गांधीजी के लंबे उपवास ने देशवासियों को स्तब्ध कर दिया।
3. विनोबाजी की पदयात्रा ने ग्रामवासियों को बहुत प्रभावित कर दिया।
4. मदारी ने अपने खेल से बच्चों को खुश कर दिया।

4. उदाहरण के अनुसार रिक्त स्थान भरिए :

(जम जाना, ले बैठना, टूट जाना, डाल लेना, कर डालना)

⇒ वह .... है। (गिर जाना) – वह गिर गया है।

1. कंगूरों पर बरसात में काई .... है।
2. सीढ़ियाँ जगह-जगह से .... हैं।
3. बाइबिल का नया हिंदी अनुवाद भी .... है।

4. अंगोछे पर एक फटी कमीज़ भी ……………… है।
5. बुल्के तो आजीवन प्रवास ……………… है।

5. **निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए :**
1. कुछ पादरी भी नहीं जो पूजा कराए।
2. उन्हीं में से एक कमरे पर रहते थे, फ़ादर कामिल बुल्के।
3. मैं उस लड़के को चर्च के बाहर मिला।
4. मेरी वर्षगाँठ संयोग से क्रिसमस का दिन पड़ती है।

6. **अपनी डायरी के रूप में किसी व्यक्ति के बारे में निम्नलिखित स्थितियों में छः वाक्य बनाइए :**
(क) कद और रूपरंग
(ख) पहनावा
(ग) चेहरे का भाव
(घ) बोलने का तरीका
(ङ) स्वभाव
(च) उस व्यक्ति के प्रति आपकी भावना

योग्यता-विस्तार

लेखक धर्मवीर भारती गद्यकार होने के साथ-साथ कवि भी थे। उनकी कुछ कविताएँ पढ़िए और जो कविता रोचक लगे, उसे कक्षा में सुनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

क्वार	–	आश्विन का महीना, लगभग (आधे सितंबर से आधे अक्तूबर तक का समय)
खुनकी	–	हलकी ठंडक
निर्जन	–	सुनसान
कंगूरा	–	बुर्ज, छत पर बनी छोटी-छोटी गुंबदाकार रचनाएँ
पदचाप	–	पैरों के रखने की आवाज़
शुभ्र	–	साफ, सफेद
गौरांग	–	गोरे अंगों वाला, यूरोपियन
इर्द-गिर्द	–	आसपास
छितरी	–	बिखरी हुई

पोखर	–	छोटा तालाब
आत्मदान	–	अपना बलिदान
विद्यापति	–	मैथिली के प्रसिद्ध कवि
जनक	–	पुराणों में वर्णित राजा जनक, सीता के पिता
आच्छादित	–	ढका हुआ
डेलीगेट	–	प्रतिनिधि, भाग लेने के लिए नियुक्त
उद्घाटन	–	शुभारंभ
मंत्रमुग्ध करना	–	मोह लेना
गौरवान्वित	–	प्रतिष्ठित
मनीषी	–	विद्वान, चिंतक
अग्रज	–	बड़ा भाई
अंतः प्रकोष्ठ	–	मकान का भीतरी कमरा
सौम्य	–	सुशील, अच्छे स्वभाव वाला
प्रेरणादाई	–	प्रेरणा देने वाला, आगे बढ़ाने वाला
कलात्मक	–	सजावटी कला से पूर्ण
संगमरमरी	–	संगमरमर जैसा दूधिया सफेद
नास्तिक	–	जो व्यक्ति ईश्वर का अस्तित्व नहीं मानता
बरबीना	–	नीले फूलों वाली एक वनस्पति
रहस्यमय	–	रहस्य से भरा
वत्सल	–	प्यार से भरा
सलीब	–	क्रूस जिस पर ईसा को फाँसी दी गई थी
वात्सल्य	–	संतान के प्रति प्रेम
ठुमक चलत रामचंद्र बाजत पैजनियाँ	–	राम के बचपन पर तुलसीदास का कथन जिसका आशय है। शिशु राम ठुमक-ठुमक कर चल रहे हैं और उनके पैरों में बँधे घुँघरू बज रहे हैं।
कैशोर्य	–	किशोरावस्था, 10-12 वर्ष से 15-16 वर्ष तक की आयु।
प्रामाणिक	–	प्रमाणों से पुष्ट
भोर	–	सुबह
मुँह अँधेरे	–	बड़े सवेरे, तड़के

7. जगदीश चंद्र बसु

(1858–1957)

प्रसिद्ध वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु का जन्म ढाका (बंगलादेश) में हुआ था। बचपन में दादी माँ से रामायण-महाभारत की कथाएँ सुनते हुए, प्रकृति का अवलोकन करते हुए तथा पेड़-पौधों, जीव-जंतुओं से प्रेम करते हुए उनकी शिक्षा प्रारंभ हुई। सन् 1880 में उच्चतर शिक्षा के लिए वे इंग्लैंड गए। वहाँ से प्रकृति विज्ञान में बी.एस.सी. की परीक्षा पास की। भारत लौटकर उन्होंने प्रेसिडेंसी कॉलेज में अध्यापन कार्य किया। उसी समय से वे आविष्कार और शोधकार्य में जुट गए। वैज्ञानिक के रूप में उन्होंने अनेक विदेश यात्राएँ की। उन्हें 'सर' की उपाधि व अनेक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हुए।

जगदीश चंद्र बसु की विज्ञान संबंधी दस पुस्तकें प्रकाशित हैं। उनके बांग्ला निबंध ***अव्यक्त*** *में संग्रहित हैं बच्चों के लिए* ***किशोर रचना समग्र*** *नाम से प्रकाशित पुस्तक बहुत चर्चित है।*

जगदीश चंद्र बसु ने विज्ञान-शास्त्र में जीव और अजीव के बीच भेदों को बड़ी सहज भाषा में बखूबी मिटा दिया है। विज्ञान जैसे नीरस विषय को भी चित्रात्मक साहित्यिक स्वरूप प्रदान किया है।

पेड़ की बात *निबंध में वृक्ष की उत्पत्ति, विकास और उसकी उपयोगिता का वर्णन है। लेखक ने इस बात पर बल दिया है कि यदि हम पेड़ पौधों की उपेक्षा करेंगे तो हमारे विकास की गति भी प्रभावित होगी। इसलिए हमें अपनी आवश्यकताओं के प्रति सचेत रहना चाहिए।*

पेड़-पौधों का संबंध मनुष्य के सुखमय जीवन से भी है। अपने मूल रूप में मनुष्य की जीवन-यात्रा भी पेड़-पौधों से अलग नहीं होती, परंतु प्रकृति से दूर हो जाने के कारण उनके जीवन में बहुत से परिवर्तन आ गए। 'पेड़ की बात' को लेखक ने वैज्ञानिक आधार के साथ प्रस्तुत किया है।

पेड़ की बात

मिट्टी के नीचे बहुत दिनों तक बीज पड़े रहे। महीना-दर-महीना इसी तरह बीतता गया। सर्दियों के बाद वसंत आया। उसके बाद वर्षा की शुरूआत में दो-एक दिन पानी बरसा। अब और छिपे रहने की ज़रूरत नहीं थी! मानों बाहर से कोई शिशु को पुकार रहा हो, 'और सोए मत रहो, ऊपर उठ जाओ, सूरज की रोशनी देखो।' आहिस्ता-आहिस्ता बीज का ढक्कन दरक गया, दो सुकोमल पत्तियों के बीच अंकुर बाहर निकला। अंकुर का एक अंश नीचे माटी में मजबूती से गड़ गया और दूसरा अंश माटी भेद कर ऊपर की ओर उठा। क्या तुमने अंकुर को उठते देखा है? जैसे कोई शिशु अपना नन्हा-सा सर उठाकर आश्चर्य से नई दुनिया को देख रहा है!

गाछ का अंकुर निकलने पर जो अंश माटी के भीतर प्रवेश करता है, उसका नाम जड़ है और जो अंश ऊपर की ओर बढ़ता है, तना कहते हैं। सभी गाछ-बिरछ में 'जड़ व तना' ये दो भाग मिलेंगे। यह एक आश्चर्य की बात है – कि गाछ-बिरछ को जिस तरह भी रखो, जड़ नीचे की ओर जाएगी व तना ऊपर की ओर उठेगा। एक गमले में पौधा था परीक्षण करने के लिए कुछ दिन गमले को औंधा लटकाए रखा। पौधे का सर नीचे की तरफ़ लटका रहा और जड़ ऊपर की ओर रही। दो-एक दिन बाद क्या देखता हूँ कि जैसे पौधे को भी सब भेद मालूम हो गया हो। उसकी पत्तियाँ और डालियाँ टेढ़ी होकर ऊपर की तरफ उठ

आई तथा जड़ घूमकर नीचे की ओर लटक गई। तुमने कई बार सर्दियों में मूली काट कर बोई होगी। देखा होगा, पहले पत्ते व फूल नीचे की ओर रहे। कुछ दिन बाद देखोगे कि पत्ते और फूल ऊपर की ओर उठ आए हैं।

हम जिस तरह भोजन करते हैं, गाछ-बिरछ भी उसी तरह भोजन करते हैं। हमारे दाँत हैं, कठोर चीज़ खा सकते हैं। नन्हें बच्चों के दाँत नहीं होते वे केवल दूध पी सकते हैं। गाछ-बिरछ के भी दाँत नहीं होते, इसलिए वे केवल तरल द्रव्य या वायु से भोजन ग्रहण करते हैं। गाछ-बिरछ जड़ के द्वारा माटी से रस-पान करते हैं। चीनी में पानी डालने पर चीनी गल जाती है। माटी में पानी डालने पर उसके भीतर बहुत-से द्रव्य गल जाते हैं। गाछ-बिरछ वे ही तमाम द्रव्य सोखते हैं। जड़ों को पानी न मिलने पर पेड़ का भोजन बंद हो जाता है, पेड़ मर जाता है।

खुर्दबीन से अत्यंत सूक्ष्म पदार्थ स्पष्टतया देखे जा सकते हैं। पेड़ की डाल अथवा जड़ का इस यंत्र द्वारा परीक्षण करके देखा जा सकता है कि पेड़ में हज़ारों-हज़ार नल हैं। इन्हीं सब नलों के द्वारा माटी से पेड़ के शरीर में रस का संचार होता है।

इसके अलावा गाछ के पत्ते हवा से आहार ग्रहण करते हैं। पत्तों में अनगिनत छोटे-छोटे मुँह होते हैं। खुर्दबीन के जरिए अनगिनत मुँह पर अनगिनत होंठ देखे जा सकते हैं। जब आहार करने की जरूरत न हो तब दोनों होंठ बंद हो जाते हैं। जब हम श्वास लेते हैं और उसे बाहर निकालते हैं तो एक प्रकार की विषाक्त वायु बाहर निकलती है उसे 'अंगारक' वायु कहते हैं। अगर यह जहरीली हवा पृथ्वी पर इकट्ठी होती रहे तो तमाम जीव-जंतु कुछ ही दिनों में उसका सेवन करके नष्ट हो सकते हैं। ज़रा विधाता की करुणा का चमत्कार तो देखो – जो जीव-जंतुओं के लिए जहर है, गाछ-बिरछ उसी का सेवन करके उसे

पूर्णतया शुद्ध कर देते हैं। पेड़ के पत्तों पर जब सूर्य का प्रकाश पड़ता है, तब पत्ते सूर्य ऊर्जा के सहारे 'अंगारक' वायु से अंगार निःशेष कर डालते हैं। और यही अंगार बिरछ के शरीर में प्रवेश करके उसका संवर्धन करते हैं। पेड़-पौधे प्रकाश चाहते हैं। प्रकाश न मिलने पर बच नहीं सकते। गाछ-बिरछ की सर्वाधिक कोशिश यही रहती है कि किसी तरह उन्हें थोड़ा-सा प्रकाश मिल जाए। यदि खिड़की के पास गमले में पौधे रखो, तब देखोगे कि सारी पत्तियाँ व डालियाँ अंधकार से बचकर प्रकाश की ओर बढ़ रही हैं। वन में जाने पर पता लगेगा कि तमाम गाछ-बिरछ इस होड़ में सचेष्ट हैं कि कौन जल्दी से सर उठाकर पहले प्रकाश को झपट ले। बेल-लताएँ छाया में पड़ी रहने से प्रकाश के अभाव में मर जाएँगी। इसीलिए वे पेड़ों से लिपटती हुई, निरंतर ऊपर की ओर अग्रसर होती रहती हैं।

अब तो समझ गए होंगे कि प्रकाश ही जीवन का मूलमंत्र है। सूर्य-किरण का परस पाकर ही पेड़ पल्लवित होता है। गाछ-बिरछ के रेशे-रेशे में सूरज की किरणें आबद्ध हैं। ईंधन को जलाने पर जो प्रकाश व ताप बाहर प्रकट होता है। वह सूर्य की ही ऊर्जा है। गाछ-बिरछ व समस्त हरियाली प्रकाश हथियाने के जाल हैं। पशु-डाँगर, पेड़-पौधे या हरियाली खाकर अपने प्राणों का निर्वाह करते हैं। पेड़-पौधों में जो सूर्य का प्रकाश समाहित है वह इसी तरह जंतुओं के शरीर में प्रकाश करता है। अनाज व सब्जी न खाने पर हम भी बच नहीं सकते हैं। सोच कर देखा जाए तो हम भी प्रकाश की खुराक पाकर ही जीवित हैं।

कोई पेड़ एक वर्ष के बाद ही मर जाता है। सब पेड़ मरने से पहले संतान छोड़ जाने के लिए व्यग्र हैं। बीज ही गाछ-बिरछ की संतान है। बीज की सुरक्षा व सार-सँभाल के लिए पेड़ फूल की पंखुड़ियों से घिरा एक छोटा-सा घर तैयार करता है। फूलों

से आच्छादित होने पर पेड़ कितना सुंदर दिखलाई पड़ता है। जैसे फूल-फूल के बहाने वह स्वयं हँस रहा हो। फूल की तरह सुंदर चीज़ और क्या है? ज़रा सोचो तो, गाछ-बिरछ तो मटमैली माटी से आहार व विषाक्त वायु से अंगारक ग्रहण करते हैं, फिर इस अपरूप उपादान से किस तरह ऐसे सुंदर फूल खिलते हैं। कथा सुनी होगी – स्पर्शमणि की पारस पत्थर की, जिसके परस से लोहा सोना हो जाता है। मेरे खयाल से माँ की ममता ही वह मणि है। संतान पर स्नेह निछावर होते ही फूल खिलखिला उठते हैं। ममता का परस पाते ही मानो माटी व 'अंगार' के फूल बन जाते हैं।

पेड़ों पर मुसकराते फूल देखकर हमें कितनी खुशी होती है! शायद पेड़ भी कम प्रफुल्लित नहीं होते! खुशी के मौके पर हम अपने परिजनों को निमंत्रित करते हैं। उसी प्रकार फूलों की बहार छाने पर गाछ-बिरछ भी अपने बंधु-बांधवों को बुलाते हैं। स्नेहसिक्त वाणी में पुकार सकते हैं, 'कहाँ हो मेरे बंधु', मेरे बांधव आज मेरे घर आओ। यदि रास्ता भटक जाओ, कहीं घर पहचान नहीं सको, इसलिए रंग-बिरंगे फूलों के निशान लगा रखे हैं। ये रंगीन पंखुड़ियाँ दूर से देख सकोगे।' मधु-मक्खी व तितली के साथ बिरछ की चिरकाल से घनिष्ठता है। वे दल-बल सहित फूल देखने आती हैं। कुछ पतंगे दिन के समय पक्षियों के डर से बाहर नहीं निकल सकते। पक्षी उन्हें देखते ही खा जाते हैं, इसलिए रात का अँधेरा घिरने तक वे छिपे रहते हैं। शाम होते ही उन्हें बुलाने की खातिर फूल चारों तरफ सुगंध-ही-सुगंध फैला देते हैं।

गाछ अपने फूलों में शहद का संचय करके रखते हैं। मधु-मक्खी व तितली बड़े चाव से मधुपान करती हैं। मधु-मक्खी के आगमन से बिरछ का भी उपकार होता है। तुम लोगों ने फूल में पराग-कण देखे होंगे। मधु-मक्खियाँ एक फूल के पराग-कण दूसरे

फूल पर ले जाती हैं। पराग-कण के बिना बीज पक नहीं सकता।

इस प्रकार फूल में बीज फलता है। अपने शरीर का रस पिलाकर बिरछ बीजों का पोषण करता है। अब अपनी जिंदगी के लिए उसे मोह-माया का लोभ नहीं है। तिल-तिल कर संतान की खातिर सब-कुछ लुटा देता है। जो शरीर कुछ दिन पहले हरा-भरा था, अब वह बिल्कुल सूख गया है। अपने ही शरीर का भार उठाने की शक्ति क्षीण हो चली है। पहले हवा बयार करती हुई आगे बढ़ जाती थी। पत्ते हवा के संग क्रीड़ा करते थे। छोटी-छोटी डालियाँ ताल-ताल पर नाच उठती थीं। अब सूखा पेड़ हवा का आघात सहन नहीं कर सकता। हवा का बस एक थपेड़ा लगते ही वह थर-थर काँपने लगता है। एक-एक करके सभी डालियाँ टूट पड़ती हैं। अंत में एक दिन अकस्मात पेड़ जड़ सहित ज़मीन पर गिर पड़ता है।

इस तरह संतान के लिए अपना जीवन न्योछावार करके बिरछ समाप्त हो जाता है।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. लेखक ने अंकुर के पनपने की तुलना नन्हे शिशु से क्यों की है?
2. वृक्ष के कौन-से दो भाग होते हैं?
3. वृक्षों को भोजन किस प्रकार प्राप्त होता है?
4. वृक्ष कब मर जाता है?
5. 'अंगारक वायु' किसे कहते हैं? इससे क्या हानि होती है?
6. लेखक ने वृक्ष की संतान किसे कहा है?

लिखित

1. "गाछ-बिरछ को जिस भी तरह रखो, जड़ नीचे की ओर और तना ऊपर की ओर उठेगा।" यह सिद्ध करने के लिए लेखक ने क्या परीक्षण किया?
2. वृक्ष 'अंगारक वायु' से होने वाली हानि से हमें किस प्रकार बचाते हैं?
3. वृक्ष बीज की सुरक्षा किस प्रकार करता है?
4. मधुमक्खियों और तितलियों की वृक्ष के साथ चिरकाल से घनिष्ठता है। कैसे?
5. लेखक ने वृक्ष और मानव जीवन में क्या समानताएँ दर्शाई हैं?
7. आशय स्पष्ट कीजिए
   - प्रकाश ही जीवन का मूलमंत्र हैं।
   - अब अपनी ज़िंदगी के लिए उसे माया-मोह का लोभ नहीं है।

भाषा-अध्ययन

(क) और सोए मत रहो, ऊपर उठ जाओ, सूरज की रोशनी देखो।
मिट्टी के नीचे दबे मत रहो अब बाहर निकलो और सूरज की रोशनी की ओर देखो।

(ख) गाछ-बिरछ व समस्त हरियाली प्रकाश हथियाने के जाल हैं।
पेड़-पौधे और हरे-भरे भू-भाग रोशनी पाने के लिए ही फैले हुए हैं।

(ग) तिल-तिल कर संतान की खातिर सब कुछ लुटा देता है।
अपनी संतान के लिए वह धीरे-धीरे अपना सब न्योछावर कर देता है।

(घ) गाछ-बिरछ के रेशे-रेशे में सूरज की किरणें आबद्ध हैं।
पेड़-पौधों के सभी भाग अपने अंदर सूरज की किरणों को समेटे रहते हैं।

2. निम्नलिखित शब्दों के मानक रूप लिखिए :

बिरछ	....	माटी	....
निछावर	....	परस	....
सूरज	....	दुरजन	....

3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्द का विलोम शब्द रिक्त स्थान में भरिए :

(क) तुमने जो लकीर खींची है वह टेढ़ी है, इसे .... करो।

(ख) इस उपन्यास का आदि तो अच्छा है पर .... अच्छा नहीं है।

(ग) हमारे घर में नीचे तीन कमरे हैं और .... दो।

(घ) बरसात में यह सूखा पेड़ .... हो जाएगा।

(ङ) हमें धन व्यय करने के साथ ही उसका .... भी करना चाहिए।

4. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :

शाम होते ही पक्षी अपनी घोंसलों में लौट जाते हैं। ⇒ शाम होने के तुरंत बाद पक्षी अपने घोंसलों में लौट जाते हैं।

(क) हवा का थपेड़ा लगते ही पेड़ काँपने लगते हैं।

(ख) सूरज निकलते ही चारों ओर प्रकाश फैल जाता है।

(ग) बरसात होते ही ज़मीन से अंकुर फूट पड़ते हैं।

(घ) गर्मी आते ही पसीना छूटने लगता है

(ङ) पौधों पर फूल आते ही भँवरे मँडराने लगते हैं।

5. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :

वृक्ष भी हमारी तरह साँस लेते हैं। ⇒ जिस तरह हम साँस लेते हैं उसी तरह वृक्ष भी साँस लेते हैं।

(क) फूल भी हमारी तरह खिलखिलाते हैं।

(ख) तितलियाँ भी हमारी तरह नाचती हैं।

(ग) मधुमक्खियाँ भी हमारी तरह गाती हैं।

(घ) भौंरे भी हमारी तरह झूमते हैं।

(ङ) पेड़ भी हमारी तरह काँपते हैं।

6. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलिए :

शायद तुमने सर्दियों में मूली बोई हो। ⇒ तुमने सर्दियों में मूली बोई होगी।

(क) शायद तुम मेरी बात समझ गए हो।
(ख) शायद तुमने यह कथा सुनी हो।
(ग) शायद तुमने फूलों में पराग-कण देखे हों।
(घ) शायद तुमने नेताजी का नाम सुना हो।
(ङ) शायद उसने मेरी शिकायत की हो।

योग्यता-विस्तार

1. 'पेड़ की कहानी : उसकी जुबानी' विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।
2. पेड़ों की कटाई रोकने के लिए सरकार क्या कदम उठा रही है और एक नागरिक के नाते आप उसमें क्या सहयोग दे सकते हैं, इस पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

महीना-दर-महीना – प्रतिमास
गाछ – पेड़, पौधा
शुरुआत – प्रारंभ
आहिस्ता-आहिस्ता – धीरे-धीरे
दरकना – दरार पड़कर टूट जाना, फटना
भेदना – तोड़ना
अंश – भाग
भेद – रहस्य
तरल – द्रव, बहने वाली
बिरछ – वृक्ष
द्रव्य – पदार्थ
खुराक – भोजन
संचार – आना-जाना
खुर्दबीन – सूक्ष्मदर्शी
विषाक्त – विषैली
अंगारक वायु – कार्बन-डाइ-आक्साइड गैस
ऊर्जा – शक्ति

संवर्धन	–	बढ़ना
अग्रसर होना	–	आगे बढ़ना
पल्लवित होना	–	पत्ते निकलना
हथियाना	–	कब्जे में करना
डांगर	–	गाय-भैंस आदि पशु
स्नेहसिक्त	–	प्यार से भरा
परस	–	स्पर्श
समाहित	–	शामिल
घनिष्ठता	–	गहरी दोस्ती
अकस्मात	–	अचानक
सचेष्ट	–	प्रयत्नशील
आबद्ध	–	बँधा हुआ
व्यग्र	–	व्याकुल, परेशान
आच्छादित	–	ढका हुआ
अपरूप	–	असुंदर, भद्दा
उपादान	–	वस्तु, साधन
वन	–	जंगल
प्रफुल्लित	–	प्रसन्न
आघात	–	चोट
स्पर्शमणि	–	पारस पत्थर

8. भदंत आनंद कौसल्यायन

(1905–1993)

भदंत आनंद कौसल्यायन का जन्म अंबाला जिले (हरियाणा) के सोहाना गाँव में हुआ। वे बौद्ध भिक्षु थे और उन्होंने देश-विदेश का काफ़ी भ्रमण किया। पर्यटक होने के कारण उनके यात्रा वृत्तांतों में स्थानों और दृश्यों का मनोरम चित्रण मिलता है।

बौद्ध-भिक्षु के रूप में उनका कार्य सराहनीय रहा है। हिंदी भाषा और साहित्य की सेवा में भी उनका उल्लेखनीय योगदान है।

कौसल्यायन जी की बीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं। ***भिक्षु के पत्र, जो न भूल सका, आह! ऐसी दरिद्रता, रेल का टिकट, बहाने बाज़ी*** *आदि रचनाएँ विशेष उल्लेखनीय हैं। इन्होंने महत्त्वपूर्ण बौद्ध ग्रंथों का पाली भाषा से हिंदी में अनुवाद किया।*

पर्यटन तथा संगठन के कार्यों में रुचि रहने के कारण कौसल्यायन जी का अनुभव गहन और विस्तृत था जो उनकी रचनाओं में परिलक्षित होता है। वे गांधी जी के सिद्धांतों और जीवन-शैली से अत्यधिक प्रभावित थे। इनकी भाषा सहज-स्वाभाविक एवं प्रवाहमयी है।

व्यक्ति का पुनर्निर्माण *निबंध में लेखक ने बताया है कि व्यक्ति के निर्माण से ही समाज का निर्माण संभव है। इसके लिए आवश्यक है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने निर्माण की ओर ध्यान दे। व्यक्ति निर्माण के लिए लेखक की दृष्टि में अवगुणों को दूर करना और सद्गुणों को अपनाना महत्त्वपूर्ण है। इनमें भी सद्गुणों को अपनाने की भावना रखने और इस दिशा में प्रयत्न करने पर बल दिया है। भावनाओं में भी सर्वश्रेष्ठ है – 'सभी के प्रति मैत्री, गुणियों के प्रति श्रद्धा, दुखियों के प्रति दया और दुष्टों के प्रति उपेक्षा।' भावना के इन्ही श्रेष्ठ पक्षों को अपनाने का प्रयत्न और अभ्यास व्यक्ति के निर्माण की कुंजी है।*

व्यक्ति का पुनर्निर्माण

आज पुनर्निर्माण की चर्चा है व्यक्ति के नहीं, समाज के; अपने नहीं, दूसरों के। क्या व्यक्ति का पुनर्निर्माण एकदम उपेक्षा की चीज़ है?

यह सत्य है कि व्यक्ति समाज की उपज है, और यदि सारा समाज लूला-लँगड़ा रहे, तो एक व्यक्ति भी सीधा नहीं खड़ा हो सकता। किंतु फिर समाज भी तो व्यक्तियों का ही समूह हैं।

यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने सुधार की ओर ध्यान दे तो पूरे समाज का निर्माण कितना आसान है।

बौद्ध धर्म में सम्यक् व्यायाम के चार अंग कहे गए हैं :

1. इस बात की सावधानी रखना कि अपने में कोई अवगुण न आ जाए।
2. इस बात का प्रयत्न करना कि अपने अवगुण दूर हो जाएँ।
3. इस बात की सावधानी रखना कि अपने सद्गुण चले न जाएँ।
4. इस बात का प्रयत्न करना कि अपने में नए सद्गुण चले आएँ।

बाग में यदि अच्छे फल-फूल न लगवाए जाएँ और ज़मीन को यों ही बेकार पड़ी रहने दिया जाए तो उसमें बेकार के झाड़-झंखाड़ उग ही आएँगे। यदि अवगुणों को दूर करने और सद्गुणों को लाने का उपाय निरंतर नहीं किया जाएगा तो अवगुण बने ही

रहेंगे, और सद्‌गुण नहीं आएँगे। इसलिए यदि इस चतुर्मुखी कार्यक्रम को घटाकर इसके केवल दो अंगों (अवगुणों को दूर करना और सद्‌गुणों को अपनाना) को स्वीकार कर लिया जाए तो भी मैं समझता हूँ भगवान बुद्‌ध का उद्‌देश्य पूरा हो सकता है।

अवगुणों को दूर करना और सद्‌गुणों को अपनाना ये दोनों भी क्या अर्थ की दृष्टि से एक नहीं हैं? इसका उत्तर हाँ और नहीं दोनों ही देना होगा।

एक आदमी को व्यर्थ बक-बक करने की आदत है। यदि वह अपनी आदत को छोड़ता है, तो वह अपने व्यर्थ बोलने के अवगुण को छोड़ता है। किंतु साथ ही और अनायास ही वह मितभाषी होने के सद्‌गुण को अपनाता चला जाता है। यह तो हुआ 'हाँ' पक्ष का उत्तर। किंतु एक दूसरे आदमी को सिगरेट पीने का अभ्यास है। वह सिगरेट पीना छोड़ता है और उसके बजाए दूध से प्रेम करना सीखता है, तो सिगरेट पीना छोड़ना एक अवगुण को छोड़ना है और दूध से प्रेम जोड़ना एक सद्‌गुण को अपनाना है। दोनों ही भिन्न वस्तुएँ हैं – पृथक-पृथक।

अवगुण को दूर करने और सद्‌गुण को अपनाने के प्रयत्न में, मैं समझता हूँ कि अवगुणों को दूर करने के प्रयत्नों की अपेक्षा सद्‌गुणों को अपनाने का ही महत्त्व अधिक है। किसी कमरे में गंदी हवा और स्वच्छ वायु एक साथ रह ही नहीं सकती। कमरे में हवा रहे ही नहीं, यह तो हो ही नहीं सकता। गंदी हवा को निकालने का सबसे अच्छा उपाय एक ही है सभी दरवाज़े और खिड़कियाँ खोलकर स्वच्छ वायु को अंदर आने देना।

अवगुणों को भगाने का सबसे अच्छा उपाय है, सद्‌गुणों को अपनाना।

ऐसी बातें पढ़-सुनकर हर आदमी वह बात कहता सुनाई देता है जो किसी समय बेचारे दुर्योधन के मुँह से निकली थी :

"धर्म जानता हूँ, उसमें प्रवृत्ति नहीं।

अधर्म जानता हूँ, उससे निवृत्ति नहीं।"

एक आदमी को कोई कुटेव पड़ गई – सिगरेट पीने की ही सही। अत्यधिक सिनेमा देखने की ही सही। बेचारा बहुत संकल्प करता है, बहुत कसमें खाता है कि अब सिगरेट न पीऊँगा, अब सिनेमा देखने न जाऊँगा, किंतु समय आने पर जैसे आप ही आप उसके हाथ सिगरेट तक पहुँच जाते हैं और सिगरेट उसके मुँह तक। बेचारे के पाँव सिनेमा की ओर जैसे आप ही आप बढ़े चले जाते हैं।

क्या सिगरेट न पीने का और सिनेमा न देखने का उसका संकल्प सच्चा नहीं? क्या उसने झूठी कसम खाई है? क्या उसके संकल्प की दृढ़ता में कमी है? नहीं, उसका संकल्प तो उतना ही दृढ़ है जितना किसी का हो सकता है। तब उसे बार-बार असफलता क्यों होती है?

इस असफलता का कारण और सफलता का रहस्य कदाचित इस एक ही उदाहरण से समझ में आ जाए।

ज़मीन पर एक छः इंच या एक फुट लंबा-चौड़ा लकड़ी का तख्ता रखा है। यदि आपसे उस पर चलने के लिए कहा जाए तो आप चल सकेंगे? क्यों नहीं? बड़ी आसानी से। अब इसी तख्ते के एक सिरे को किसी मकान की छत पर रख दिया जाए और शेष तख्ते को यों ही आकाश में आगे बढ़ा दिया जाए और तब आपसे इसी तख्ते पर चलने के लिए कहा जाए तो क्या आप तब भी उस पर चल सकेंगे? डर लगेगा। नहीं चल सकेंगे।

कोई पूछे क्यों? आप इसके अनेक कारण बताएँगे। सच्चा कारण एक ही है। आप नहीं चल सकते, क्योंकि आप समझते हैं

आप नहीं चल सकते। यदि आप विश्वास कर लें कि आप चल सकते हैं, और उसी लकड़ी के तख्ते को थोड़ा-थोड़ा ज़मीन से ऊपर उठाते हुए उसी पर चलने का अभ्यास करें तो आप उस पर बड़े आराम से चल सकेंगे। सरकस वाले पतले-पतले तारों पर कैसे चल लेते हैं? वे विश्वास करते हैं कि वे चल सकते हैं, तदनुसार अभ्यास करते हैं और वे चल ही लेते हैं।

यदि आप किसी अवगुण को दूर करना चाहते हैं, तो उससे दूर रहने के दृढ़ संकल्प करना छोड़िए, क्योंकि जब आप उससे दूर-दूर रहने की कसमें खाते हैं, तब भी आप उसी का चिंतन करते हैं। चोरी न करने का संकल्प भी चोरी का ही संकल्प है। पक्ष में न सही, विपक्ष में सही। है तो चोरी के ही बारे में। चोरी न करने की इच्छा रखने वाले को चोरी के संबंध में कोई संकल्प-विकल्प नहीं करना चाहिए।

हम यदि अपने संकल्प-विकल्पों द्वारा अपने अवगुणों को बलवान न बनाएँ तो हमारे अवगुण अपनी मौत आप मर जाएँगे।

आपकी प्रकृति चंचल है, आप अपने 'गंभीर स्वरूप' की भावना करें। यथावकाश अपने मन में 'गंभीर स्वरूप' का चित्र देखें। अचिरकाल में ही आपकी प्रकृति बदल जाएगी।

यदि आपकी प्रकृति अस्वस्थ है तो आप अपने 'स्वस्थ स्वरूप' की भावना करें और यथावकाश अपने मन में 'स्वस्थ स्वरूप' का चित्र देखें। अचिरकाल में ही आपकी प्रकृति बदल जाएगी।

यदि आपकी प्रकृति अशांत है, तो आप अपने ही 'शांत स्वरूप' की भावना करें, यथावकाश अपने मन में अपने 'शांत स्वरूप' का चित्र देखें। अचिरकाल में ही प्रकृति बदल जाएगी।

शायद आपको गंभीरता, स्वास्थ्य, शांति की उतनी आवश्यकता ही नहीं जितनी दूसरी लौकिक चीज़ों की है।

उन चीज़ों की प्राप्ति में यह नियम निश्चयात्मक रूप से सहायक होगा किंतु निर्णायक नहीं।

संसार में प्रत्येक कार्य अनेक कारणों से होता है। यदि दूसरे कारण एकदम प्रतिकूल हों तो अकेली भावना क्या करेगी? कोई तरुण अपने शरीर को बलवान बनाना चाहता है। खाने-पीने के साधारण नियमों का ख़याल नहीं करता, स्वच्छ वायु में नहीं सोता, व्यायाम नहीं करता, केवल भावना के ही बल पर बलवान होना चाहता है, यह असंभव है।

भावना अपना काम करती है, किंतु अकेली भावना खाने-पीने, स्वच्छ वायु और व्यायाम सभी की जगह नहीं ले सकती।

जो बलवान बनने की सच्ची भावना करेगा वह अपने खाने-पीने, स्वच्छ वायु और व्यायाम की चिंता भी करेगा। इन अर्थों में भावना को सर्वार्थ और साधिकार कहा जा सकता है।

सभी भावनाओं में श्रेष्ठ भावना एक ही है, जिसे जैन, बौद्ध, हिंदू सभी ने अपने-अपने धर्म-ग्रंथों में स्थान दिया है –

सभी के प्रति मैत्री,
गुणियों के प्रति श्रद्धा,
दुखियों के प्रति दया,
दुष्टों के प्रति उपेक्षा।

सचमुच इससे बढ़कर ब्रह्म-विचार की कल्पना नहीं की जा सकती।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. लेखक की दृष्टि में आज किसके पुनर्निर्माण की चर्चा है?
2. चंचल प्रकृति वाले व्यक्ति को कैसी भावना रखनी चाहिए?

3. शरीर को बलवान बनाने के लिए भावना के साथ-साथ अन्य किन बातों पर ध्यान देना चाहिए?
4. सभी धर्मग्रंथों में किस श्रेष्ठ भावना को स्थान दिया गया है?

लिखित

1. "प्रत्येक व्यक्ति के अपने सुधार से पूरे समाज का निर्माण आसान हो जाता है।" कैसे?
2. बौद्ध धर्म में सम्यक् व्यायाम के कौन से चार अंग बताए गए हैं? उनमें से केवल दो को ही महत्त्व क्यों दिया गया है?
3. बुरी आदत छोड़ने का दृढ़संकल्प करने पर भी बार-बार असफलता क्यों मिलती है?
4. *सफलता का रहस्य दृढसंकल्प की अपेक्षा आत्म-विश्वास में छुपा है।* इस बात को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने कौन से दो उदाहरण दिए हैं?
5. "अवगुण अपनी मौत आप मर जाएँगे" – इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किस प्रकार के अभ्यास की आवश्यकता है?
6. आशय स्पष्ट कीजिए :
   - अवगुणों को दूर करना और सद्गुणों को अपनाना ये दोनों भी क्या अर्थ की दृष्टि से एक नहीं हैं?
   - यदि दूसरे कारण एकदम प्रतिकूल हों तो अकेली भावना क्या करेगी?

भाषा-अध्ययन

1. **पढ़िए और समझिए :**

   (क) धर्म जानता हूँ, उसमें प्रवृत्ति नहीं।
   मैं धर्म के बारे में जानता हूँ लेकिन मेरी उसमें प्रवृत्ति नहीं है मैं धर्म की बातों का पालन नहीं करता।

   (ख) अधर्म जानता हूँ, उससे निवृत्ति नहीं।
   मैं अधर्म को जानता हूँ लेकिन छोड़ नहीं सकता।

   (ग) कोई पूछे क्यों? आप इसके अनेक कारण बताएँगे।
   अगर कोई आपसे पूछे कि ऐसा क्यों है तो आप इसके कई कारण बताएँगे।

(घ) यह तो हुआ 'हाँ' पक्ष का उत्तर!
यदि आप 'हाँ' कहते हैं तो यह सहमति बताने वाला उत्तर है।

2. **(क) शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए :**

चतुर्मुखी	....	पुनर्निर्माण	....
चतुर्भुज	....	पुनर्विचार	....
निर्विकार	....	बहिर्गमन	....

(ख) संधि करके लिखिए :

निः + द्वंद्व	....	दुः + गुण	....
पुनः + जन्म	....	आविः+ भाव	....
दुः + मुखी	....	निः + जन	....

3. **उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलकर लिखिए :**

> जो दृढ़ संकल्प करेगा वह अवगुण दूर कर सकता है।
> ⇒ अगर कोई संकल्प करे तो वह अवगुण दूर कर सकता है।

(क) जो मेहनत करेगा वह तरक्की कर सकता है।
(ख) जो छात्र ठीक से पढ़ेगा उसे सफलता मिलेगी।
(ग) जो बलवान बनने की सच्ची भावना करेगा वह अपनी तंदुरुस्ती की चिंता भी करेगा।
(घ) जो विश्वास करता है कि वह चल सकता है, वह सच में चल सकता है।
(ङ) जो सोता है वह खोता है।

4. **रेखांकित शब्द के विलोम शब्द का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए :**

(क) मेरी बड़ी लड़की बड़ी <u>शांत</u> है लेकिन छोटी ....।
(ख) मोहन में कई <u>सद्गुण</u> हैं लेकिन सोहन ....।
(ग) इस शहर की सड़कें तो <u>स्वच्छ</u> हैं लेकिन गलियाँ ....।
(घ) मेहनत से <u>सफलता</u> मिलती है और आलस्य से ....।
(ङ) हमारे भीतर आज पेड़-पौधों के प्रति <u>सद्भावना</u> की जगह ....।

5. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलकर लिखिए :

उस आदमी को बकबक करने की आदत है।
⇒ वह आदमी बकबक करने का आदी है।

(क) मेरे पिताजी को टहलने की आदत है।
(ख) मेरी बहन को नई-नई फिल्में देखने का शौक है।
(ग) मोहन को उपन्यास पढ़ने की आदत है।
(घ) मेरे दोनों भाइयों को क्रिकेट मैच देखने का शौक है।
(ङ) मुझे हिंदी बोलने की आदत नहीं है।

6. उदाहरण के अनुसार वाक्य बदलकर लिखिए :

सवेरे उठना अच्छी आदत है
⇒ यह अच्छा है कि हम सवेरे जल्दी उठें।

(क) रोज़ सवेरे व्यायाम करना अच्छी आदत है।
(ख) समय पर काम करना अच्छी आदत है।
(ग) नियमित रूप से पढ़ना अच्छी आदत है।
(घ) देर से पहुँचना अच्छी आदत नहीं है।
(ङ) ज़ोर से बोलना अच्छी आदत नहीं है।

योग्यता-विस्तार

"दृढ़ संकल्प ही सफलता का एकमात्र रहस्य है।" इस विषय पर कक्षा में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

पुनर्निर्माण – फिर से बनाना (पुनः निर्माण)
उपेक्षा – अवहेलना
सम्यक् – भली-भाँति
अवगुण – बुराई, दुर्गुण
सद्गुण – अच्छा गुण
निरंतर – लगातार

मितभाषी	–	कम बोलने वाला
पृथक-पृथक	–	अलग-अलग
प्रवृत्ति	–	रुझान
निवृत्ति	–	छुटकारा (प्रवृत्ति का विलोम)
कुटेव	–	बुरी आदत
संकल्प-विकल्प	–	सोच-विचार
दृढ़	–	पक्का, मजबूत, कठिन
कदाचित्	–	शायद
रहस्य	–	गूढ़ बात, छिपा कारण
तदनुसार	–	उसके अनुसार
चिंतन	–	विचार
प्रकृति	–	स्वभाव
चंचल	–	अस्थिर
यथावकाश	–	अवसर के अनुसार
अचिरकाल	–	शीघ्र
भावना करना	–	ध्यान करना
अस्वस्थ	–	बीमार, रोगी
लौकिक	–	इस लोक का, सांसारिक
निश्चयात्मक	–	दृढ़ संकल्प वाला, पक्के निश्चय वाला
निर्णायक	–	अंतिम
प्रतिकूल	–	उलटा
तरुण	–	युवा
आस्था	–	विश्वास
ब्रह्मविचार	–	महान विचार

9. मोहनदास करमचंद गांधी

(1869–1948)

मोहनदास करमचंद गांधी का जन्म गुजरात के पोरबंदर नगर में हुआ। उन्हें संसार महात्मा गांधी के नाम से जानता है। प्रारंभिक शिक्षा भारत में पाने के बाद उन्होंने इंग्लैंड से बैरिस्टरी की परीक्षा पास की। भारत लौटकर वे वकालत करने लगे।

पोरबंदर के धनी व्यवसायी दादा अब्दुल्ला सेठ के कुछ मुकदमे दक्षिण अफ्रीका में चल रहे थे। उन मुकदमों की पैरवी करने के लिए वे गांधी जी को 1893 में अफ्रीका ले गए।

वहाँ भारतीयों की दुर्दशा देखकर गांधीजी ने उनके उद्धार के लिए आंदोलन चलाया। इस आंदोलन का नाम उन्होंने 'सत्याग्रह' रखा। अफ्रीका में भारतीयों को सत्याग्रह का मंत्र सिखाकर गांधी भारत आए। यहाँ भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए उन्होंने अहिंसा पर आधारित 'सत्याग्रह' को ही अपनाया।

महात्मा गांधी की मातृभाषा गुजराती थी लेकिन उन्होंने हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिया और अपने अधिकांश भाषण हिंदी में ही दिए। उन्होंने दक्षिण भारत में हिंदी-प्रचार की वृहद् योजना बनाई। वे हमेशा कहते थे, "स्वदेशाभिमान को स्थिर रखने के लिए हमें हिंदी सीखनी चाहिए।"

गांधीजी के विपुल साहित्य को भारत सरकार के प्रकाशन विभाग ने संपूर्ण ***गांधी वाङ्मय*** *नाम से छापा है।*

गांधीजी द्वारा मीरा बेन को लिखे गए यहाँ दो पत्र दिए गए हैं। पहला पत्र सन् 1932 को यरवदा जेल से लिखा गया है और दूसरा पत्र सन् 1946 का है।

पहला पत्र गाँधीजी ने मीरा बेन को नोआखाली से लिखा है। वहाँ इन्हीं दिनों वे सांप्रदायिक हिंसा को मिटाने में लगे हुए थे। यह उनकी अहिंसा की परीक्षा का समय था।

दूसरा पत्र गांधीजी के व्यक्तिगत जीवन से संबंधित स्वास्थ्य के उपचार तथा आहार आदि के बारे में है। उन्हीं दिनों बापू ने 21 दिन का अर्ध-उपवास किया था। उन दिनों में उन्होंने फलों के रस के सिवा कुछ नहीं लिया था। इसका कारण बिहार के हिंदू-मुस्लिम दंगे थे। पत्र से यह भी मालूम होता है कि अस्वस्थ होने के बावजूद गांधीजी की दिनचर्या पूर्ववत् बनी रही।

निजी पत्र होते हुए भी इन पत्रों में तत्कालीन राष्ट्रीय गतिविधियों की गहरी छाप देखी जा सकती है।

बापू के पत्र : मीरा बेन के नाम

मीराबेन (स्लेड) के लिए

चि. मीरा,

तुम्हारा पत्र मिला। मुझे ऐसा लगता है कि दाएँ हाथ की गड़बड़ अभी रहेगी। यहाँ आने पर मैं दाएँ हाथ से काफी लिखने लगा था और मुझे जल्दी ही मालूम हो गया था कि इससे कोई लाभ नहीं। यह चुपके से आते हुए बुढ़ापे का एक चिह्न हो सकता है। अगर ऐसा है तो वह न दुख का और न आश्चर्य का ही कारण है। अगर मैंने शरीर को केवल सेवा के साधन और भगवान के मंदिर के तौर पर इस्तेमाल करना सीखा होता, तो बुढ़ापा एक ऐसे सुंदर पके हुए फल की तरह होता, जिसमें उसकी जाति के तमाम गुण पूर्ण रूप में होते हैं। यह तो सौभाग्य ही होगा यदि मैं इतनी-सी असमर्थता भुगतकर बच जाऊँ। लेकिन यह भी व्यर्थ की अटकलबाज़ी है। इन चीज़ों को ध्यान में रखकर निश्चित मर्यादाओं के भीतर उचित सावधानी रखना काफ़ी है। इसलिए तुम हाथ के बारे में चिंता न करना।

उपवास के दिन के सिवा मेरा वजन 106 पौंड बना हुआ है। उपवास के दिन वह कुदरती तौर पर घटकर 103.5 पौंड हो जाता है। 24 घंटों में अच्छी सिंकी हुई डबल रोटी के टोस्ट के 5-6 टुकड़े, 30 खजूर, एक बड़ा कटोरा भर उबली हुई भाजी, सवा चार बजे सुबह दो चम्मच शहद, चुटकी भर सोडा, गरम पानी के साथ और दो बार सोडा और नींबू ठंडे पानी के साथ

ले लेता हूँ। लगभग 2 और बादाम की लुगदी ले लेता हूँ इससे मुझे संतोष मालूम होता है। अगर इससे काम न चला तो फिर दूध लेने लगूँगा। दस्त दिन में दो-तीन बार बिना किसी दवा या अन्य उपाय के साफ़ हो जाता है। नौ बजे से पौने चार बजे तक रात में और दिन के समय 20-20 मिनट करके दो बार सो लेता हूँ । दो दिन में 375 तार कातता हूँ। अभी तक धुनाई शुरू नहीं की है। तुम्हारी भेजी हुई पूनियाँ खतम होती ही नहीं दीखतीं। शेष समय पढ़ने-लिखने में लगाता हूँ। अभी तो रस्किन का 'फॉर्स क्लेविजियन' नामक बहुत ही मानवतापूर्ण ग्रंथ पढ़ रहा हूँ। यह आदमी जो कहता है, वह बिलकुल सच्चे दिल से कहता है। इन पत्रों में उसने वचन और कर्म में आत्माभिव्यक्ति का उत्तम प्रयत्न किया है। पत्रों के लिखने और अब लिखाने में भी बहुत वक्त लगता है। चूँकि मुझे साथी कैदियों को लिखने की इजाज़त है, इसलिए पिछली बार से लिखने का काम कुदरती तौर पर ज़्यादा रहता है। इससे मैं खुश हूँ। हर सप्ताह आरंभ को नैतिक समस्याओं पर कुछ-न-कुछ भेज देता हूँ। और पिछले पाँच दिन से मैंने आश्रम का इतिहास लिखना शुरू कर दिया है।

मेरे बारे में तुम्हारे सब सवालों के जवाब खतम हुए।

बल्लभ भाई और महादेव की तबीयत बहुत अच्छी है।

थोड़े समय तक नमक छोड़ देने से कोई हानि नहीं हो सकती। और जो परिणाम तुमने अपने बारे में देखे हैं वे जरूर होते हैं। दुर्बलता लाने वाला जो परिणाम तुम देख रही हो, वह थोड़े दिन का है और किसी-न-किसी रूप में ताज़ा नीबू लेने से बहुत कुछ मिटाया जा सकता है। मेरे ख्याल से तुम जानती हो कि मैं लगातार 7-8 वर्ष तक बिना नमक के रहा हूँ और उसका कोई दुष्परिणाम नज़र नहीं आया। इस प्रयोग में बहुत लोग मेरे साथ शरीक हुए थे। इसलिए तुम नमक छोड़ने का अपना प्रयोग

उस हद तक लंबा कर सकती हो, जब तक उससे तुम्हें लाभ हो। दूध में खालिस नमक बहुत होता है। कच्चे दूध में खारेपन का स्वाद आता है।

तुम्हारे भेजे हुए भजन महादेव को मिल गए, वे उन पर श्रम करेंगे। तुम देखती हो कि मेरी लेखनी की स्याही खतम हो गई है। यह महादेव की है। और अब सोने के समय यानी सवा नौ से ज़्यादा वक्त हो गया है। लेकिन अपने ख़याल से मैंने कोई बात उत्तर दिए बिना नही छोड़ी है।

हम सबकी तरफ़ से प्यार।

यरवदा मंदिर, 8-4-1932

बापू

चि. मीरा

श्री रामपुर,
जिला नोआखाली
4 दिसंबर, 1946

तुम्हारा 18 नवंबर का पत्र मेरे पास कल ही पहुँचा। तुम जानती हो कि मैं तुमसे भी अधिक दुर्गम स्थान पर हूँ। दूरी इतनी अधिक नहीं है, परंतु गाड़ियों का रास्ता भी यहाँ नहीं है। जब बरसाती नहरों का पानी लगभग दस दिन में सूख जाएगा, तब इधर-उधर जाने के लिए पैदल चलने के सिवा और कोई उपाय नहीं रहेगा। डाक हरकारे ले जाते हैं, जैसा कुछ ही वर्ष पहले काठियावाड़ में होता था और कहीं-कहीं अब भी होता है।

मेरी चिंता न करना। ईश्वर पर श्रद्धा और विश्वास रखना। मैं उसके हाथों में सुरक्षित हूँ। वही मुझे बनाएगा या बिगाड़ेगा। उसके लिए सब बनाना ही है, बिगाड़ना कभी है ही नहीं।

यहाँ अखबार नियमपूर्वक नहीं आते। जब आते हैं तो पुराने हो जाते हैं। और वे भी स्थानीय अखबार ही होते हैं। इसलिए यहाँ मालूम नहीं पड़ता कि अखबारों में क्या निकलता है। मेरा नुस्खा यह है कि 'जो अखबारों में छपता है, उस पर भरोसा न करो।' याद रखो कि खबर न मिलना खुशखबरी है। तुम्हें मालूम है कि ए.जी. बेलफोर जब प्रधानमंत्री थे, तो शेखी मारा करते थे कि उन्होंने कभी अखबार नहीं पढ़े और उससे कुछ नहीं खोया।

तो मेरे खयाल से तुम्हें मालूम है कि मेरे सब साथी अलग-अलग गाँवों में बाँट दिए हैं। प्यारेलाल मुझसे अक्सर मिलता रहता है, परंतु मेरे साथ नहीं है। वह एक गाँव में अकेला है और उसका मददगार एक बंगाली दुभाषिया है। मेरे साथ परशुराम है और इसलिए मैं उससे लिखवा सकता हूँ। मूल कल्पना यह थी कि मुझे एक बंगाली दुभाषिए के सिवा किसी की सहायता लेनी नहीं चाहिए। परशुराम सदा प्यारेलाल को मदद देता था, मगर यहाँ उसे अकेला किसी गाँव में नहीं रखा जा सकता था। उसकी बड़ी इच्छा थी कि वह सीधा मेरे साथ रहे, परंतु जब मुझे और सब सहायता मिल रही थी और मैं दूसरे प्रकार का काम कर रहा था, तब वह मेरे साथ नहीं रह सकता था। अब चूँकि वह यहाँ है इसलिए मेरी निजी देखभाल रखने के अलावा वह मेरा शीघ्र लिपि का काम भी कर देता है। इससे मैं वह काम भी कर लेता हूँ जिसकी मैंने आशा नहीं रखी थी या जिसके लिए मैं तैयार नहीं था। और बंगाली सहायक एक प्रोफ़ेसर हैं, जिन्होंने वर्षों तक मेरी रचनाओं का गहरा अध्ययन किया है। इसलिए बहुत ही अच्छी सहायता मिल रही है। परंतु ये लोग अखबारों का काम नहीं कर सकते। इसलिए मेरा बाहर का काम बहुत ही कम हो गया है।

यहाँ का काम नया, बहुत सुखद और उतना ही सख़्त है। मेरी अहिंसा की परीक्षा हो रही है। इसके बारे में फिर कभी

लिखूँगा। यह तो मेरी तरफ़ की सारी चिंता से तुम्हें मुक्त करने के लिए है। अब मैं सदा की भाँति खुराक ले रहा हूँ या लेने की कोशिश कर रहा हूँ। परंतु 21 दिन के त्याग के बाद इसकी आदत होने में कुछ समय लग सकता है। यथासंभव शीघ्र गति से मैं साधारण शक्ति प्राप्त कर रहा हूँ। जल्दी करने का साहस नहीं होता।

अब मैं देखता हूँ कि तुमने काम 18 नवंबर को जहाँ छोड़ दिया था, वहाँ से 22 तारीख को फिर शुरू कर दिया है। तुम्हारी समस्याएँ असाधारण हैं। परंतु वे सब तुम्हारी अपनी ही पैदा की हुई हैं। इसलिए तुम्हीं उन्हें इतनी कम कर सकती हो कि तुम्हारे बस की हो जाएँ। यह तुम्हारा कर्त्तव्य है। तुम्हें आदमी ढूँढ़ने से नहीं मिलेगा या नहीं मिलेंगे। जिस ढंग के काम के लिए तुम्हें आदमी चाहिए, वह ईश्वर तुमसे कराना चाहता होगा, तो आदमी तुम्हारे पास आ जाएगा या आ जाएँगे। इसलिए मैं तुमसे कहूँगा कि उसकी प्रार्थना करो और जो कुछ कर सकती हो आत्मा को सताए बिना करो।

आश्रम की कल्पना बिलकुल तुम्हारी ही मौलिक कल्पना है। अगर वर्तमान स्थान तुम्हारे लिए अनुकूल नहीं है, तो तुम्हें उसका जो उपयोग हो सकता है, कर लेना चाहिए। मैं खुद तो यह कहूँगा कि अपने सिवा दूसरों के लिए तुम आश्रम-जीवन का विचार छोड़ दो। फिर तुम्हें संकोच नहीं होगा और तुम विश्व के समान ऊँची और विशाल बन सकती हो। तुम्हें मालूम है कि मैंने साबरमती में आश्रम तोड़ दिया और वह एक हरिजन-संस्था बन गया। मूल तो सत्याग्रह आश्रम था। वह सदा के लिए मिट गया। इसलिए अपनी कल्पना का आश्रम और किसी को सौंप देने का विचार कभी न करो। वर्तमान स्थान में विवाहितों या कुँवारों को, या जो भी तुम्हारे शुरू किए हुए कामों को अच्छी तरह करें उन्हीं

को रख लो। अन्यथा, तुम्हें मौसम कितना ही आदर्श मिल जाए, तो भी तुम्हारी तंदुरुस्ती चूर-चूर हो जाएगी। याद रखो कि मैंने अब तक जो कुछ लिखा है, उस सबमें तुम्हारी आश्रम की कल्पना की पूरी गुंजाइश रखी है। और चूँकि मैंने ऐसा किया है, इसलिए मैंने तुम्हें सलाह दी है कि आश्रम का आदर्श तो अपने तक ही सीमित रखो और जितने भी योग्य आदमी मिल सकें, उन्हें उस वक्त तक साथी बना लो, जब तक उनकी उपस्थिति या आचरण तुम्हें खटके नहीं या उनसे तुम्हारे अपने विकास में बाधा न पड़े।

आशा है, मैंने तुम्हें अपना सारा मतलब समझा दिया है। ऐसी बात हो तो मेरा काम पूरा हुआ।

यह मैंने सैर को निकलने से पहले लिखा है, यानी सुबह के 7.30 बजे के बाद, जितना भी जल्दी हो सकता था उतना जल्दी मैं स्टैंडर्ड टाइम के 4 बजे से और लोकल टाइम के 5 बजे से काम कर रहा हूँ। इसमें रोज़ की प्रार्थना का समय शामिल है। प्रार्थना परशुराम कराता है।

बापू के आशीर्वाद

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

(1)

1. बापू ने ये पत्र किसे लिखे हैं?
2. बुढ़ापा पके फल-सा सुंदर कैसे हो सकता है?
3. बापू ने चुपके से आते बुढ़ापे का चिह्न किसे माना है?
4. नमक छोड़ने के दुष्परिणाम कैसे दूर किए जा सकते हैं?

(2)

1. किन सुविधाओं के कारण बापू नोआखाली में अपने काम कर पा रहे थे?
2. गांधीजी ने यह क्यों लिखा कि खबर न मिलना ही खुशखबरी है?

लिखित

(1)

1. गांधीजी की रस्किन के लेखन के विषय में क्या राय थी?
2. यरवदा जेल में गांधीजी की क्या दिनचर्या थी?
3. गांधीजी ने यरवदा जेल को 'यरवदा मंदिर' क्यों कहा है? इससे उनकी किस विशेषता का पता चलता है?

(2)

1. समस्याओं से निपटने के लिए गांधीजी ने मीरा बेन को क्या सुझाव दिए हैं?
2. आश्रम के बारे में बापू का क्या सुझाव था?
3. निजी पत्र होते हुए भी आपको इनमें कौन-सी और विशेषताएँ दिखाई देती हैं?

भाषा-अध्ययन

1. **नीचे दिए गए बिंदुओं पर एक-दो वाक्य लिखते हुए अपने मित्र को एक पत्र लिखिए :**
   (क) पिछले दिनों जो नई बात सीखी, उसके बारे में
   (ख) अपनी नई रुचियों के बारे में
   (ग) अपनी खास आदतों के बारे में
   (घ) खान-पान के बारे में
   (ङ) अपने परिवार के बारे में
2. **निम्नलिखित बिंदुओं पर संपादक के नाम एक पत्र लिखिए :**
   (क) अपनी कॉलोनी का नाम (मैं .... में रहता हूँ)
   (ख) सफाई कम है।
   (ग) सड़क पर कूड़ा रहता है।
   (घ) सड़कों में गड्ढे हैं।

(ङ) गड्ढों से गंदा पानी, मच्छर।
(छ) बीमारियों का फैलना।
(ज) सुधार का आग्रह।

3. 'न', 'नहीं', 'मत' का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क) यह ध्यान रखो कि तुम्हारे विकास में बाधा .... पड़े।
(ख) मुझे कोई दुष्परिणाम नजर .... आया।
(ग) तुम दूसरों का समय बर्बाद .... करो।
(घ) हमें गैर-कानूनी काम .... करने चाहिए।
(ङ) ऐसा विचार तुम कभी .... करो।

4. उदाहरण के अनुसार रेखांकित शब्दों के विलोम शब्दों का उपयोग करते हुए वाक्यों को निषेधार्थ में बदलकर लिखिए :

(1)		जल्दी उठना अच्छी आदत है।
	⇒	देर से उठना अच्छी आदत नहीं है।
(2)		जल्दी उठना अच्छी आदत है।
	⇒	देर से उठना ख़राब आदत है।

(1) बच्चों के लिए अच्छी पुस्तकें पढ़ना उचित है।
(2) मोटर साइकिल से बहुत दूर जाना कठिन है।
(3) नियमित रूप से पढ़ना अच्छी आदत है।
(4) बड़ों की बात मानना अच्छा है।
(5) काम समय पर पूरा होने पर अध्यापक संतुष्ट हो गए।

5. दिए गए परसर्गों का उपयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(ने, में, से, को, पर)

(क) मैं दाएँ हाथ .... काफ़ी लिखने लगा था।
(ख) मैंने शरीर .... केवल सेवा के साधन के तौर पर इस्तेमाल करना सीखा है।
(ग) इन चीज़ों .... ध्यान रखकर उचित सावधानी रखना आवश्यक है।

(घ) मैं नैतिक समस्याओं .... कुछ न कुछ भेज देता हूँ।

(ङ) मैं .... कोई बात उत्तर दिए बिना नहीं छोड़ी है।

योग्यता-विस्तार

गांधीजी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' पढ़िए और उनके जीवन-चरित्र पर कक्षा में चर्चा कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

भुगतना – सहना
अटकलबाज़ी – अनुमान, कल्पना
के सिवा – को छोड़कर
कुदरती तौर पर – स्वाभाविक रूप से
धुनाई – धुनकी की सहायता से कपास से बिनौले अलग करना
इजाज़त – अनुमति
दुर्बलता – कमज़ोरी
दुष्परिणाम – बुरा नतीजा
शरीक होना – सम्मिलित होना
खालिस – नमक का स्वाद
दुर्गम – जहाँ जाना कठिन हो
बरसाती नहरें – वे नहरें जिनमें वर्षा ऋतु में ही पानी रहता है
हरकारा – डाकिया
नियमपूर्वक – नियम के साथ
स्थानीय अखबार – उसी स्थान से प्रकाशित होने वाले समाचार-पत्र
नुस्खा – उपाय, चिकित्सा के लिए निर्धारित उपाय
खुशखबरी – अच्छा समाचार
शेखी मारना – डींगे हाँकना, बढ़-चढ़कर बातें करना
मददगार – सहायक
दुभाषिया – एक भाषा की बात तत्काल दूसरी भाषा में बदल सकने वाला

शीघ्र लिपि	–	आशुलिपि (शॉर्टहैंड)
सुखद	–	सुख देने वाला
खुराक	–	भोजन, दवा की मात्रा
उपवास	–	भोजन न लेना
मौलिक	–	मूल (अपनी)
अनुकूल	–	सहायक
तंदुरुस्ती	–	स्वास्थ्य
गुंजाइश	–	संभावना
खटकना	–	चुभना, अच्छा न लगना
सलाह	–	परामर्श

काव्य खंड

कविता का पठन-पाठन

कविता क्यों और कैसे पढ़े? यह जटिल किंतु प्रासंगिक प्रश्न है। यांत्रिक युग में कविता का अस्तित्व खतरे में पड़ गया-सा दीखता है किंतु आज भी मनुष्य की भावाभिव्यक्ति के सबसे सुंदर प्रयास के रूप में कविता हमारे आसपास है। मानव-सभ्यता के विकास तथा लेखन की परंपरा से बहुत पहले ही मौखिक परंपरा के रूप में कविता का जन्म हो गया था इसलिए कविता को उचित ही मानवता की मातृभाषा कहा गया है।

कविता साहित्य की सबसे पुरानी ऐसी विधा है, जो समय (भूत, वर्तमान और भविष्य) और समाज को समझने की अंतर्दृष्टि देती है। आज के यांत्रिक तथा वैश्वीकरण के युग में भी कविता मानव मन को पुनर्संस्कारित कर सकती है। इसलिए केवल आनंदानुभूति के लिए नहीं बल्कि मनुष्य की ऊर्जा को रचनात्मक बनाने के लिए कविता पढ़ी जानी चाहिए।

माध्यमिक स्तर पर द्वितीय भाषा के रूप में कविता को पढ़ने-पढ़ाने का उद्देश्य भाषा ज्ञान, सूचना संग्रह या उपदेश न होकर सौंदर्य की अनुभूति के द्वारा भावात्मक विकास करना है एवं युवा होते छात्र को लयात्मक उतार-चढ़ाव के माध्यम से सौंदर्यात्मक और कलात्मक जीवन व्यवस्था की शिक्षा देना है।

कविता को पढ़ना और पढ़ाना दूर से आते अपरिचित संगीत को जानने जैसा होता है। जब तक हम उससे अपरिचित हैं, आकृष्ट तो करती है पर जटिल और अबूझ-सी लगती है लेकिन उसे जानने के बाद यह जटिलता और रहस्यमयता नहीं रहती। उसे बार-बार सुनने के बाद उसकी अनुगूँज हमारे

अंतर्मन को सुंदर बनाकर जीने की कला सिखाती है। उस संगीत की तरह ही कविता भी हमें अपनी संपूर्ण लयात्मकता तथा अर्थसौंदर्य के साथ आमंत्रित करती है और बार-बार पढ़े जाने की माँग करती है।

कविता को पढ़ने-पढ़ाने के लिए उसकी अंतर्निहित लय के साथ पाठक का तादात्म्य आवश्यक है। कविता तुकांत हो या अतुकांत, उसकी एक आंतरिक लय अवश्य होती है। 'लय' नामक यह तत्त्व उन अनेक तत्त्वों में से सर्वप्रमुख तत्त्व है, जो कविता को गद्य से अलग करती है। अतः काव्यपाठ में उसका निर्वाह और पालन पहली शर्त है। कविता में एक सहज प्रवाह होता है, अतः उसे पढ़ते समय विरामादि का उचित पालन न करने पर उसकी अर्थ की अन्विति भी खंडित होती है।

यह ध्यान देने की बात है कि प्रत्येक युग की कविता को पढ़ने की पद्धति भी भिन्न होगी। समकालीन कविता तो अपनी जरूरतों और चुनौतियों से अनिवार्यतः प्रभावित होती ही है, प्राचीन कविता भी समकालीन पाठकों द्वारा नई जरूरतों और चुनौतियों के संदर्भ में नए ढंग से पढ़ी जाएगी। कवि की काव्य संवेदना उसके युग और परिवेश से जुड़ी होती है, उसको जाने बिना कविता को नहीं समझा जा सकता। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसके महत्त्व और प्रासंगिकता को जानने के लिए समय के प्रति जागरूक होना भी आवश्यक है।

प्राचीन कविताओं में लय के आरोह-अवरोह के साथ कहाँ रुकना है अथवा नहीं रुकना है, इसकी पहचान कर ली जाती थी। पर आधुनिक काल में मुद्रण-कला के विकास के साथ-साथ विराम चिह्नों का महत्त्व भी बढ़ गया है और आज का कवि आवश्यकतानुसार उनका प्रयोग भी करता है।

कविता का अर्थ किसी पंक्ति विशेष में नहीं समग्र रूप से ग्रहण किया जाना चाहिए। स्पष्ट और शुद्ध वाचन और बार-बार मौन पठन से उसका अर्थ ग्रहण किया जा सकता है। यह समग्र प्रभाव कहीं केवल एक विचार हो सकता है जैसे – **भगवान के डाकिए** (दिनकर) **बसंत, संभाषण** (नवीन) **जय हो** (सुमन) आदि कविताएँ। तो कहीं भाव के रूप में जैसे – कबीर और मीरा के भक्तिपद, **तब याद तुम्हारी आती है** (राम नरेश त्रिपाठी), **भारतवर्ष** (प्रसाद), **माँ** (सर्वेश्वर) आदि कविताएँ। कुछ कविताएँ ऐसी भी हो सकती हैं, जिनमें भाव अस्पष्ट ही रहता है; जैसे – रहस्यवादी या अनेकार्थी कविताएँ जहाँ अनेक अर्थों की राहें खुली रहती हैं। ऐसी कविताओं में स्वयं पाठक को

कल्पना करने की पूरी छूट होती है। **सूखे पीले पत्तों ने कहा** (सर्वेश्वर), **आज़ादी** (चुलिक्काड़) आदि कविताएँ इसी प्रकार की अनेक अर्थों की संभावना से परिपूर्ण हैं जिन्हें कोशीय अर्थ के द्वारा नहीं पढ़ाया जा सकता। इन्हें पढ़ाने के लिए समय सापेक्ष चेतना का होना आवश्यक है।

प्रस्तुत संकलन की कविताओं को कालक्रम से रखने का प्रयास किया गया है। द्वितीय भाषी विद्यार्थी की कठिनाई को ध्यान में रखकर खड़ी बोली की कविताओं को ही रखने की कोशिश रही है। उस दृष्टि से कबीर और मीरा की कविताएँ अपवाद हैं। वास्तव में लगभग पाँच-छः सौ वर्ष पुरानी ये कविताएँ देश के हर कोने में रहने वाले मन की सहज अभिव्यक्ति है।

सत्रवार पढ़ाने की दृष्टि से कबीर, रामनरेश त्रिपाठी, बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन', रामधारी सिंह 'दिनकर' और सर्वेश्वर की कविताएँ पहले सत्र में, शेष अगले सत्र में पढ़ाई जा सकती है।

10. कबीर दास

(1398–1518)

कबीर का जन्म काशी में हुआ। उनके जन्म के बारे में अनेक किवदंतियाँ प्रचलित हैं किंतु यह मान्य है कि उनका पालन-पोषण नीरू नामक जुलाहे के घर में हुआ। कबीर ने भी जुलाहे का व्यवसाय अपनाया किंतु उनका मन सत्संग और भक्ति में अधिक रमता था। कबीर प्रसिद्ध संत स्वामी रामानंद के शिष्य थे। वे पढ़े-लिखे नहीं थे।

कबीर की रचनाएँ ***कबीर ग्रंथावली*** *में संगृहित हैं। कबीर-पंथियों में कबीर की वाणी* ***बीजक*** *नाम से प्रसिद्ध है। संग्रहकर्ताओं ने कबीर की रचना को तीन शीर्षकों में बाँटा है : साखी, सबद और रमैनी। उनके कुछ पद* ***गुरु ग्रंथ साहब*** *में भी संकलित हैं।*

कबीर स्वभाव से घुमक्कड़ और स्पष्टभाषी थे। उनकी स्पष्टवादिता उनकी रचनाओं में साफ झलकती है। उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त जात-पाँत, अंधविश्वास, बाहरी आडंबर, धार्मिक संकीर्णता आदि पर जमकर प्रहार किया। यही कारण है कि कबीर आज भी प्रासंगिक लगते हैं।

कबीर की भाषा में आज के व्यापक हिंदी क्षेत्र की अनेक बोलियों का मिश्रण मिलता है, जिनमें प्रमुख हैं – भोजपुरी, अवधी, खड़ीबोली, राजस्थानी और पंजाबी। कबीर सीधी, सरल भाषा में अपनी बात को प्रभावशाली ढंग से कहने में सिद्धहस्त थे।

संकलित पदों में कबीर के व्यक्तित्व की स्पष्ट झलक मिलती है। पहले पद में कबीर ने ईश्वर की सर्वव्यापकता का उल्लेख किया है

और कहा है कि ईश्वर किसी धार्मिक क्रियाकलाप, तीर्थाटन या योग-वैराग में नहीं है। उनकी खोज बाहर नहीं, मन के भीतर की जानी चाहिए। दूसरे पद में कबीर ने कोरे पंडितों को लताड़ा है क्योंकि वे 'आँखों देखी' की अपेक्षा शास्त्र वचनों को प्रमाण मानते हैं और बात को उलझा कर रख देते हैं।

कबीर

(1)

मोकौं कहाँ ढूँढ़े रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलास में।
ना तो कौनों-क्रिया-करम में, नाहिं जोग बैराग में।
खोजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भर की तालास में।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सब स्वाँसों की स्वाँस में।

(2)

मेरा तेरा मनुआँ कैसे इक होई रे।
मैं कहता हौं आँखिन देखी, तूँ कागद की लेखी रे।
मैं कहता सुरझावन हारी, तूँ राख्यो अरुझाई रे।।
मैं कहता हौं जागत रहियों, तूँ रहता है सोई रे।
मैं कहता निर्मोही रहियो, तूँ जाता है मोही रे।।
जुगन-जुगन समझावत हारा, कहा न मानत कोई रे।
सतगुरु धारा निरमल बाहे, वा में काया धोई रे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, तबही वैसा होई रे।।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. कवि के अनुसार ईश्वर को मंदिर-मस्जिद में नहीं पाया जा सकता, क्योंकि वह निवास करता है –
   (क) तीर्थों में
   (ख) कर्मकांड में
   (ग) योग वैराग्य में
   (घ) प्रत्येक प्राणी में
2. कवि के अनुसार ईश्वर किसे तुरंत मिल सकता है?
3. 'मेरा तेरा मनुआँ कैसे इक होई रे' कथन में 'मैं' और 'तू' कौन है?
4. 'आँखिन देखी' से कवि का क्या तात्पर्य है?

लिखित

1. मनुष्य ईश्वर को प्रायः कहाँ-कहाँ ढूँढ़ता फिरता है?
2. 'मैं कहता हौं आँखिन देखी, तूँ कागद की लेखी रे'
   उपर्युक्त पंक्ति में कवि क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए।
3. कबीर युगों से लोगों को क्या समझाते चले आ रहे हैं?
4. कबीर के पदों में बोलियों के अनेक शब्द प्रयुक्त हुए हैं, जैसे – कौनौं (किसी) तुरतै (तुरंत ही) मिलिहौं (मिलूँगा) आदि। इसी प्रकार के पाँच शब्द चुनिए और उनके मानक रूप भी लिखिए।
5. जागते रहने और मोह-माया त्याग के लिए कबीर ने क्या उपाय बताया है?
6. कबीर और शास्त्रज्ञ पंडितों की सोच में क्या अंतर है?

योग्यता-विस्तार

1. विभिन्न मतों के बाहरी आडंबरों पर कबीर की पाँच साखियाँ ढूँढ़कर लिखिए।

2. 'मोकौं कहाँ ढूँढ़े रे बंदे............पद के भावों की तुलना निम्नलिखित पंक्तियों से कीजिए :

मैं ढूँढ़ता तुझे था जब कुंज और वन में,
तू खोजता मुझे था तब दीन के वतन में,
तू आह बन किसी की मुझको पुकारता था,
मैं था तुझे बुलाता संगीत में भजन में,
मेरे लिए खड़ा था दुखियों के द्वार पर तू
मैं बाट जोहता था तेरी किसी चमन में।
बेबस गिरे हुओं के तू बीच में खड़ा था
मैं स्वर्ग देखता था, झुकता कहाँ चरण में।

शब्दार्थ और टिप्पणी

पद—1

मोकौं	–	मुझे
ढूँढ़े	–	खोजता है
बंदे	–	हे मुनष्य, सेवक
देवल	–	मंदिर, देवालय
मसजिद	–	मुसलमानों का सामूहिक रूप से नमाज पढ़ने का धर्म स्थल
काबा	–	मुसलमानों का एक तीर्थस्थान (अरब में)
कैलास	–	हिमालय की एक चोटी जिस पर शिव का निवास माना जाता है।
कौनों	–	किसी भी
क्रिया-करम	–	कर्मकांड, स्नान, तीर्थाटन, माला जाप, पूजन आदि
जोग	–	योग, चित्त को एकाग्र करने का उपाय
बैराग	–	वैराग्य, सांसारिक सुखों से विरक्ति
खोजी	–	ढूँढ़ने वाला, खोजने वाला
तुरतै	–	तुरंत ही, जल्दी से

मिलिहौं	–	मिलूँगा
तालास	–	तलाश, खोज
साधो	–	हे साधु, हे संतो
स्वासों की स्वाँस में	–	प्रत्येक जीवधारी में

पद–2

मैं (मेरा)	–	कवि
तू (तेरा)	–	शास्त्रज्ञ पंडित
मनुआँ	–	मन
इक	–	एक
होइ	–	होगा
हौं	–	हूँ, मैं
आँखिन की देखी	–	आँखों देखी बात, अनुभव की बात
कागद की लेखी	–	कागज का लेख, शास्त्रों में लिखा हुआ
सुरझावनहारी	–	समस्या सुलझने वाली बात
राख्यो	–	रख दिया
अरुझाई	–	उलझाकर
जागत रहियो	–	जागते रहें, सचेत रहें
निर्मोही	–	जिसे मोह या ममता न हो
मोही	–	मोह ग्रस्त
जुगन	–	युग-युग से, लंबे समय से
सतगुरुधारा	–	सच्चे गुरु के विचारों का प्रवाह
निरमल	–	स्वच्छ, निर्मल
बाहे	–	बह रही है
वा में	–	उसमें, सद्‌गुरु के विचारों में
काया धोई	–	शरीर धो लिया है।
वैसा होई रे	–	मन का एक हो जाना।

11. मीराबाई

(1498–1546)

मीराबाई का जन्म राजस्थान में मेड़ता के निकट कुड़की गाँव में हुआ। वे मेड़तिया राठौड़ राव दूदा की पौत्री और रतनसिंह की पुत्री थीं। मीरा का विवाह मेवाड़ के महाराणा साँगा के बड़े पुत्र कुँवर भोजराज के साथ हुआ। विवाह के कुछ वर्ष बाद ही उनके पति का निधन हो गया।

मीरा बाल्यकाल से ही कृष्णभक्ति में लीन रहती थीं, पर पति की मृत्यु के बाद उन्होंने अपना सारा जीवन कृष्णभक्ति में ही लगा दिया। वे साधु-संतों के सत्संग में रहने लगीं। शीघ्र ही उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गई। राजघराने की एक रानी का साधु-संतों से मिलना-जुलना और कीर्तन करना उनके परिवार वालों को अच्छा नहीं लगा। उन्हें तरह-तरह की यातनाएँ दी गईं। अंत में तंग आकर मीरा ने मेवाड़ छोड़ दिया और मथुरा वृंदावन में कुछ दिन रहकर द्वारिका पहुँची। वहाँ वे भगवान रणछोड़ की आराधना में लीन हो गईं।

मीरा ने मुख्यतः स्फुट पदों की रचना की है। ये पद ***मीराबाई की पदावली*** *के नाम से प्रकाशित हो चुके हैं। उनके पदों में कृष्ण से मिलने की व्याकुलता दिखाई देती है। उन्होंने ज्ञान और वैराग्य के पद भी लिखे हैं।*

मीरा के पदों में भावों की सरसता है। उनकी भाषा सरल है। उसमें राजस्थानी-मिश्रित ब्रजभाषा का प्रयोग मिलता है। कहीं-कहीं गुजराती के शब्द भी मिलते हैं।

यहाँ मीरा के दो पद संकलित हैं। पहले पद में मीरा राम के नाम का जाप करने और पूरी तरह उन्हीं में रम जाने का आग्रह करती हैं।

दूसरे पद में वे कृष्ण के प्रति पूर्णतः समर्पित होने की अपनी मनःस्थिति का चित्रण करती हैं और बताती हैं कि कृष्ण के आने की प्रतीक्षा करते रहना उनके नेत्रों की आदत हो गई है।

मीरा के पद

(1)

राम-नाम रस पीजै,
मनवा राम-नाम रस पीजै।
तजि कुसंग सतसंग बैठि नित, हरि-चरचा सुणि लीजै।
काम क्रोध मद मोह लोभ कूं, चित से बहाय दीजै।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, ताके रंग में भीजै।।

(2)

आली री मेरे नैनन बान पड़ी।
चित्त चढ़ी मेरे माधुरि मूरति, उरबिच आन अड़ी।
कब की ठाड़ी पंथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी।
कैसे प्रान कान विन राखूं, जीवन-मूरि जड़ी।
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोक कहै बिगड़ी।।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. राम-नाम जपने में आनंद लेने का आग्रह मीरा किससे कर रही हैं?
2. हरि-चर्चा के लिए कवयित्री ने किस प्रकार के आचरण को उपयुक्त माना है?

3. मीरा अपने नेत्रों की किस आदत का बखान कर रही हैं?
4. किन पंक्तियों में कृष्ण-वियोग का चित्रण हुआ है?
5. लोग मीरा के आचरण की निंदा किस कारण करते हैं?

लिखित

1. राम-नाम रस पीने से कवयित्री का क्या अभिप्राय है?
2. राम-नाम के जप में आनंद लेने के लिए कवयित्री ने क्या उपाय सुझाए हैं?
3. निम्नलिखित अंशों का आशय स्पष्ट कीजिए :
   (i) ताके रंग में भीजै
   (ii) उर बिच आन अड़ी
   (iii) जीवन मूरि जड़ी
4. दूसरे पद के आधार पर मीरा की वियोग-व्यथा का वर्णन कीजिए।
5. इन पदों में मीरा की भक्ति की किन विशेषताओं की ओर संकेत हुआ है?
6. पदों के अंत में तुकांत शब्दों के प्रयोग से उनमें नाद सौंदर्य आ जाता है। जैसे – पीजै, लीजै आदि। मीरा के पदों से तुकांत शब्द छाँटकर लिखिए।

योग्यता-विस्तार

तुलसीदास ने 'रामचरित मानस' में राम के नाम को राम से भी बड़ा बताया है। 'मानस' के बालकांड से उन पंक्तियों को खोजकर पढ़िए और नाम-महिमा पर चार छः पंक्तियाँ लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

रस पीना – आनंद लेना
मनवा – हे मन
कुसंग – बुरे लोगों का साथ

हरि-चर्चा	–	ईश्वर का गुणगान
बहाय दीजै	–	निकाल दीजिए
गिरधर नागर	–	चतुर कृष्ण, पौराणिक कथा के अनुसार ब्रज मंडल को वर्षा के प्रकोप से बचाने के लिए श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को उठाकर उसका छाता-सा बना लिया था। इसलिए उन्हें 'गिरधर' कहा जाता है।
ताके रंग में भीजै	–	कृष्ण के प्रेम में रम जाइए
आली री	–	हे सखी
बान	–	आदत
माधुरि मुरति	–	सुंदर मूर्ति
उर बिच आन अड़ी	–	हृदय में फँस गई है
ठाड़ी	–	खड़ी हुई
पंथ निहारूँ	–	रास्ता देख रही हूँ
कान	–	कान्हा (कृष्ण)
मूरि जड़ी	–	जड़ी बूटी, औषध, दवा
गिरधर हाथ बिकानी	–	पूरी तरह कृष्ण को समर्पित हो गई
बिगड़ी	–	आचरण से गिर गई

12. रामनरेश त्रिपाठी

(1881–1962)

हिंदी काव्य की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक धारा के समर्थ कवियों में रामनरेश त्रिपाठी का स्थान उल्लेखनीय है। उनका जन्म उत्तरप्रदेश के जौनपुर जनपद के कोइरीपुर ग्राम में हुआ था। त्रिपाठी जी को विधिवत स्कूली शिक्षा नहीं मिल सकी। अपने अध्यवसाय से उन्होंने हिंदी, बँगला तथा अंग्रेज़ी का सामान्य ज्ञान प्राप्त किया और राष्ट्रीय तथा सामाजिक कार्यों में लग गए। उन्हें भ्रमण करना अत्यंत प्रिय था। लगभग 20 हज़ार किलोमीटर पैदल यात्रा कर उन्होंने हज़ारों ग्राम गीतों का संकलन किया और उनका भाष्य भी लिखा।

उनकी चार काव्य कृतियाँ उल्लेखनीय हैं – ***मिलन, पथिक, मानसी*** *और* ***स्वप्न****। इनमें* ***मानसी*** *फुटकर कविताओं का संग्रह है। शेष तीनों कृतियाँ खंड काव्य हैं जिनका विषय प्रेम कहानियाँ हैं।*

साहित्य के क्षेत्र में उन्होंने विविध रूपों में महत्त्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने हिंदी, उर्दू, संस्कृत और बँगला के प्रतिनिधि काव्य-संकलनों का संपादन किया। बालकथा कहानी के नाम से उन्होंने रोचक और शिक्षाप्रद कहानियों के कई संग्रह बच्चों के लिए तैयार किए। उन्हें हिंदी बाल-साहित्य का जनक कहना गलत न होगा।

रामनरेश त्रिपाठी प्रकृति के चितेरे हैं। वे अपनी रचनाओं में देशभक्ति की भावनाओं का समावेश बड़ी कुशलता से करते हैं। उनकी भाषा सहज-सरल खड़ीबोली है, पर वे शुद्ध संस्कृत शब्दों के प्रति आग्रही नहीं हैं। उर्दू शैली के प्रचलित शब्दों का भी उन्होंने खुलकर प्रयोग किया है।

*संकलित कविता **'तब याद तुम्हारी आती है'** में कवि प्रकृति के विभिन्न दृश्यों और लीलाओं पर मुग्ध है। जब वह प्रातःकाल में चिड़ियों का चहचहाना, कलियों का खिलना, वर्षा में छम-छम बूँदों का गिरना, चाँदनी रात में ओस का गिरना, झरने और नदियों का मस्ती से बहना आदि को देखता है तो उसे इसके रचने वाले विधाता की याद आ जाती है।*

तब याद तुम्हारी आती है

जब बहुत सुबह चिड़ियाँ उठकर,
कुछ गीत खुशी के गाती हैं।
कलियाँ दरवाज़े खोल-खोल,
जब झुरमुट से मुसकाती हैं।
खुशबू की लहरें जब घर से,
बाहर आ दौड़ लगाती हैं।
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है!!

जब छम-छम बूँदें गिरती हैं,
बिजली चम-चम कर जाती है।
मैदानों में, वन-बागों में,
जब हरियाली लहराती है।
जब ठंडी-ठंडी हवा कहीं से,
मस्ती ढोकर लाती है।
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है!!

चुपचाप चमकते तारों की,
महफ़िल जब रात सजाती है।
जब चाँद शान से उगता है,
औ' दिशा-दिशा धुल जाती है।
जब ओस-रूप में हरी घास,
चमकीले मोती पाती है।
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है!!

झरने जब झर-झर झरते हैं,
नदियाँ मस्ती में बहती हैं।
जब देश-देश की बातें वे,
सागर से जाकर कहती हैं।
जब उतर चाँदनी ऊपर से,
सागर में ज्वार उठाती है।
हे जग के सिरजनहार प्रभो!
तब याद तुम्हारी आती है!!

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. प्रातःकाल के किस दृश्य की सुंदरता पर कवि मुग्ध है?
2. किन पंक्तियों में कवि ने वर्षा के सौंदर्य का चित्रण किया है?
3. चाँद और तारे रात को किस प्रकार सुंदर बनाते हैं?
4. प्रकृति के विभिन्न दृश्यों के सौंदर्य से मुग्ध होकर कवि को ईश्वर की ही याद क्यों आती है?

लिखित

1. किन-किन प्राकृतिक दृश्यों पर मुग्ध होकर कवि को ईश्वर की याद आ जाती है?
2. शीतल चाँदनी में हरी घास पर झूमते ओस कणों को मोती क्यों कहा गया है?
3. निम्नलिखित पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और बताइए कि रेखांकित शब्दों की आवृत्ति से कविता में क्या सुंदरता आ गई है।

   जब छम-छम बूँदें गिरती हैं,
   बिजली चम-चम कर जाती है।
   जब ठंडी-ठंडी हवा कहीं से,
   मस्ती ढोकर लाती है।
   जब चाँद शान से उगता है,
   औ' दिशा-दिशा धुल जाती है।
   झरने जब झर-झर झरते हैं,
   नदियाँ मस्ती में बहती हैं।

4. निम्नलिखित पंक्तियों का आशय स्पष्ट कीजिए :
   (1) खुशबू की लहरें जब घर से,
   बाहर आ दौड़ लगाती हैं।
   (2) जब देश-देश की बातें वे,
   सागर से जाकर कहती हैं।
5. 'तब याद तुम्हारी आती है' कविता का प्रतिपादय लगभग 60 शब्दों में लिखिए।
6. कवि कभी-कभी प्रकृति के उपादानों को मनुष्य के समान व्यवहार करते दिखाता है, इसे 'मानवीकरण' कहा जाता है; जैसे – कलियाँ दरवाजे खोल-खोल..........मुसकाती हैं। प्रस्तुत कविता से मानवीकरण के दो और उदाहरण छाँटकर लिखिए।

योग्यता-विस्तार

1. प्रातःकाल, चाँदनी-रात, वर्षा, झरना और नदियों की सुंदरता पर अनेक कवियों ने रचनाएँ की हैं। उनमें से कुछ का संकलन कीजिए।
2. इस कविता को कंठस्थ कीजिए और लयपूर्वक पढ़कर कक्षा में सुनाइए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

झुरमुट – पास-पास उगी झाड़ियाँ
मुसकाती – मंद हँसी हँसती हुई
सिरजनहार – निर्माता, सृष्टि करने वाला
मस्ती – आनंद, उल्लास
महफिल – जलसा, सभा, गोष्ठी
शान – ठाट-बाट
ज्वार – समुद्र के जल का ऊपर उठना

13. जयशंकर प्रसाद

(1889–1937)

छायावाद के प्रमुख कवि जयशंकर प्रसाद का जन्म वाराणसी में हुआ था। प्रसाद की प्रारंभिक शिक्षा घर पर हुई। बाद में काशी के क्वींस कॉलेज में पढ़ने गए किंतु परिस्थितिवश आठवीं से आगे न पढ़ सके। तब उन्होंने घर पर ही संस्कृत, हिंदी, फ़ारसी और उर्दू का अध्ययन किया। माता-पिता और बड़े भाई के निधन के कारण किशोरावस्था में ही प्रसाद को अपने परिवार का उत्तरदायित्व संभालना पड़ा।

प्रसाद की प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं – झरना, महाराणा का महत्त्व, लहर, प्रेमपथिक, **करुणालय, आँसू** और **कामायनी**। 'कामायनी' प्रसाद का प्रसिद्ध महाकाव्य है, जिसे आधुनिक हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि माना जाता है।

कविताओं के साथ-साथ प्रसाद ने गद्य में भी रचना की। उनमें **तितली** और **कंकाल** नामक उपन्यास तथा **अजातशत्रु**, **स्कंदगुप्त** और **ध्रुवस्वामिनी** नाटक विशेष प्रसिद्ध हैं। उसकी कहानियों के भी पाँच संग्रह प्रकाशित हुए हैं। **काव्य कला** तथा **अन्य निबंध** उनके निबंधों का संग्रह है।

प्रसाद मूलतः प्रेम और सौंदर्य के कवि हैं। उनकी कविताओं में प्रकृति का सूक्ष्म सौंदर्य मुखरित हो उठा है, जिनमें कहीं-कहीं जीवन-दर्शन की गहराई भी झलकती है। वे तत्सम प्रधान खड़ीबोली के प्रयोग में सिद्धहस्त माने जाते हैं।

*संकलित कविता **भारतवर्ष** में प्रसाद ने भारत के गौरवशाली अतीत का चित्रांकन किया है और कतिपय पौराणिक तथा ऐतिहासिक घटनाओं का उल्लेख कर इसे प्रमाणित किया है। भारतीयों के चरित्र की महानता की याद दिलाते हुए कवि मानता है कि आज भी हम वही **दिव्य आर्य-संतान** हैं।*

भारतवर्ष

हिमालय के आँगन में उसे प्रथम किरणों का दे उपहार,
उषा ने हँस अभिनंदन किया और पहनाया हीरक-हार।
जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक,
व्योम-तम-पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी अशोक।।

सुना है दधीचि का वह त्याग हमारी जातीयता विकास,
पुरंदर ने पवि से है लिखा अस्थि-युग का मेरे इतिहास।
सिंधु-सा विस्तृत और अथाह एक निर्वासित का उत्साह,
दे-रही अभी दिखाई भग्न, मग्न रत्नाकर में वह राह।।

धर्म का ले-लेकर जो नाम हुआ करती बलि, कर दी बंद,
हमीं ने दिया शांति-संदेश सुखी होते देकर आनंद।
विजय केवल लोहे की नहीं, धर्म की रही धरा पर धूम,
भिक्षु होकर रहते सम्राट, दया दिखलाते घर-घर घूम।।

जातियों का उत्थान-पतन, आँधियाँ, झड़ी प्रचंड समीर,
खड़े देखा झेला हँसते, प्रलय में पले हुए हम वीर।
चरित के पूत, भुजा में शक्ति, नम्रता रही सदा संपन्न,
हृदय के गौरव में था गर्व, किसी को देख न सके विपन्न।।

हमारे संचय में था दान, अतिथि थे सदा हमारे देव,
वचन में सत्य, हृदय में तेज, प्रतिज्ञा में रहती थी टेव।
वही है रक्त, वही है देश, वही साहस है, वैसा ज्ञान,
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य-संतान।।

जिएँ तो सदा उसी के लिए-यही अभिमान रहे, यह हर्ष,
निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. उन पंक्तियों को पढ़कर सुनाइए जिनमें निम्नलिखित ऐतिहासिक/पौराणिक घटनाओं का उल्लेख हुआ है।
   (क) इंद्र द्वारा बज्र बनाना
   (ख) राम के द्वारा समुद्र पर पुल बाँधना
   (ग) गौतम बुद्ध का शांति और अहिंसा का संदेश
   (घ) सम्राट अशोक का भिक्षु बनकर धर्म प्रचार करना।
2. 'एक निर्वासित' किसे कहा है? उसके उत्साह का कौन-सा प्रमाण आज भी दिखाई दे रहा है?
3. धर्म के नाम पर होने वाली बलि बंद कराने में किसका योगदान था?

लिखित

1. उषा ने भारत का अभिनंदन किस प्रकार किया?
2. दधीचि का त्याग क्या था? उसे भारत के 'अस्थि युग का इतिहास' क्यों कहा गया?
3. भारतवासियों को 'प्रलय में पले वीर' क्यों कहा गया है?

4. कविता के आधार पर प्राचीन भारत की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
5. भावार्थ स्पष्ट कीजिए :
   (क) जगे हम लगे जगाने विश्व .... हो उठी अशोक।
   (ख) विजय केवल लोहे की नहीं धर्म की रही धरा पर धूम।
   (ग) वही है रक्त .... दिव्य आर्य संतान।
6. *भारतवर्ष* कविता का मूलभाव लगभग दस वाक्यों में लिखिए।
7. कविता से ऐसी चार पंक्तियाँ चुनिए जो आपको सबसे अच्छी लगीं। अच्छा लगने का कारण भी बताइए।

योग्यता-विस्तार

1. प्रसाद की *भारतवर्ष* कविता का पूरा मूल पाठ प्राप्त कर पढ़िए।
2. *भारत की महानता* विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

उषा – सूर्योदय से पूर्व का प्रकाश
अभिनंदन – स्वागत, प्रशंसा, सम्मान, हीरकहार
आलोक – प्रकाश
व्योम – आकाश
तम-पुंज – अंधकार का समूह , गहरा अंधेरा
अखिल – संपूर्ण
संसृति – संसार
अशोक – शोक से रहित
दधीचि – एक ऋषि, जिन्होंने जीवित रहते वृत्रासुर के वध के लिए देवराज इंद्र को अपनी हड्डियों का दान कर दिया। दधीचि की हड्डियों से वज्र नाम का अस्त्र बनाया गया।
पुरंदर – इंद्र
पवि – वज्र

अथाह – बहुत गहरा, जिसकी गहराई की थाह पाना कठिन हो

एक निर्वासित का उत्साह – श्री रामचंद्र ने चौदह वर्ष के निर्वासित जीवन में विस्तृत समुद्र से याचना कर मार्ग बना लिया था। उनके द्वारा निर्मित पुल उनके उत्साह और शौर्य का जीवंत प्रमाण है

उत्साह – उमंग, जोश

भग्न – टूटा हुआ

मग्न – डूबी हुई

विजय केवल लोहे की नहीं – युद्ध केवल शस्त्रों के बल से ही नहीं, अहिंसा और क्षमा के बल पर भी जीते जाते थे। अशोक महान ने शस्त्र से विजय प्राप्त करने के स्थान पर हृदय परिवर्तन के सिद्धांत को महत्त्व दिया

धरा – धरती

धूम – बोलबाला

भिक्षु – बौद्ध संन्यासी, बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार का श्रेय भी भारत देश को ही है

उत्थान – उन्नति

पतन – अवनति

झड़ी – कुछ समय तक लगातार वर्षा

प्रचंड – तेज, भीषण

समीर – हवा, पवन

झेलना – सहना

प्रलय – संसार का प्रकृति में लीन होकर मिटना

चरित – आचरण

पूत – पवित्र

संपन्न – समृद्ध

विपन्न – दुखी

संचय में था दान – हम दान देने के लिए धन संचय करते थे।

तेज – कांति, पराक्रम

टेव – बान, आदत

दिव्य – अलौकिक

निछावर – न्योछावर करना, त्यागना

सर्वस्व – सब कुछ

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

(1898–1960)

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के प्रमुख कवियों में से एक माने जाते हैं। उनका जन्म 8 दिसंबर सन् 1898 में ग्वालियर के भयाना नामक ग्राम में हुआ। उनकी आरंभिक शिक्षा ग्यारह वर्ष की अवस्था में आरंभ हुई। दसवीं कक्षा उत्तीर्ण करने के बाद उन्होंने 1917 ई. में कानपुर के क्राइस्ट चर्च कॉलेज में प्रवेश लिया। कानपुर में भगवतीचरण वर्मा, वृन्दावनलाल वर्मा आदि अनेक प्रसिद्ध साहित्यकारों से उनका परिचय हुआ। 1920 ई. में गांधी जी से प्रभावित होकर उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और देश की सेवा में अपने को पूरी तरह समर्पित कर दिया। कॉलेज में पढ़ते समय वे विद्यार्थी जी के ***प्रताप*** *पत्र में भी काम किया करते थे। पढ़ाई छोड़ देने के पश्चात् वे देश के स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने के साथ ही साथ 'प्रताप' में भी काम करते रहे। 1952 ई. में वे लोकसभा के सदस्य चुने गए और कुछ वर्ष राज्यसभा के सदस्य भी रहे। सन् 1960 में नवीन को पद्मभूषण की उपाधि मिली और उसी वर्ष 29 अप्रैल को उनका स्वर्गवास हो गया।*

नवीन की प्रमुख रचनाएँ हैं – ***कुंकुम, अपलक, क्वासि, रश्मि-रेखा, बिनोबा, स्तवने, उर्मिला, प्राणर्पण*** *तथा* ***हम विषपायी जनम के।***

नवीन की कविताओं में दो प्रकार के भाव मुख्य हैं – एक है प्रणय एवं विरह का भाव और दूसरा है देश-प्रेम एवं स्वाधीनता आंदोलन का भाव। ये दोनों भाव परस्पर इस प्रकार जुड़े हैं कि उन्हें अलग करना

संभव नहीं। एक ही समय में कवि प्रेम की मस्ती के गीत गाता है और देशवासियों को सब कुछ त्याग कर देश-सेवा में समर्पित होने के लिए प्रेरित करता है।

*प्रस्तुत संकलन में संगृहीत दोनों कविताओं में कवि के जेल जीवन की दो अनुभूतियों का चित्रण हुआ है। **'बसंत'** कविता में कवि बंदी-गृह की खिड़की से पीपल को देखता है और पाता है कि दिन में उस पर बसंत का प्रभाव दिखलाई पड़ता है किंतु हरी-भरी पत्तियाँ रात होते ही काली पड़ जाती हैं। अपने जीवन में भी वह सुख-दुख की ऐसी ही क्षणिकता का अनुभव करता है।*

***संभाषण** में जेल की कोठरी में एकांतवास झेल रहा कवि चाँद से बातें करता है। चाँद कवि के बंदी जीवन पर हँसता है और कवि चाँद के निरंतर चक्कर काटते रहने पर। बाल सुलभ कल्पना का चित्रण है।*

बसंत

कविते, सूना है यह जीवन, भारभूत, नैराश्यभरा,
फिर भी कारा में आया है, यह मधुपति कुछ डरा-डरा।

पीपल की डालें दिखती हैं मेरे छोटे जंगले से,
आज सांझ को मैंने देखे उनके रंग-ढंग बदले-से।
थिरक रही थी सांध्य पवन में पीपल की हर-हर डाली,
खेल रही थीं किरणों से पत्तियाँ सुनहली-हरियाली।
डूब गया इतने में सूरज, पड़ीं पत्तियाँ वे काली,
है ऐसा मेरा जीवन छिन उजियाली, फिर अंधियाली।

संभाषण

आज चाँद ने खुश-खुश-झाँका,
काल-कोठरी के जंगले से;
गोया मुझसे पूछा हँसकर
कैसे बैठे हो पगले-से?
कैसे? बैठा हूँ मैं ऐसे –
कि मैं बंद हूँ गगन-विहारी;

पागल-सा हूँ? तो फिर? यह तो
कह हारी दुनिया बेचारी;

मियां चाँद, गर मैं पागल हूँ –
तो तू है पगलों का राजा;
मेरी तेरी खूब छनेगी,
आ जंगले के भीतर आ जा;

लेकिन तू भी यार फँसा है –
इस चक्कर के गन्नाटे में;
इसीलिए तू मारा-मारा –
फिरता है इस सन्नाटे में;

अमाँ, चकरघिन्नी फिरने का –
यह भी है कोई मौजूँ छिन?
गर मंजूर घूमना ही है,
तो तू जरा निकलने दे दिन;

यह सुन वह आदाब बजाता –
खिसक गया डंडे के नीचे;
और कोठरी में 'नवीन' जी
लगे सोचने आँखें मीचे।

प्रश्न-अभ्यास

बसंत

मौखिक

1. किस पंक्ति से ज्ञात होता है कि कवि ने यह कविता जेल में लिखी थी?
2. कवि को अपना जीवन सूना और निराशापूर्ण क्यों लगता है?
3. पीपल की उजली पत्तियाँ काली क्यों पड़ गईं?

लिखित

1. मधुपति किसे कहा गया है और क्यों?
2. पीपल के बदले से रंग ढंग क्या हैं? वे क्या सूचित कर रहे हैं?
3. कवि ने अपने जीवन की तुलना पीपल के पत्तों से क्यों की है?
4. कल्पना कीजिए कि अगले दिन कवि को जेल से छुट्टी मिल गई। तब पीपल के बारे में उसके मन में क्या विचार उठे होंगे?
5. रेखांकित के लिए कविता में प्रयुक्त मुहावरा ढूँढ़कर वाक्य को दुबारा लिखिए
   - चाँद के स्वभाव में परिवर्तन दिखाई पड़ रहा है
   - डाली काँप रही थी।
6. कवि ने अपने जेल-जीवन के लिए किन विशेषणों का प्रयोग किया है? मुक्त जीवन के लिए तीन उपयुक्त विशेषण अपनी ओर से लिखिए।

योग्यता-विस्तार

1. आपकी खिड़की से नीम का पेड़ दिखाई पड़ता है। उसके बारे में चार पंक्तियों की एक कविता लिखिए।
2. पतझड़ वाले पेड़ों में बसंत आने से पूर्व क्या-क्या परिवर्तन होते हैं?

संभाषण

मौखिक

1. कवि किससे वार्तालाप कर रहा है?
2. कवि चाँद को जंगले के भीतर क्यों बुला रहा है?

लिखित

1. चाँद के झाँकने पर कवि को क्या लगा?
2. 'गर मैं पागल हूँ तो तू है पगलों को राजा'
   उपर्युक्त पंक्ति किसके लिए कही गई है? 'पगलों का राजा' कहने का कारण बताइए।
3. दिन निकलने पर घूमने के सुझाव पर चाँद क्यों ओझल हो गया?

योग्यता-विस्तार

अनेक स्वतंत्रता सेनानियों ने जेल में रहकर रचनाएँ की हैं। उनकी जानकारी प्राप्त कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

1. बसंत

भारभूत – बोझ बना हुआ
नैराश्य – निराशा
कारा – बंधन, कैद
मधुपति – बसंत
जंगला – खिड़की या दरवाजा जिसमें लोहे की छड़े लगी हों
सांझ – संध्या
थिरकना – हिलना-डुलना, नृत्य करते समय पैरों की गति
अंधियाली – अंधकार, अँधेरा

2. संभाषण

काल-कोठरी – जेलखाने की छोटी और अंधेरी कोठरी
गोया – मानो, जैसे
गगन-बिहारी – आकाश में घूमने वाला
गर – यदि
गन्नाटे में – उलझन में
चकरघिन्नी – गोलाई में घूमना
मौजूँ – मस्ती भरा
छिन – क्षण
आदाब – प्रणाम, सम्मान व्यक्त करना
मीचे – बंद किए हुए

15. रामधारी सिंह 'दिनकर'

(1908–1974)

रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म गाँव सिमरिया जिला मुंगेर (बिहार) में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा स्थानीय पाठशाला में तथा उच्च शिक्षा पटना में हुई। दिनकर कुछ दिन तक अध्यापक रहे बाद में उन्होंने 1947 से 1950 तक जनसंपर्क विभाग में निदेशक के पद पर कार्य किया। 1952 में वे राज्यसभा के सदस्य मनोनीत किए गए। 1964 में भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति नियुक्त हुए। बाद में उन्होंने सरकार के हिंदी सलाहकार के पद पर काम किया।

'दिनकर' को भारत सरकार ने पद्मभूषण से भी सम्मानित किया। ***संस्कृति के चार अध्याय*** *नामक पुस्तक पर उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला तथा* ***उर्वशी*** *पर ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।*

दिनकर की मुख्य काव्य रचनाएँ हैं– ***हुँकार, कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी, परशुराम की प्रतीक्षा, उर्वशी*** *आदि। 'दिनकर' ने गद्य की अनेक विधाओं में भी लिखा है।* ***रेती के फूल, मिट्टी की ओर, संस्कृति के चार अध्याय*** *आदि उनकी प्रमुख गद्य कृतियाँ हैं।*

'दिनकर' ओज के कवि माने जाते हैं। उनकी कुछ कृतियों में प्रेम और सौंदर्य का चित्रण भी है। 'दिनकर' की कविता में छायावाद और प्रगतिवाद की मिलीजुली प्रवृत्तियाँ मिलती हैं। उनकी भाषा अत्यंत प्रवाहपूर्ण, ओजस्वी और सरल है।

प्रस्तुत संकलन में ***दिनकर*** *की* ***भगवान के डाकिए*** *कविता संग्रहित की गई है। यह कविता विभिन्न देशों में परस्पर प्रेम और सौहार्द की आवश्यकता पर बल देती है और संकेत करती है कि प्रकृति अपना भंडार लुटाने में देश-विदेश में भेद नहीं करती। यही संदेश पक्षी और बादल आज के मानव को दे रहे हैं।*

भगवान के डाकिए

पक्षी और बादल,
ये भगवान के डाकिए हैं,
जो एक महादेश से
दूसरे महादेश को जाते हैं।
हम तो समझ नहीं पाते हैं
मगर उनकी लाई चिट्ठियाँ
पेड़, पौधे, पानी और पहाड़
बाँचते हैं।

हम तो केवल यह आँकते हैं
कि एक देश की धरती
दूसरे देश को सुगंध भेजती है।
और वह सौरभ हवा में तैरते हुए
पक्षियों की पाँखों पर तिरता है।
और एक देश का भाप
दूसरे देश में पानी
बनकर गिरता है।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. कवि ने पक्षी और बादल को भगवान के डाकिए क्यों बताया है?
2. पक्षी और बादल द्वारा लाई गई चिट्ठियों को कौन-कौन पढ़ पाते हैं?
3. किन पंक्तियों का आशय है :
   (क) पक्षी और बादल प्रेम, सद्भाव और एकता का संदेश एक देश से दूसरे देश को भेजते हैं।
   (ख) प्रकृति देश-देश में भेदभाव नहीं करती। एक देश से उठा बादल दूसरे देश में बरस जाता है।

लिखित

1. पक्षी और बादल की चिट्ठियों में पेड़-पौधे, पानी और पहाड़ क्या पढ़ पाते हैं?
2. एक देश की धरती दूसरे देश को सुंगध भेजती है कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. पक्षी और बादल की चिट्ठियों के आदान-प्रदान को मनुष्य किस दृष्टि से देखते हैं?

योग्यता-विस्तार

1. हमारे जीवन में डाकिए की भूमिका पर दस वाक्य लिखिए।
2. दिनकर की कुछ अन्य ओजपूर्ण कविताओं का संकलन कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

महादेश – महाद्वीप, विशाल देश
बाँचते हैं – पढ़ते हैं
आँकते हैं – अनुमान करते हैं
सौरभ – खुशबू, सुगंध

पाँख	–	पंख
दूसरे देश को सुगंध भेजती हैं	–	प्रेम प्यार का संदेश भेजती हैं
एक देश का... गिरता है	–	एक देश से उठा बादल दूसरे देश में वर्षा करता है।

16. शिवमंगल सिंह 'सुमन'

(1916–2002)

शिव मंगल सिंह 'सुमन' का जन्म उत्तर प्रदेश के उन्नाव ज़िले में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा वहीं हुई। ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज से बी.ए. और काशी हिंदू विश्वविद्यालय से एम.ए., डी.लिट् की उपाधियाँ प्राप्त कर ग्वालियर, इंदौर और उज्जैन में उन्होंने अध्यापन कार्य किया। वे विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के कुलपति भी रहे।

छात्र जीवन से ही 'सुमन' ने काव्य रचना प्रारंभ कर दी थी और वे लोकप्रिय हो चले थे। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं – ***हिल्लोल, जीवन गान, प्रलय-सृजन, विश्वास बढ़ता ही गया, पर आँखे नहीं भरीं, विंध्य हिमाचल, मिट्टी की बारात*** *आदि।*

'सुमन' प्रगतिशील कवि हैं। उन पर साम्यवाद का प्रभाव है, इसलिए वे वर्गहीन समाज की कामना करते हैं। पूँजीवादी शोषण के प्रति उनके मन में तीव्र आक्रोश है। उनमें राष्ट्रीय और देशप्रेम का स्वर भी मिलता है। 'सुमन' की भाषा प्रवाहमय और ओज से भरी है, जिसकी सरलता पाठक को मोहती है और जिससे कवि की अनुभूति के साथ पाठक का सहजता से परिचय हो जाता है। मुख्य रूप से कवि ने गीत लिखे हैं किंतु कुछ छंद मुक्त रचनाएँ भी लिखी हैं।

प्रस्तुत कविता 'जय हो' में कवि का मानना है कि जीवन मार्ग में अनेक तरह की बाधाएँ, विपत्तियाँ आती हैं। उनसे जूझना बुरा लगता है। वे कष्टकर होती हैं, किंतु वे कुछ-न-कुछ सिखा जाती हैं। कवि ने जीवन में मिलने वाली सुविधाओं की अपेक्षा बाधाओं को अधिक श्रेयस्कर माना है क्योंकि उन्हीं से हमें संघर्ष करने और आगे बढ़ने का बल मिलता है।

जय हो

जय हो उसकी
जिसने मुझको दो पैर दिए।
अपनों से बढ़कर
जिसने मुझको गैर दिए,
मैं आज घूमता घाटी में
कितने उतार, कितने चढ़ाव,
हर मंजिल के अपने पड़ाव
हर कदम
नए नज्जारों से परिचय करता,
हर ठोकर में
भीतर कुछ छलक-छलक पड़ता।
अटकी आशा, भटकी उसास
उस क्षण तो लगती बुरी
बाद में लगता है
समतल राहों में चलने से
क्या पाऊँगा?
जो कुछ पाया है
इन्हीं ठोकरों के बूते
जो कुछ सीखा है

फटी बिवाई का बल है
जो पीर पराई की
गर्मी से स्नेहिल है,
क्या बतलाऊँ मेरे साथी,
जंगली पेड़ फल-फूलों की
मुस्कान मुझे क्या दे जाती?
टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी
मेरे नंगे पैरों का धन है
सरिताओं के कल-कल की
मोड़ लचीली है,
जिसने शैशव में सहलाया
बाहों उछालकर किलकाया
ये नटखट
चट्टानों की सखी सहेली है
फेनों में फूली हँसी
नहीं रोके रुकती
मैदानों का बहाव तो कुछ-कुछ नकली है,
सीधी सड़कें तो शहरों में ही होती हैं।
यों तो जीवन में
सब कुछ सहना पड़ता है
नदियाँ नहरों में बँधकर
याद सँजोती हैं,
खेतों को शायद
उनकी तड़पन मिल जाए

मासूम धरा की छाती
दरक नहीं पाए
इसलिए बंधनों को
उसने कब दुत्कारा?
पर मुक्त प्रवाहों का सरगम
प्यारा-प्यारा
गाते-गाते
मिटने की साध नहीं जाती।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. कविता में घाटी, ठोकर, बिवाई, टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी आदि जीवन की किन स्थितियों की ओर संकेत करती हैं?
2. 'जीवन में कठिनाइयाँ जब आती हैं तो बुरा लगता है किंतु बाद में लगता है कि वे हमें बहुत कुछ सिखा गई।' कविता की किन पंक्तियों में इस भाव की अभिव्यक्ति हुई है?
3. प्रस्तुत कविता का केंद्रीय भाव क्या है?
   (क) बाधाओं और कठिनाइयों के क्षण हमको अच्छे नहीं लगते।
   (ख) बाधाओं और कठिनाइयों से जूझने वाला ही जीवन में कुछ पाता है।
   (ग) नदी का मैदानी बहाव नकली होता है।
   (घ) जिसने बाधाओं को नहीं झेला, वह दूसरे की पीड़ा नहीं समझ सकता।
4. मिटने की साध कब पूरी होती है?
5. 'नदी के बचपन' से क्या तात्पर्य है?

लिखित

1. कवि अपनों की अपेक्षा परायों का संग पाने के लिए स्वयं को क्यों कृतज्ञ अनुभव करता है?
2. 'हर ठोकर में भीतर कुछ छलक-छलक पड़ता' का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. घाटी के जीवन और शहर के जीवन में क्या अंतर है?
4. नदी का बचपन उल्लास और किलक भरा क्यों होता है?
5. कवि ने नदी के मैदानी बहाव को कुछ-कुछ नकली क्यों बताया है?
6. नदियाँ बाँधों को क्यों स्वीकार करती हैं?
7. प्रस्तुत कविता बँधे-बँधाए छंद में नहीं है और तुकांत भी नहीं है, फिर भी इसमें लय और प्रवाह है। कविता का लयपूर्वक वाचन कीजिए।

योग्यता-विस्तार

1. प्रस्तुत कविता के केंद्रीय भाव की तुलना निम्नलिखित पंक्तियों से कीजिए –

   जितने कष्ट कंटकों में है जिसका जीवन-सुमन खिला।
   गौरव गंध उन्हें उतना ही, यत्र-तत्र-सर्वत्र मिला।

शब्दार्थ और टिप्पणी

गैर – पराया, दूसरा
घाटी – दो पहाड़ों के बीच का गहरा भू-भाग
मंजिल – लक्ष्य
पड़ाव – यात्रा के समय कहीं बीच में कुछ समय के लिए ठहरने का स्थान
नज्जारा – दृश्य, नज़ारा
ठोकर – चलने में कंकड़-पत्थर आदि से लगने वाली चोट
अटकी – रुकी हुई
भटकना – रास्ता भूल जाना
उसाँस – लंबी साँस

बूते – बल पर
बिवाई – पैरों की एड़ी या उँगलियाँ फटने का रोग। पूरी कहावत इस प्रकार है – जाके पैर न फटी बिवाई सो का जाने पीर पराई।
पीर – पीड़ा, दर्द
स्नेहिल – स्नेह से भरा
लचीली – लचकदार, झुकने-दबने वाली
शैशव – बाल्यावस्था
फेन – झाग
सँजोना – जमा करना
दरकना – फटना
दुत्कार – उपेक्षा, धिक्कार
सरगम – संगीत के सातों स्वरों का समूह या उनके उतार-चढ़ाव का क्रम, संगीत के सात स्वर – सा रे ग म प ध नि
साध – अभिलाषा, उत्कंठा, इच्छा

17. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

(1927–1987)

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म बस्ती (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। बस्ती से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण कर उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की। कुछ समय तक उन्होंने अध्यापन कार्य किया और आकाशवाणी दिल्ली तथा अन्य केंद्रों पर कार्य किया। उन्होंने साप्ताहिक पत्र 'दिनमान' और बच्चों की प्रसिद्ध पत्रिका 'पराग' का सम्पादन भी किया। ***काठ की घंटियाँ, बाँस का पुल, एक सूनी नाव, गर्म हवाएँ, कुआनो नदी, खूँटियों पर टँगे लोग*** *आदि सर्वेश्वर जी की प्रसिद्ध काव्य-रचनाएँ हैं।*

सर्वेश्वर 'नई कविता' के सशक्त कवि के रूप में हिंदी जगत के सामने आए। हिंदी-कविता को जीवन की मुख्य धारा से जोड़ते हुए उन्होंने उसके विविध पक्षों, स्थितियों और समस्याओं को अपने अनुभव जगत में समेटकर काव्य-रचना की। रचनाधर्मी ईमानदारी, मानवतावादी जीवन-दर्शन और आधुनिक सौंदर्यबोध उनकी अपनी विशेषताएँ हैं। उनमें सर्वत्र जन-जीवन से जुड़ने की गहरी ललक और मानव-भविष्य के प्रति गहरी आस्था दिखाई पड़ती है।

सीधी-सादी भाषा में उच्चकोटि की भाव-व्यंजना सर्वेश्वर जी की भाषा-शैली की विशिष्टता है। 'माँ की याद' एक मर्मस्पर्शी कविता है जिसमें मातृविहीन व्यक्ति की व्यथा का चित्रण है। संध्या के समय जब माँ और संतान के मिलने और प्यार-दुलार के अनेक दृश्य चारों ओर उभर रहे हों, तब कवि को अपनी माँ का अभाव बहुत अखरता है।

'सूखे पीले पत्तों ने कहा' कविता में बताया गया है कि प्रगतिशीलता जीवन में आगे बढ़ने का नाम है और आगे बढ़ने वाला कभी दूसरे का सहारा नहीं लेता।

माँ की याद

चींटियाँ अंडे उठाकर जा रही हैं,
और चिड़ियाँ नीड़ को चारा दबाए,
थान पर बछड़ा रँभाने लग गया है,
टकटकी सूने विजन पथ पर लगाए,

थाम आँचल, थका बालक रो उठा है,
है खड़ी माँ शीश का गट्ठर गिराए,
बाँह दो चुमकारती-सी बढ़ रही है,
साँझ से कह दो बुझे दीपक जलाए।

शोर, डैनों में छिपाने के लिए अब,
शोर, माँ की गोद जाने के लिए अब,
शोर, घर-घर नींद रानी के लिए अब,
शोर, परियों की कहानी के लिए अब।

एक मैं ही हूँ – कि मेरी साँस चुप है,
एक मेरे दीप में ही बल नहीं है,
एक मेरी खाट का विस्तार नभ-सा,
क्योंकि मेरे शीश पर आँचल नहीं है।

सूखे पीले पत्तों ने कहा

तेजी से जाती हुई कार के पीछे
पथ पर गिरे पड़े
निर्जीव सूखे पीले पत्तों ने भी
कुछ दूर दौड़ कर गर्व से कहा –
'हम में भी गति है,
सुनो, हम में भी जीवन है,
रुको-रुको, हम भी
साथ-साथ चलते हैं
हम भी प्रगतिशील हैं।'
लेकिन उनसे कौन कहे –
प्रगति, पिछलग्गूपन नहीं है
और जीवन, आगे बढ़ने के लिए
दूसरों का मुँह नहीं ताकता!

प्रश्न-अभ्यास

माँ की याद

मौखिक

1. बछड़ा वन से आने वाले मार्ग की ओर टकटकी लगाकर क्यों रंभा रहा है?
2. सिर का गट्ठर गिराकर माँ क्यों ठिठक गई है?
3. 'क्योंकि मेरे शीश पर आँचल नहीं है' – कथन में आँचल का क्या आशय है?

लिखित

1. प्रकृति की किन गतिविधियों से कवि को माँ की याद आई है?
2. किस दृश्य को देखने के लिए साँझ के दीपक जलाने को कहा गया है?
3. शोर के अलग-अलग कारणों को स्पष्ट कीजिए।
4. भाव स्पष्ट कीजिए :
   (क) बाँह दो चुमकारती-सी बढ़ रही है
   साँझ से कह दो बुझे दीपक जलाए।
   (ख) एक मैं ही हूँ कि मेरी साँस चुप है,
   एक मेरे दीप में ही बल नहीं है,
   एक मेरी खाट का विस्तार नभ-सा
   एक मेरे शीश पर आँचल नहीं है।
5. कवि कभी-कभी एक ही शब्द का बार-बार प्रयोग कर कविता में सौंदर्य उत्पन्न करता है। प्रस्तुत कविता से ऐसे स्थल छाँटिए और बताइए कि इस पुनरावृत्ति से अर्थ में क्या सौंदर्य आ गया है।

योग्यता-विस्तार

1. 'माँ' पर कुछ कविताओं का संकलन कीजिए।
2. 'मेरी माँ' विषय पर आठ पंक्तियों की एक कविता लिखिए।

सूखे पीले पत्तों ने कहा

मौखिक

1. 'सूखे पीले पत्तों' के द्वारा कविता में किन लोगों की ओर संकेत किया गया है?
2. 'दूसरों का मुँह ताकना' मुहावरे का अर्थ बताइए और उसका अपने वाक्य में प्रयोग कीजिए।

लिखित

1. सूखे पीले पत्तों को पिछलग्गू क्यों कहा गया है?
2. कवि की दृष्टि में वास्तविक प्रगतिशीलता क्या है?
3. सूखे पीले पत्तों ने स्वयं को प्रगतिशील सिद्ध करने के लिए क्या तर्क दिए?
4. इस कविता के केंद्रीय भाव को पाँच-छः पंक्तियों में लिखिए।

योग्यता-विस्तार

'प्रगतिशीलता' विषय पर आठ-दस पंक्तियाँ लिखिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

माँ की याद

नीड़	–	घोंसला
थान	–	गाय, बैल, बछड़े आदि को बाँधने का स्थान
टकटकी लगाना	–	एकटक देखना
विजन	–	निर्जन, सुनसान
चुमकारती-सी	–	चूमती हुई-सी, प्यार करती हुई
डैना	–	पंख
शोर परियों की कहानी के लिए अब	–	शाम होते ही बच्चे माँ से परियों की कहानी सुनने के लिए अब शोर करते हैं।
मेरी साँझ चुप है	–	संध्या समय जब सभी अपनी माँ से स्नेह-दुलार पाने के लिए शोर करते हैं, मातृ-वंचित कवि चुपचाप खाट पर लेटा है।
एक मेरे दीप में ही बल नहीं है	–	कवि कहता है कि अकेला मैं ही माँ के स्नेह से वंचित हूँ, मेरे हृदय में प्रकाश-उल्लास नहीं है।

एक मेरी खाट का विस्तार नभ-सा	–	माँ के बिना मेरी खाट सूनी है।
चींटियाँ अंडे उठाकर जा रही हैं	–	वर्षा आने से पहले चींटियाँ अपने अंडों को उठाकर सुरक्षित जगह पर ले जा रही हैं, इस प्रकार वे भी अंडों के प्रति मातृ-स्नेह व्यक्त कर रही हैं।

सूखे पीले पत्तों ने कहा

निर्जीव	–	जीवन रहित, मृत
गति	–	रफ़्तार, चाल
प्रगतिशील	–	आगे बढ़ने वाला
पिछलग्गूपन	–	पीछे लगने का स्वभाव, नकल करना
मुँह ताकना	–	दूसरे से अपेक्षा रखना

18. बालचंद्रन चुलिक्काड

(जन्म 1957)

युवा कवि चुलिक्काड का जन्म केरल के एक गाँव में हुआ। समसामयिक विषयों पर लिखी उनकी विविध कविताएँ केरल में बहुचर्चित है। उनकी बहुत सी कविताओं का अनुवाद हिंदी में भी हुआ है। इसलिए अब हिंदी क्षेत्र के लिए भी उनकी लोकप्रियता अपरिचित नहीं है।

अब तक कविता और गद्य की पाँच पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

पतिनेट्ड कवित्वकल *(अठारह कविताएँ),* ***अमावसि, गजल, मानसान्तरम्*** *आदि उनकी रचनाएँ हैं। उन्हें* ***संस्कृति सम्मान*** *मिल चुका है। पत्रकारिता से भी जुड़े रहे हैं।*

'आजादी' कविता में भिन्न-भिन्न कवियों और परिस्थितियों के संदर्भ में आज़ादी का वास्तविक अर्थ बताते हुए प्रतिपादित किया गया है कि वस्तुतः आज़ादी कर्मठ व्यक्ति के लिए ही है अकर्मण्य के लिए नहीं। आज़ादी मनमाना व्यवहार नहीं है। आजादी शोषण के विरुद्ध एक रचनात्मक सोच या दृष्टि है और उसका लाभ वही उठा सकता है जो निरंतर कर्मशील रहता है।

आज़ादी

"उस्ताद जी,
आज़ादी क्या होती है?"
– पूछा दर्ज़ी से उसके शागिर्द ने।
"क्या वह चरागाह में उछल-कूद मचाता
नन्हा-सा बछड़ा है?
या सूरज में घोंसला बनाने को
उड़ी जाती चिड़िया?
या उत्तर दिशा में दौड़ती सीटी बजाती रेलगाड़ी?
या अँधेरे में चलता मुसाफ़िर जिसकी कामना करता है
वह लैंपपोस्ट?
निश्चित नींद?
या इस अनंत कपड़े शाश्वत रूप से गतिमान पहिए,
और कभी न रुकने वाली सुई से मेरी मुक्ति?"

दर्ज़ी ने जवाब दिया :
"आज़ादी का मतलब है भूखे को खाना
प्यासे को पानी,
ठंड से ठिठुरते को ऊनी कपड़ा, और
थके-माँदे को बिस्तर।

आज़ादी कवि के लिए शब्द है,
शिकारी के लिए तीर,
तनहाई के मारे के लिए महफ़िल है,
डरे हुए के लिए पनाह,
आज़ादी यानी अज्ञानी को ज्ञान,
ज्ञानी को कर्म,
कर्मठ को बलिदान
और बलिदानी को जीवन।

पर जो कपड़े नहीं सिएगा
सपने भी नहीं देख सकेगा।
सुई की चमकीली नोक पर
टिकी है आज़ादी।
आज़ादी वह फ़सल है जिसे बोने वाला ही काट सकता है,
वह रोटी जिसे मेहनतकश ही खा सकता है,
यह वह कपड़ा है जिसे दर्ज़ी ही पहन सकता है।"
यह कहकर दर्ज़ी पिफर से कपड़े सीने लगा।
शागिर्द की उलझन दूर हुई और
वह सुई में धागा पिरोने लगा।

प्रश्न-अभ्यास

मौखिक

1. शागिर्द उस्ताद से क्या जानना चाहता है?
2. अपने संदर्भ में शागिर्द आज़ादी का क्या अर्थ लगा रहा था?
3. कविता की किन पंक्तियों का आशय है :
   (क) आज़ादी का आशय है जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति।
   (ख) आज़ादी शोषण के विरुद्ध है और उत्पादन पर उत्पादक का ही अधिकार है।
   (ग) आज़ादी श्रम पर निर्भर है।

लिखित

1. बछड़ा, चिड़िया और रेलगाड़ी को शागिर्द आजादी से जोड़कर क्यों देखता है?
2. अँधेरे में चलता मुसाफिर किसकी कामना करता है? क्यों?
3. दर्ज़ी ने आज़ादी का क्या अर्थ बताया है?
4. आशय स्पष्ट कीजिए :
   (क) जो कपड़े नहीं सिएगा
   सपने भी नहीं देख सकेगा,
   सुई की चमकीली नोक पर
   टिकी है आज़ादी।
   (ख) आज़ादी वह फसल है जिसे बोनेवाला ही काट सकता है,
   वह रोटी जिसे मेहनतकश ही खा सकता है,
   यह वह कपड़ा है जिसे दर्ज़ी ही पहन सकता है।
5. कविता के अंत में दर्ज़ी का कपड़े सीने में लग जाना और शागिर्द का सुई में धागा पिरोने लगना क्या संकेत करता है?

योग्यता-विस्तार

दिनकर की 'रोटी और स्वाधीनता' कविता खोजकर पढ़िए और प्रस्तुत कविता से उसकी तुलना कीजिए।

शब्दार्थ और टिप्पणी

उस्ताद	–	गुरु, किसी कला में दक्ष
शागिर्द	–	शिष्य, सीखने वाला
सूरज में घोंसला बनाना	–	असंभव को कर दिखाने का प्रयास
अनंत	–	असीम
शाश्वत रूप से गतिमान	–	हमेशा चलते रहने वाला
तनहाई	–	एकांत, अकेलापन
महफ़िल	–	सभा
पनाह	–	शरण
उलझन	–	शंका

भाग 4क

नागरिकों के मूल कर्त्तव्य

अनुच्छेद 51 क

मूल कर्तव्य – भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह –

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे;

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हों;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं,रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे; और

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊँचाइयों को छू सके।